श्री

राम-वर्षा

भाग

अर्थात्

श्री स्वामी रामतीर्थ

के

सदुपदेश-भाग १

प्रकाशक

श्री रामतीर्थ पब्लिकेशन लीग ।

प्रथम संस्करण } लखनऊ { अगस्त १९२१
२५०० } { श्रावण १९७८

मूल्य डाक व्यय रहित

बिना जिल्द ॥=) } फुटकर { सजिल्द ||।=)

गत वर्ष का सम्पूर्ण सेट

अर्थात

बिना जिल्द ४) } १००० पृष्ठ के आठ भाग { सजिल्द ६)

आर. पी. सिंह द्वारा, फीनिक्स प्रिन्टिङ्ग प्रेस,
१०० नादान महल रोड, लखनऊ, में
मुद्रित।

ग्रन्थावली के स्थायी ग्राहकों के नियम।

(१) इस वर्ष में अर्थात् दीपमालिका सं० १९७८ तदनुसार नवम्बर सन् १९२१ तक स्थायी ग्राहकों को ग्रन्थावली के केवल चार भाग ५०० पृष्ठ के भेजे जायँगे। इन चार भागों के वार्षिक शुल्क के नियम इसी भाग ९ के अन्त में दर्ज हैं।

(२) प्रत्येक भाग प्रायः "२०+३०" (डबल क्राऊन) के १६ पेजी आकार में होगा, जो प्रायः पृथक् २ जिल्द में भेजा जायगा किन्तु आवश्यकता पड़ने पर दो भाग एक जिल्द में इकट्ठे मिलाकर भी भेजे जायेंगे।

(३) स्थायी ग्राहक को अपना वार्षिक शुल्क मनी आर्डर अथवा वी. पी. द्वारा पेशगी भेजना होगा।

(४) दीप मालिका सं० १९७८ तक इस वर्ष का पेशगी शुल्क भेजने वाले को इसी वर्ष के चारों भाग भेजे जायँगे। किसी ग्राहक को थोड़े एक वर्ष के और थोड़े दूसरे वर्ष के खण्ड वार्षिक मूल्य के हिसाब से नहीं दिये जायँगे।

(५) किसी एक खण्ड के खरीदार को उस खण्ड की कीमत स्थायी ग्राहक होते समय उस के वार्षिक मूल्य में मुजरा नहीं की जायगी; अर्थात् वार्षिक मूल्य की पूरी रक्म एक साथ पेशगी मिलने पर ही वह खरीदार स्थायी ग्राहक माना जायगा।

(६) एक खण्ड का फुटकर दाम विना जिल्द ॥=) और सजिल्द ॥|=) होगा जिसमें डाक व्यय इत्यादि ग्राहक को देना होगा।

(७) पत्र व्यवहार में उत्तर के लिये टिकट या कार्ड भेजे विना उत्तर न दिया जायगा। अवश्य उत्तर प्राप्ति के लिये ग्राहक को अपने पत्र में टिकट या कार्ड ज़रूर भेजना चाहिये और साथ इस के अपना ग्राहक नं० तथा पूरा २ पता भी साफ लिखकर भेजना चाहिये। ऐसा न होने पर उत्तर न मिलने से क्षमा करनी होगी।

लीग के सभ्यगण के नियम व अधिकार।

(जो लीग की नियमावली के चौथे नियम के अन्तर्गत हैं)

४ सभ्यगण=श्री स्वामी रामतीर्थ जी के उपदेशों के अनुयायी और उनसे सहानुभूति रखने वाले सज्जन इस लीग के (क) संरक्षक (ख) सभासद और (ग) संसर्गी के रूप से सभ्यगण होंगे।

(क) संरक्षक=(१) १०००) रु० एकवारगी अथवा अधिक से अधिक पाँच किश्तों में दान देने वाले सज्जन पूरी रकम वसूल हो जाने पर लीग के संरक्षक होसकेंगे। (२) श्री स्वामी रामतीर्थ जी के उपदेशों का कोई उत्कट अनुयायी अथवा उन से गाढ़ सहानुभूति रखने वाला सज्जन किसी विशेष कारण से उक्त नियत दान देने के विना भी लीग द्वारा संरक्षक चुना जा सकता है।

(ख) सभासद=(१) २००) रु० एक वारगी अथवा अधिक से अधिक चार किश्तों में दान देने वाले सज्जन पूरी रकम प्राप्त हो जाने पर लीग के सभासद हो सकेंगे।

(२) लीग के कार्य में प्रीति और उत्साह पूर्वक भाग लेने वाला कोई सज्जन उक्त नियत दान देने के विना भी लीग द्वारा सभासद चुना जा सकता है।

(ग) संसर्गी=२५) रु० दान देने वाले सज्जन इस लीग के संसर्गी होसकेंगे।

५ अधिकार=लीग के दान दाता सभ्यों को अपने २ दान की रकम पर वार्षिक ५) रु० सैकड़ा के हिसाब से लीग की प्रकाशित पुस्तकें विना मूल्य पाने का आजीवन अधिकार होगा; अर्थात् संरक्षक को ५०) रु०, सभासद को १०) रु० और संसर्गी को १।) रु० की पुस्तकें विना मूल्य के लीग से वार्षिक पाने का आजीवन अधिकार होगा।

नोटः—विस्तार पूर्वक विवरण पत्र और सम्पूर्ण नियमावली डाक व्यय का आध आना टिकट आने पर भेजे जावेंगे।

ॐ

परमहंस स्वामी रामतीर्थ जी महाराज

के

सदुपदेशों का एक सेट आठ भागों अर्थात् १००० पृष्ठ का जो विना जिल्द ४) और सजिल्द ६) रुपय पर मिलता है उस में जो २ व्याख्यान वा लेख प्रकाशित हुए हैं उन को विषय सूची नीचे दी जाती है।

(अंग्रेज़ी व्याख्यान से जो अनुवाद हुआ है उस का नाम अंग्रेज़ी भाषा में भी यहाँ दे दिया गया है)।

<u>पहिला भाग</u>:—(१) आनन्द (Happiness within). (२) आत्म विकास (Expansion of self). (३) उपासना. (४) वार्तालाप।

<u>दूसरा भाग</u>:—(१) संक्षिप्त जीवन-चरित्र. (२) सान्त में अनन्त (The Infinite in the finite). (३) आत्म सूर्य और माया (The Sun of Life on the wall of mind): (४) ईश्वर भक्ति. (५) व्यावहारिक वेदान्त. (६) पत्र मञ्जूषा. (७) माया (Maya).

<u>तीसरा भाग</u>:—(१) राम परिचय. (२) वास्तविक आत्मा (The Real self). (३) धर्म तत्त्व. (४) ब्रह्मचर्य. (५) अक्बरे-दिली. (६) भारत वर्ष की वर्त्तमान आवश्यकतायें (The present needs of India). (७) हिमालय (Himalaya)

(८) सुमेरु दर्शन. (Summeru scene) (९) भारत वर्ष की स्त्रियाँ. (Indian womanhood). (१०) आर्य माता. (About wife-hood). (११) पत्र मञ्जूषा.

चौथा भाग:—(१) भूमिका (Preface by Mr. Puran in Vol. I) (२). पाप; आत्मा से उस का सम्बन्ध (Sin—Its relation to the Atman or Real Self). (३) पाप के पूर्व लक्षण और निदान. (Prognosis & Diagnosis of Sin). (४) नकद धर्म. (५) विश्वास या ईमान. (६) पत्र मञ्जूषा.

पाँचवाँ भाग:—(१) राम परिचय. (२) अवतरण (A brief of introduction by the late Lala Amir Chand, Published in the fourth volume). (३) सफलता की कुञ्जी. (lecture on Secret of Success delivered in Japan). (४) सफलता का रहस्य (lecture on Secret of Succes, deliverd in America). (५) आत्म कृपा.

छठा भाग:—(१) प्रेरणा का स्वरूप (Nature of Inspiration). (२) सब इच्छाओं की पूर्ति का मार्ग (The way to the fulfilment of all desires). (३) कर्म. (४) पुरुषार्थ और प्रारब्ध. (५) स्वतंत्रता.

सातवाँ और आठवाँ भाग:—राम वर्षा प्रथम भाग (स्वामी राम कृत भजनों के नौ अध्याय) और दूसरा भाग (जिस के केवल तीन अध्याय दर्ज हैं).

ब्रह्मलीन श्री स्वामी रामतीर्थ जी के शिष्य श्रीमान् आर. ऐस. नारायण स्वामी द्वारा व्याख्या की हुई

श्रीमद्भगवद्गीता ।

प्रथम भाग:—अध्याय ६ पृष्ठ संख्या ८३२ ।

मूल्य:—साधारण संस्करण २) विशेष संस्करण ३) ।

डाक व्यय अतिरिक्त

अभ्युदय कहता है:—"हमने गीता की हिन्दी में अनेक व्याख्याएं देखी हैं, परन्तु श्री नारायण स्वामी की व्याख्या के समान सुन्दर, सरल और विद्वत्तापूर्ण दूसरी व्याख्या के पढ़ने का सौभाग्य हमें नहीं प्राप्त हुआ है। स्वामी जी ने गीता की व्याख्या किसी साम्प्रदायिक सिद्धान्त की पुष्टि अथवा अपने मत की विशेषता प्रतिपादित करने की दृष्टि से नहीं की है। आप का एक मात्र उद्देश्य यही रहा है कि गीता में श्रीकृष्ण भगवान् ने जो कुछ उपदेश दिया है उसके उत्कृष्ट भाव को पाठक समझ सकें।"

प्रेक्टिकल मेडिसिन [देहली] का मत है:—"अन्तिम व्याख्या ने जिसको अति विद्वान् श्रीमान् बाल गंगाधर तिलक ने गीता-रहस्य नाम से प्रकाशित किया है, हमारे चित्त में बड़ा प्रभाव डाला था, पर श्रीमान् आर० ऐस० नारायण स्वामी की गीता की व्याख्या ने इस स्थान को छीन लिया है। इस पुस्तक ने हमें और हमारे मित्रों को इतना मोहित कर लिया है कि हमने उसे अपने नित्य प्रातःस्मरण की पाठ पुस्तकों में सम्मिलित कर लिया है।"

चित्र मय जगत पूना का मत है:—"हिन्दी में गीता का संस्करण अपने ढंग का एक ही निकला है......अर्थात् स्वामी जी ने इसे कितनी ही विशेषताओं से संयुक्त किया है। भूमिका, प्रस्तावना, गीतारहस्य, श्लोकानुक्रमणिका, पूर्व वृत्तान्त आदि के बाद

गीता का शब्दार्थ, अन्वयार्थ और व्याख्या तथा टिप्पणी लिखी गई है। अर्थात् इन सब अलंकारों के सिवाय स्वामी जी ने स्थान २ पर विविध महत्वपूर्ण फुटनोट देकर पुस्तक को सर्वांग सम्पन्न बना दिया है। साथ ही जहाँ मूल का विषयान्तर होता दिखाई दिया वहाँ तत्सम्बन्धिनी व्याख्या देकर वर्णन को शृंखला बद्ध कर दिया है। इसी प्रकार प्रत्येक अध्याय के अन्त में उस का सार देकर स्वामी जी ने इसे अल्पज्ञ और बहुज्ञ सब के समझने योग्य बना दिया है।......ऐसी कोई बात नहीं जो इस व्याख्या में देखने को न मिलती हो। सारांश, साम्प्रदायिक भेद भावों से अलग रहते हुए स्वामी जी ने इस गीता को लिखकर देश का बड़ा उपकार किया है। हमारे पास वे शब्द ही नहीं कि जिन के द्वारा हम स्वामी जी को धन्यवाद दें......।

लीग से मिलने वाली उर्दू पुस्तकें।

(१) वेदानुवचन—इस में उपनिषदों के आधार पर वेदान्त के गहन विषय का वर्णन है। मूल्य बिना जिल्द १) सजिल्द १॥)

(२) कुलियाते-राम; भाग १—इस में स्वामी जी के उर्दू लेखों का संग्रह है। मूल्य बिना जिल्द १) सजिल्द १॥)

(३) राम पत्र—इस में स्वामी जी के वह पत्र हैं जो उन्हों ने अपनी किशोर अवस्था से अपने गुरु को भेजे थे।

(४) राम-वर्षा भाग १—इस में स्वामी राम के अपने भजन तथा उसी आशय के दूसरों के भजन हैं मूल्य सजिल्द ।।।)

(५) राम-वर्षा भाग २—इस में भजनों के साथ स्वामी जी का संक्षिप्त जीवन चरित्र है मूल्य बिना जिल्द ॥) और सजिल्द ॥।)

निवेदन।

प्रिय पाठक गण ! श्री रामतीर्थ-ग्रन्थावली का यह नवाँ भाग है जो वर्तमान वर्ष का पहिला खण्ड अर्थात् पहिला नम्बर है। इस में राम-वर्षा का शेष भाग प्रकाशित किया गया है जिस से पाठकगण के पास राम-वर्षा सम्पूर्ण रूप से पहुँच जाय। इससे आगे तीन भागों में लेखों व व्याख्यानों का अनुवाद प्रकाशित होगा।

धर्म भाव से प्राणिमात्र की सेवा करने के उद्देश से और दुःखित व तप्त हृदयों को परमहंस स्वामी रामतीर्थ के अमृत भरे उपदेशों की वर्षा से शान्त और तृप्त करने के विचार से श्री रामतीर्थ ग्रन्थावली का जन्म सन् १६१६ में श्री रामतीर्थ पब्लिकेशन लीग द्वारा हुआ था, और जिस का एक वर्ष गत नवम्बर १६२० में समाप्त भी हो गया है; आज यह देख कर हर्ष हो रहा है कि कागज, छपाई, छिन्दवाड़े का मुकद्दमा इत्यादि नाना प्रकार की कठिनाइयों के आ पड़ने पर भी आज तक ग्रन्थावली आप की सेवा निरन्तर रूप से कर सकी। यद्यपि उक्त कठिनाइयों के कारण गत वर्ष के आठ भागों को पहुँचाने में विलम्ब हुआ था, पर वह दोष ग्रन्थावली को जन्म देने वालों का नहीं था। वह तो अपना प्रेस न होने के कारण और बाज़ार में समय २ पर कागज के न मिलने से उत्पन्न हो आया था। अस्तु, यह हर्ष का समय है कि इस वर्ष के लिये कागज इकट्ठा प्राप्त हो गया है, और प्रेस वालों ने भी ठीक समय पर भाग छापने का सहस दिया है, जिस से आशा की जा सकती है कि नवम्बर १६२१ तक चार भाग ग्राहकों के

पास अवश्य पहुँच जायँगे। चारों भागों को समय पर शीघ्र पहुँचाने में अपनी ओर से हम कोई कसर बाकी न रक्खेंगे, परन्तु शक्ति भर परिश्रम करने पर भी यदि किसी दैव योग से किञ्चित विलम्ब हो भी गया तो आशा है कि ग्राहक जन कृपा करके उसे दैव विघ्न समझ कर हमें क्षमा करेंगे।

गत वर्ष कुछ लोगों से बहुत शिकायतें पहुँची थी कि उन के पास उनका भाग नहीं पहुँचा। यद्यपि यहाँ से अवश्य भेज दिया जाता था तथापि पुनः २ थोड़े दाम पर उन भागों को भेजने में कुछ पाठकों को और कुछ लीग को हानि उठानी पड़ी। इस प्रकार हानि को बन्द करने के विचार से लीग के प्रबन्धकमंडल ने ग्रंथावली को रजिस्टर्ड पैकिट द्वारा भेजने का नियम पास कर दिया है। जो सज्जन रजिस्टर्ड पैकट द्वारा अपना प्रति भाग मँगवाया करेंगे और उसी अनुसार वार्षिक शुल्क पेशगी भेज देंगे, उन का कोई भाग यदि मार्ग में गुम हो गया, तो लीग उस की जिम्मेवार हो जायगी, केवल बुक पैकट द्वारा मँगवाने वालों की नहीं, क्योंकि उस में डाक वालों का दोष होता है, और डाक वाले उस का दाम देते नहीं।

अन्त में यही प्रार्थना है कि इस ग्रन्थावली से लाभ उठाने के लिये ग्राहक जन अपने मित्रों और स्नेही वर्ग को उद्यत करते रहें और इस प्रकार ग्राहक संख्या बढ़ाते रहें, जिस से इस निष्काम कार्य में दिन द्विगुणी और रात चौगुणी वृद्धि हो और कार्य कर्ताओं को उत्साह मिलता रहे।

मन्त्री

अगस्त १९२१
लखनऊ

श्री रामतीर्थ पब्लिकेशन लीग।
लखनऊ

विषय सूची ।

——:o:——

संख्या	विषयवार भजन	पृष्ठ

वैराग्य ।

भक्ति या इश्क़ ।

आत्म ज्ञान ।

ज्ञानी ।

त्याग (फकीरी) ।

निजानन्द (खुदमस्ती)

विविध लीला ।

The Complete Works of Swami Rama Tirtha
(In Woods of God-Realization.)
(Each Volume is Complete in itself)

Vol. I Part I-III. With two portraits, a preface by Mr. Puran, an introduction by Mr. C. F. Andrews, and twenty lectures delivered in Japan and America. Pages 500, D. OCTAVO, Cloth Bound Rs 2.

Vol II Part IV & V. Containing a Life-sketch, two portraits, seventeen lectures delivered in America, fourteen chapters of forest-talks and discourses held in the west, letters from the Himalayas, and several poems. Pages, 572 D. OCTAVO. Cloth Bound Rs. 2.

Vol. III Part VI & VII. With two portraits, twenty chapters of lectures and informal-talks on Vedanta, ten chapters of his valuable utterances on India the Motherland and several letters. Pages 542 D. OCTAVO Cloth Bound Rs. 2.

Mathematics; Its importance and the way to excel in it. (With a photo and life-sketch of Swami Rama). Beautifully bound; Annas twelve.

This article was written for the students by Swami Rama Tirtha when he was joint Professor of Mathematics, Foreman Christian College, Lahore in 1896. It is now printed in a book form and to enhance the value of it and to make it more attractive and useful, a photo of Swami Rama as a Professor along with his life-sketch is presented in an arranged form, specially bringing out those points in Rama's unique life as may serve to inspire and guide many a poor student labouring under sore difficulties and may make his life's burden light and cheerfully borne.

(Note,—Postage and Packing in all cases extra.)

परमहंस स्वामी रामतीर्थ ।
लखनऊ १९०५

राम-वर्षा।

(भाग २-पूर्व से आगे)

वैराग्य

[२७]

१ अंगना ताल तीन।

प्रीतम जान लियो मन माहीं ॥ (टेक)

अपने सुख से सब जग बान्ध्यो, कोउ काहू को नाहीं ॥ १ ॥ प्री०
सुख में आन बहुत मिल बैठत, रहत चहुँ दिश[1] घेरे।
बिपद[2] पड़ी सब ही संग छाँडत, कोउ न आवत नेड़े ॥२॥ प्री०
घर की नार बहुत हित[3] जासों, रहत सदा संग लागी।
जब ही हंस[4] तजी यह काया, प्रेत २ कह भागी ॥ ३ ॥ प्री०
जीवत को व्योहार बनयो है, जा से नेह[5] लगायो।
अंत समय नानक बिन हर जी कोई काम न आयो ॥ ४ ॥ प्री०

---

१ चारों ओर, तरफ. २ दुःख, आपत्ति. ३ प्यार, स्नेह. ४ जीव. ५ मोह, प्रेम.

[२८]

राग देव गंधारी ।

झूठी देखी प्रीत जगत में, झूठी देखी प्रीत (टेक)।
मेरो मेरो सब ही कहत हैं हित[1] से बान्धयो चीत[2] ॥ ज०
अपने सुख हित[3] सब जग फांद्यो क्या दारा[4] क्या मीत[5] ॥ज०
अन्त काल संगी नहिं कोऊ यह अचरज है रीत[6] ॥ ज०
मन मूरख अजहों[7] नहिं समझत सिख दे हार्यो नीत[8] ॥ज०
नानक भवजल[9] पार पड़े जो गावे प्रभु के गीत ॥ ज०

[२९]

काफी राग जोगी तारा धुमाली ।

जग में कोई नहीं ज़िन्द[10] मेरिये ! हरी बिना रछपाल[11] (टेक)
धन जोड़न नूं बहुत सियाना[12], रैन[13] दिनां यही चिन्ता ।
अन्त समय यह सब धन तेरा, कदे[14] न होसी मन्ता[15] ॥१॥ जि०
खावन[16] पीवन दे विच रचया[17], भूल गया प्रभु अपना ।
यह जिस नूं अपना कर जाने, होसी रैन[18] का सुपना ॥ २ ॥जि०
महल अरु[19] माड़ी, ऊँच[20] अटारी, है शोभा[21] दिन चारी ।
नाम बिना कोई काम न आवे, छूटन अन्त दी वारी ॥ ३ ॥ जि०

---

१ प्यार, मोह. २ चित्त दिल. ३ सबब, कारण. ४ स्त्री. ५ मित्र. ६ व्यवहार तरीका. ७ अभी तक. ८ नित्य. ९ संसार समुद्र. १० ऐ जान मेरी ! ११ रक्षा करने वाला. १२ दक्ष निपुण. चतुर. १३ रात दिन. १४ कभी. १५ अच्छा फल देने वाला. १६ खान पान. १७ लग गया, मग्न हो गया. १८ रात्रि का स्वप्न. १९ और. २० ऊंचा मकान. २१ चार दिनकी शोभा है.

जगत जंजाल तेरे गल फांसी, ले सी जान प्यारी।
हृदय भजन विना इस जग विच सके न कोई उतारी[1] ॥४॥जि०
जंगल ढूंढन जा न प्यारे, निकट[2] बसे हरी स्वामी।
तू जाने हरी दूर बसे है, वह तो घट घट अन्तर्यामी ॥५॥ जि०
होय अचीत[3] सोवे सुन मूरख ! जन्म अकारथ[4] जावे।
जीवन सफल[5] तदे ही होवे, भक्ति हृदय विच आवे ॥६॥ जि०
भक्ति विना गुबार[6] अंधराना, देख देख कर भूरे।
जब मन अन्दर नाम बसे है, नसन[7] सकल[8] वंसूरे[9] ॥७॥जि०
अमृत नाम जपे जद प्राणी, तृषा सकल मिट जावे।
तपत हृदय मिट जावे सारी, ठंड कलेजे आवे ॥ ८ ॥ जि०

[३०]

काफी राग फालगुणा।

यह जग स्वप्ना है रजनी[10] का, क्या कहे मेरा मेरा रे (टेक)
मात तात[11] सुत[12] दारा[13] मनोहर, भाई बन्धु अरु चेरा[14] रे।
आपो अपने स्वारथ के सब, कोई नहीं है तेरा रे ॥ १ यह०
जिन के हेत[15] करत धनसंचय[16], कर कर पाप घनेरा[17] रे।
जब यमराज पकड़ ले जावे, कोई न संग चलेरा रे ॥ २ ॥ यह०
ऊंचे ऊंचे महल बनाये, देश दिगंतर घेरा रे।
सब ही ठाठ पड़ा रह जावत, होत जंगल में डेरा रे ॥ ३ ॥ यह०
इतर फुलेल मले जिस तन को, अन्त भस्म की ढेरा रे।
ब्रह्मानंद स्वरूप विन जाने, फिरत चौरासी फेरा रे ॥ ४ ॥ यह०

---

१ पार उतारना. २ समीप. ३ वेखबर, अचेत. ४ वेफायदा, व्यर्थ. ५ सद्‌
६ घोर अन्धकार ७ दूर भागें. ८ सारे. ९ कष्ट, तकलीफ, दुःख. १० रात. ११
पिता १२ बेटा १३ स्त्री १४ शिष्य. १५ कारण १६ एकत्र, जमा करना. १७ बहुत.

[३१]

राग मांड ।

जिन्हां[1] घर झूलते हाथी, हज़ारों लाख थे साथी । } टेक
उन्हां को खा गयी माटी, तू खुश कर नींद क्यों सोया }
नक्कारह छत्र का वाजे, कि मारू मौत का बाजे ।
ज्यों सावण मेघरा गाजे, तू खुश कर नींद क्यों सोया ॥ १ ॥
कहां गये खान[2] मद माते, जो सूरज चाँद चमकाते ।
न देखे कहां जो वह जाते, तू खुश कर नींद क्यों सोया ॥ २ ॥
जिन्हां घर लाल और हीरे, सदा मुख पान और बीड़े ।
उन्हां नूं खा गये कीड़े, तू खुश कर नींद क्यों सोया ॥ ३ ॥
जिन्हां घर पालकी घोड़े, ज़री ज़रबफत के जोड़े ।
मुही अब मौत ने तोड़े, तू खुश कर नींद क्यों सोया ॥ ४ ॥
जिन्हां दे वाल थे काले, मलाईयां दूध से पाले ।
वह आखिर आग में डाले, तू खुश कर नींद क्यों सोया ॥ ५ ॥
जिन्हां संग प्यार था तेरा, उन्हां किया खाक में डेरा ।
न फिर वह करनगे फेरा, तू खुश कर नींद क्यों सोया ॥ ६ ॥

[३२]

रागिनी सुहंव ताल धीमा ।

ऐथे[3] रहना नाहिं मत खरमस्तियां कर ओ (टेक)
तनमद[4], धन मद, और राज मद पी, कर मस्ती न कर ओ ॥१॥ ऐ०

---

१ जिन के २ बड़े अहंकार वाले अथवा बड़े मान वाले राजा वादिक. ३ इसे जगह, संसार में ४ अहंकार.

कौरव पांडव भोज और विक्रम, दस कहां गये किधर ओ ॥२॥ ऐ०
रामचंद्र, लङ्केश[1], विभीषण, लङ्का को गये खाली कर ओ ।३॥ ऐ०
काल वारन्ट निकाल अचानक, तुर्त ले जासी फड़ ओ ।४॥ ऐ०
साथ न जासी संपत[2] तेरे, ख़वत हो जासी घर ओ ॥५॥ ऐ०
मर्घट दे विच मिलसी भूमी साढ़े तीन हाथ भर ओ ।६॥ ऐ०
यह देह खेह[3] हो जासीं पल विच, रूप जोवन जर[4] ओ ।७॥ ऐ०
अमीर कबीर[5] न बचिया कोई, मौत नूं दे कर ज़र[6] ओ ॥८॥ ऐ०

[३३]

राग पहाड़ी ।

धन जन[7] योवन संग न जायें प्यारे ! यह सब पीछे रह जावें ॥ टेक
रैन[8] गंवाई देह निसारे[9], प्यारे खा कर दिवस[10] गंवाये ।
मानुष जनम अकारथ खोया, मूर्ख ! समझ न आवे ॥ १ ॥ धन०
धन कारण जो होवे दीवाना, चारों दिशा को धावे ।
राम नाम कभी न सुमरे सो अंत[11] पछतावे ॥ २ ॥ धन०
प्रीति सहित मिल आवो रे साधो, ईश्वर के गुण गावें ।
जिस के किये सदा शुभ होवे, तिस को काहे भुलावें ॥ ३ ॥ धन०

[३४]

इस तन चलना प्यारे ! कि डेहरा जंगल में मलना (टेक)
सूरत योवन भी चल जांदा, कोई दिन दा ढोल वजांदा ।
आखर माटी में मलना । कि इस तन चलना० ॥ १ ॥

---

१ लंका का स्वामी रावण. २ धन दौलत. ३ राख. ४ मुरझाना. ५ बड़ा पुरुष, कवि का नाम है ६ धन दौलत. ७ पुरुष ८ रात ९ सोये १० दिन. ११ अन्तकाल.

सब कोई मतलब दा है बेली[1], तेरी जासी जान अकेली ।
ओड़क वेला[2] नहीं टलना । कि इस तन चलना० ॥ २ ॥
यह तो चार दिनां दा मेला, रहना गुरू न रहना चेला ।
इस तन आतिश[3] में जलना । कि इस तन चलना० ॥ ३ ॥
जिस नूं कहें तू मेरी मेरी, यह नहिं मेरी है ना तेरी ॥
इस ने खाक विच[4] रलना । कि इस तन चलना० ॥ ४ ॥
यह तन अपना देख न भुलरे, बिन ईश्वर के फना[5] है कुल रे ।
प्रभु दे भजन बिना गलना । कि इस तन चलना० ॥ ५ ॥
मिट्ठा बोल हथ्थों[6] कुच्छ दे लै, नेकी कर ज़िंदगी दा है वेला ।
पिच्छों किसे नहीं घलना[7] । कि इस तन चलना० ॥ ६ ॥

[३५]

राग जंगला ।

कोई दम दा इहां[8] गुज़ारा रे । तुम किस पर पाँव पसारा रे ।
इहां पलक झलक दा मेला है । रहना गुरू न रहना चेला है ॥
कोई पल का यहां गुज़ारा रे ॥ १ ॥ कोई दम०
यहां रात सराय का रहना है । कछु स्थिर होय न जाना है ।
उठ चलना सांझ सकारा[9] रे ॥ २ ॥ कोई दम०
ज्यों जल के बीच बताशा है । त्यों जग का सभी तमाशा है ॥
यह अपनी आँख निहारा[10] रे ॥ ३ ॥ कोई दम०
देखन में जो कोई आवे है । सब खाक माहिं मिल जावे है ॥
यह सभी काल का चारा[11] रे ॥ ४ ॥ कोई दम०

१ प्यारा. २ अन्त समय. ३ अग्नि. ४ खाक के बीच. ५ नाशवान. ६ हाथ से ७ भेजना. ८ यहां. ९ सवेरे, प्रातःकाल. १० देखा, ११ घास, भोजन, आधीन.

यह दृश्यमान सब नाशी[1] है। इस काल के सब घर फांसी है॥
इस काल सबन को मारा रे॥ ५॥ कोई दम०
दर जिन के नौबत बाजे है। वे तख्त छोड़ कर भाजे हैं॥
लशकर जिनके लाख हज़ारा रे॥ ६॥ कोई दम०

[३६]

ग़ज़ल।

ज़रा टुक सोच ऐ ग़ाफ़िल! कि दम का क्या ठिकाना है।
निकल जब यह गया तन से तो सब अपना बिगाना है॥
मुसाफ़िर तू है और दुनियाँ सराय है, भूल मत ग़ाफ़िल!।
सफ़र परलोक का आखिर, तुझे दरपेश आना है॥ १॥ ज़०
लगाता है अबस[2] दौलत पे, क्यों तू दिल को अब नाहक़।
न जावे संग कुछ हरगिज़, यहीं सब छोड़ जाना है॥ २॥ ज़०
न भाई बन्धु है कोई, न कोई आशना[3] अपना।
बख़ूबी ग़ौर कर देखा, तो मतलब का ज़माना है॥ ३॥ ज़रा०
रहो लग याद में हक़[4] की, अगर अपनी शफ़ा[5] चहो।
अबस दुनियाँ के धंधों में हुआ तू क्यों दिवाना[6] है॥ ४॥ ज़रा०

[३७]

मान मन! क्यों अभिमान करे (टेक)
यौवन धन क्षणभंगुर तिन पै, काहे मूढ़ मरे॥१॥ मान०

---

१ नाश होने वाला, २ व्यर्थ, बेफायदा, ३ दोस्त, मित्र, ४ सत्य स्वरूप, ईश्वर, ५ भलाई, बेहतरी, ६ पागल

जल बिच फेन बुदबुदा जैसे, छिन छिन बन बिगड़े ।
त्यों यह देह खेह होय छिन में, बहुर[1] न दीख पड़े ॥ २ ॥ मान०
मंदिर महल बहल रथ बाहन[2], यहीं रह जान धरे ।
भाई बन्धु कोई संग न लागे, न कोई साथ[3] भरे ॥ ३ ॥ मान०
चाम के देह से नेह[4] लगावे, उस बिन नाहिं डरे ।
धृक् तो को अरे ! अति सुंदर हरि ! ताकी सुध न करे ॥४॥ मान०
हरि चर्चा, सत सेवा अर्चा[5], इन ते निपट डरे ।
कूकर सूकर तुल्य भोग रत अंध होय विचरे ॥ ५ ॥ मान०

[३८]

मना[6] ! तैं ने राम न जान्या रे । (टेक)
जैसे मोती ओस[7] का रे, तैसे यह संसार ।
देखत ही को झिलमला[8] रे, जात न लागी बार[9] ॥ मना० १
सोने का गढ़ लङ्क[10] बनायो, सोने का दरबार ।
रती इक सोना न मिला रे, रावण मरती बार ! ॥ मना० २
दिन गंवाया[11] खेल में रे, रैण[12] गंवाई सोय ।
सूरदास भजो भगवन्ता[13], होनी होय सो होय ॥ मना० ॥ ३

[३९]

दिला[14] ! गाफिल न हो यकदम कि दुन्या छोड़ जाना है ।
बगीचे छोड़ कर खाली ज़िमीं अन्दर समाना है ॥ } टेक

१ फिर. २ सवारी. ३ अभिप्राय कि न कोई साथ रहे और न कोई सहायता करे. ४ प्रीति मोह. ५ पूजा. ६ हे मन. ७ भाफ, तरेल, शबनम. ८ चमकीला. ९ जाते समय देर नहीं लगाना. १० सोने की लंका. ११ खोया. १२ रात. १३ भगवान को भजो जो होना है सो होने दो (होता रहे). १४ हे दिल.

वदन नाजुक गुलों[1] जैसा, जो लेटे सेज फूलों पर।
होवेगा एक दिन मुरदा, यही कीड़ों ने खाना है ॥ १ ॥
न वेली होयगा भाई, न बेटा बाप ना माई।
क्या फिरता है सौदाई, अमल ने काम आना है ॥ २ ॥
प्यारे ! नज़र कर देखो, पड़ी जो माड़ियां खाली।
गये सब छोड़ फानी देह, दगाबाज़ी का बाना है ॥ ३ ॥
प्यारे नज़र कर देखो, न खवेशों[2] में नहीं तेरा।
ज़नो-फ़र्ज़न्द[3] सब कूकें, किसे तुझ को छुड़ाना है ॥ ४ ॥
ग़लत[4]-फ़ैहमी यही तेरी, नहीं आराम है इस जा[5]।
मुसाफिर बेवतन[6] तू है, कहां तेरा ठिकाना है ॥ ५ ॥

[४०]

चपल मन मान कही मेरी, न कर न हरि चिन्तन में देरी (टेक)
लख चौरासी योनि भुगत के यह मानुष तन पायो।
मेरी तेरी करते करते नाहक जन्म गमायो ॥ १ ॥ चपल०
मात पिता सुत भ्रात नारि पति देखन ही के नाते।
अंत समय जब जाय अकेला तो कोई संग नहि जावे ॥ २ ॥
दुन्या दौलत माल खज़ाने व्यंजन[7] अधिक सुहाने।
प्राण छूटे सब होये पराये, मूरख मुफ़त लुभाने ॥ ३ ॥ च०
काम क्रोध मद लोभ मोह यह पांचों बड़े लुटेरे।
इन से बचने के लिये तू हरि चरणन चित्त दे रे ॥ ४ ॥ च०

---

१ पुष्प, फूल. २ संबन्धीजन, रिश्तेदार. ३ स्त्री, पुत्र. ४ बेसमझी, भूल. ५ स्थान, इस संसार में. ६ बिना घर के. ७ स्वादिष्ट भोग पदार्थ, खिलायश. ८ मोह लेने वाले, लुभायमान.

योग यज्ञ तप तीरथ संयम साधन वेद बताये।
हरि सुमिरण सम एकहु नाहिं, बड़ भाग्य जो पाये ॥ ५ ॥ च०

[४१]

दुन्या के जंगलों में है यह दिल भटक रहा।
अटका यहां जो आज, तो कल वहां अटक रहा ॥ १ ॥

मंदिर में फँस गया कभी, मसजिद में जा फंसा।
छूटा जो यहां से आज, तो कल वहां अटक रहा ॥२॥

हिन्दू का और किसी को मुस्लमान का ग़रूर।
ऐसे ही वाहियात में हर इक भटक रहा ॥ ३ ॥

वह हर जगह मौजूद है जिसकी तलाश है।
आँखों के आगे परदा-ए[1]-ग़फलत लटक रहा ॥ ४ ॥

गुलज़ार[2] में है, गुल में है, जंगल में, बैहर[3] में।
सीना में, सिर में, दिल में, जिगर में, खटक रहा ॥५॥

ढूंढ़ा है उस को जिस ने उसे आन कर मिला।
अटका जो उसकी राह से उस से अटक रहा ॥ ६ ॥

सिद्क़[4] और यक़ीन के बिना दिल्बर मिले कहां।
गो जंगलों में बरसों ही सिर को पटक रहा ॥ ७ ॥

यार! उम्मेद एक पे रख, दिल को साफ कर।
क्या बिसवसा[5] का काँटा है दिल में खटक रहा ॥ ८ ॥

---

१ सुस्ती (अविद्या) का पर्दा, २ बाग, ३ समुद्र, ४ शुद्ध हृदय, ५ संशय, शुबा, शक.

[४२]

राग खंमाच ताल।

चंचल मन निशदिन[1] भटकत है।
ऐजी भटकत है, भटकावत है ॥ टेक ॥
ज्यों मर्कट[2] तरु ऊपर चढ़ कर।
डार डार पर लटकत है ॥ १ ॥ चंचल०
रुकत[3] यतन से क्षण विषयण ते।
फिर तिन ही में अटकत है ॥ २ ॥ चंचल०
काँच के हेत लोभ कर मूरख।
चिन्तामणि को पटकत है ॥ ३ ॥ चंचल०
ब्रह्मानन्द समीप छोड़ कर।
तुच्छ विषय रस गटकत[4] है ॥ ४ ॥ चंचल०

[४३]

झँझोटी ठुमरी ताल

भजन बिन वृथा जन्म गयो ॥ टेक ॥
बालपनों सब खेल गमायो, योवन काम[5] बह्यो ॥ १ ॥ भ०
बूढ़े रोग ग्रसी सब काया, पर[6] वश आप भयो ॥ २ ॥ भ०
जप तप तीरथ दान न कीनो, ना हरिनाम लियो ॥ ३ ॥ भ०
ऐ मन मेरे! बिना प्रभु सुमरण, जाकर नरक पयो ॥ ४ ॥ भ०

---

१ रात दिन. २ कपि, बन्दर. ३ रुक कर, रुका हुआ होकर. ४ गट गट कर रहा है. ५ विषय वासना में लिप्त हो गया. ६ दूसरे के वश में, दूसरे के आधीन.

[४४]

धनाश्री।

मेरो मन रे भज ले कृष्ण मुरारी (टेक)
चार दिनन के जीवन खातिर रे कैसी जाल पसारी।
कोई न जावत संग तुम्हारे, रे मात पिता सुत[1] नारी ॥ मेरो०
पाप कपट कर संचित[2] धनको रे मूरख मौत विसारी।
ब्रह्मानन्द जन्म यह दुर्लभ रे, देत वृथा किम डारी ॥ मेरो०

[४५]

भैरवी।

सुनो नर रे राम भजन कर लीजे (टेक)
यह माया बिजली का चमका रे, या में चित्त न दीजे।
फूटे घट[3] में जल न रहावे रे, पल पल काया[4] छीजे[5]। भजन०
सबही ठाठ पड़ा रह जावे रे, चलत नदी जल पीजे।
ब्रह्मानंद रामगुण गावो रे, भवजल[6] पार तरीजे ॥ भजन०

[४६]

राग धनाश्री ताल धुमाली

रचना राम रचाई रे सन्तो ! रचना राम रचाई ॥ टेक ॥
इक विनसे[7] इक स्थिर माने, अचरज लख्यो न जाई ॥ रे०

---

१ पुत्र. २ एकत्र, जमा, इकट्ठा. ३ घड़ा. ४ शरीर, ५ मुरझाना, घटना. ६ संसार रूपी समुद्र. ७ नाश होना.

काम क्रोध मोह मत्सर[1] लालच, हरि सुरता[2] विसराई ॥ रे०
झूठा तन साचा कर मान्यो, ज्युं सुपन[3] रैन[4] में आई ॥ रे०
जो दीखे सो सकल[5] विनासे, ज्युं बादर[6] की छाई ॥ रे०
नाम रूप कछु रहन न पावे, खिन में सर्व उड़ जाई ॥ रे०
जिस प्यारे हरि आप पिछाना, तिस सब विधे[7] बन आई ॥ रे०

[४७]

होरी राग जिला काफी

जीआ[8] तोकूं समझ न आई, मूरख तैं उमर गंवाई (टेक)
मात पिता सुत[9] कुटुंब क़बीला, धन योवन ठकुराई[10] ।
कोई नहिं तेरो, तूं न किसी को संग रह्यो ललचाई ॥
उमर में तैं धूल उड़ाई, जीआ तोकूं समझ न आई ॥ १ ॥
राग द्वेष तूं किन से करत है, एक ब्रह्म रह्यो छाई ।
जैसे स्वान[11] रहे काँच भुवन[12] में, भौंक भौंक मर जाई ॥
खबर अपनी नहिं पाई, जीआ तोकूं समझ न आई ॥ २ ॥
लोभ लालच के बीच तूं लटकत, भटक रह्यो भरमाई ।
तृषा न जायगी मृगजल पीवत, अपनो भरम गंमाई ॥
श्याम को जान ले भाई, जीआ तोकूं समझ न आई ॥ ३ ॥
अगम[13] अगोचर[14] अकलंक[15] अरूपी[16], घट घट रहत समाई ।

---

१ अहंकार, ग़रूर. २ हरि की सुरती, ध्यान. ३ स्वप्न, ख्वाब. ४ रात. ५ क्षय नाश होवे. ६ बादल. ७ तरह. ८ रे दिल, मन. ९ पुत्र. १० मिल्कीयत, बड़ा पद, ठाकुरपन. ११ कुत्ता. १२ शीशे का महल. १३ जहाँ कोई जा न सके दुर्गम, अवघट, गहन १४ इन्द्रियों की पहुंच से परे, इन्द्रियातीत, बोधागम्य, १५ कलंक रहित. १६ रूप रहित.

सूरश्याम प्रभु तिहारे भजन बिन, कबहुं न रूप दिखाई ॥
श्याम को श्रौ लखो[1] सदाई[2], जीश्रा तो कूं समझ न श्राई ॥ ४ ॥

[४८]

राग खंमाच ताल दादरा।

तर[3] तीव्र भयो वैराग्य तो मान अपमान क्या।
जानयो अपना आप तो वेद पुराण क्या ॥
खुद मस्ती कर मस्त तो फिर मदरा पान क्या ॥
किचा देहाध्यास तो आत्म ज्ञान क्या ॥
वीत[4] राग जब भये, तो जगत की लोड़ क्या।
तृणवत जानयो जगत तो लाख करोड़ क्या ॥
चाह-रज्जू[5] से बन्धयो तो फिर मरोड़ क्या।
किचा भ्रान्ति साथ, तो विवाद[6] फिर होर[7] क्या ॥

[४९]

यह पाठ अजब है दुन्या की और क्या क्या जिन्स इकट्ठी है।
यां माल किसी का मीठा है और चीज़ किसी की खट्टी है ॥
कुछ पकता है, कुछ भुनता है, पकवान मिठाई फट्टी है।
जब देखा खूब तो आखिर को न चूल्हा भाड़ न भट्टी है ॥
गुल शोर बगोला आग हवा और कीचड़ पानी मट्टी है।
हम देख चुके इस दुन्या को, यह धोखे की सी टट्टी है ॥ १ ॥

---

१ पाश्रो, समझो. २ सर्वदा हमेशा. ३ बहुत भारी. ४ राग रहित. ५ इच्छा, वासना की रस्सी. ६ झगड़ा. ७ श्रौर अधिक, दूसरी. ८ मंडी.

कोई ताज खरीदे हंस हंस कर, कोई तख़्त खड़ा बनवाता है।
कोई रो रो मातम करता है, कोई गोर[1] पड़ा खुदवाता है॥
कोई भाई बाप चचा नाना, कोई बाबा पूत कहाता है।
जब देखा खूब तो आख़िर को, नहीं रिश्ता[2] है नहीं नाता है॥
गुल[3] शोर बगोला आग हवा और कीचड़ पानी मट्टी है।
हम देख चुके इस दुन्या को सब धोखे की सी टट्टी है॥ २॥

कोई बाल बढ़ाये फिरता है, कोई सिर को घोट मुंडाता है।
कोई कपड़े रंगे पेहने है, कोई नंग मनंगा आता है॥
कोई पूजा कथा बखाने है, कोई रोता है, कोई गाता है।
जब देखा खूब तो आख़िर को, सब छोड़ अकेला जाता है॥
गुल शोर बगोला आग हवा और कीचड़ पानी मट्टी है।
हम देख चुके इस दुन्या को, सब धोखे की सी टट्टी है॥ ३॥

कोई टोपी टोप सजाता है, कोई बांद फिरे अमामा[4] है।
कोई साफ़ ब्रहना[5] फिरता है, नै[6] पगड़ी नै पाजामा है॥
कमख़ाब गज़ीं और गाढ़े का, नित कज़िया[7] है, हंगामा[8] है।
जब देखा खूब तो आख़िर को, न पगड़ी है न जामा है॥
गुल शोर बगोला आग हवा और कीचड़ पानी मट्टी है।
हम देख चुके इस दुन्या को, सब धोके की सी टट्टी है॥ ४॥

[५०]

जो ख़ाक से बना है, वह आख़िर को ख़ाक है॥ टेक॥

---

१ क़बर. २ सम्बन्ध. ३ शोर शराबा. ४ पगड़ी. ५ नंगा. ६ नहीं. ७ झगड़ा. लड़ाई.

दुन्या से जब कि औलिया[1] अरु अंबीया[2] उठे।
अजसाम[3] पाक उन के इसी ख़ाक में रहे॥
रूहें[4] हैं ख़ूब जान में, रूहों के हैं मज़े।
यह जिस्म से तो अब यही साबित हुआ मुझे॥१॥ जो०
वह शख़्स थे जो सात विलायत के बादशाह।
हशमत[5] में जिन की अर्श[6] से ऊंची थी बारगाह॥
मरते ही उनके तन हुए गलियों की ख़ाके-राह[7]।
अब उनके हाल की भी यही बात है गवाह॥ २॥ जो०
किस किस तरह के हो गये महबूब[8] कजकुलाह[9]।
तन जिन के मिस्ल[10] फूल थे और मुंह भी रश्के[11]-माह॥
जाती है उनकी क़बर पै जिस दम मेरी निगाह[12]।
रोता हूं जब तो मैं यही कह कह के दिल में आह॥३॥जो०

[५१]

साईं की सदा

यह दुनियाँ जाये-गुज़श्तन[13] है, साईं की है यह सदा[14] बाबा॥ (टेक)
यहां जो है रूए-अफ़तन[15] है, तू इस में दिल न लगा
बाबा॥ १॥ यह०

---

१ बड़े बड़े पैग़म्बर, ऋषी. २ नबी लोग, बड़े बड़े आत्म ज्ञानी महात्मा ३ पवित्र देह, शरीर, ४ जीवात्मा. ५ इज़्ज़त मान, विभूती. ६ आकाश. ७ रास्ते की धूल (मिट्टी). ८ प्यारे माशूक़. ९ टेढ़ी टोपी पैहनने वाले, जो सुन्दर पुरुष अपने सौन्दर्य को बढ़ाने के लिये पेहना करते हैं. १० समान, सादृश्य. ११ चन्द्रमा से ईर्षा करने वाला, अर्थात् चन्द्रमा से भी अधिक सुन्दर. १२ दृष्टि. १३ गुज़रने (छोड़ने) का स्थान. १४ आवाज़, पुकार. १५ चले जाने वाला, स्थिर न रहने वाला.

ज्ञानी न रहे, ध्यानी न रहे, जो जो थे लासानी न रहे।
थे आखिर को फ़ानी[1] न रहे, फ़ानी को कहां बक़ा[2]
बाबा ॥ २ ॥ यह०

थे कैसे कैसे शाह ज़िमीं[3], थे कैसे कैसे महल[4] संगीन।
हैं आज कहां वह मकानो-मकीं[5], न निशान रहा, न पता
बाबा ॥ ३ ॥ यह०

न वह शूर[6] रहे, न वह वीर रहे न, वह शाह रहे, न वज़ीर रहे।
न अमीर रहे, न फकीर रहे, मौला का नाम रहा
बाबा ॥ ४ ॥ यह०

जो चीज़ यहां है फ़ानी है, जो शै है आनी जानी है।
दुनियाँ वह राम कहानी है, कुछ हाल हमें न खुला
बाबा ॥ ५ ॥ यह०

माल इमाल[7] को लाते हैं, फल साथ अपने ले जाते हैं।
जो देते हैं सो पाते हैं, है यूंहि तार लगा बाबा ॥६॥ यह०

आने जाने का यहां तार लगा दुनियाँ है इक बाज़ार लगा।
दिल इसमें न तू ज़िनहार[8] लगा, कब निकला वह जो फंसा
बाबा ॥ ७ ॥ यह०

यां मर्द वही कहलाते हैं, जो जाकर फिर नहीं आते हैं।
जो आते हैं और जाते हैं, वह मर्द नहीं असली[9]
बाबा ॥ ८ ॥ यह०

---

१ नाश होने वाला २ स्थिर रहना, नित्य रहना ३ पृथिवी के राजा। ४ पत्थर के महल. ५ जगह व स्थान ६ शूरमा, बहादुर ७ कर्म, पुरुषार्थ. ८ कदापि. ९ असली, सच्चे, नेक पुरुष.

क्यों उमर अबस[1] तू ने खोई, कुछ कर ले अबभी खुदा-जोई[2] ।
मैं कहता हूं तुझ से यहां कोई, न रहा, न रहा, न रहा
बाबा ॥ ९ ॥ यह०

तैह कर तैह कर बिस्तर अपना, बान्ध उठ कर रख्ते-सफ़र[3]
अपना ।
दुनियाँ की सराय को घर अपना, तू ने है ग़लत समझा
बाबा ॥ १० ॥ यह०

क्या घोड़े बेच[4] के सोया है, क्या वक्त रायगां[5] खोया है ।
जो सोया है वह रोया है, कहते हैं मर्द-खुदा[6] बाबा ॥ ११ ॥ यह०

जितना यह माल खज़ाना है, और तू ने अपना माना है ।
सब छोड़ के यहाँ से जाना है, करता है इकट्ठा क्या
बाबा ॥ १२ ॥ यह०

क्यों दिल दौलत में लगाया है, सच कहता हूं झूठी माया है ।
यह चलती फिरती छाया है, क्या है इतबार इस का
बाबा ॥ १३ ॥ यह०

दुनियाँ न कहो तू मेरी है, ग़ाफ़िल दुनियां कब तेरी है ।
साईं की जैसे फेरी है, फिरता है तू इस जा[7] बाबा
॥ १४ ॥ यह०

यह मुल्को-माल, यह जाहो-हशम[8], यह ख्वेशो-अक़ारब[9]
जो हैं वहम[10] ।

---

१ व्यर्थ, बेफ़ायदा, २ ईश्वर प्राप्ति की जिज्ञासा. ३ सफ़र (चलने का) सर्व असबाब. ४ अर्थात् बे खबर घन सुषुप्ति में सोया है. ५ बे फ़ायदा, निष्फल. ६ ज्ञानी, आत्मवेत्ता. ७ जगह, यहां. ८ पद और मान ९ अपने सम्बन्धी, कुटुम्बी, रिश्ते दार और पड़ोसी. १० भ्रम मात्र हुये २

सब जीते जी के हैं हमदम, फिर चलना है तनहा[1]
बाबा ॥ १५ ॥ यह०
जो नेक कमाई करते हैं, जो सांसो पार[2] गुज़रते हैं ।
जो जीने जी ही मरते हैं, जीना है बस उनका बाबा
॥ १६ ॥ यह०

भक्ति (इश्क़)

[५२]

राग भैरवी ताल दादरा ।

अक़्ल के मदरस्से से उठ, इश्क़ के मैकदे[3] में आ ।
जामे-शराबे-बेखुदी[4], अब तो पीया जो हो सो हो ॥ १
लाग[5] की आग लग उठी, पम्बा[6] सां सब जल गया ।
रख्ते-वजूदो-जानो-तन[7], कुच्छ न बचा जो हो सो हो ॥ २
हिजर[8] की जब मुसीबतें, अर्ज़ कीं उसके रूबरू ।
नाज़ो-अदा[9] से मुस्करा[10], कहने लगा जो हो सो हो ॥ ३
इश्क़[11] में तेरे कोहे-ग़म[12], सिर पे लिया जो हो सो हो ।
ऐशो-निशाते-ज़िन्दगी,[13] सब छोड़ दिया जो हो सो हो ॥ ४

---

१ अकेले २ अभिप्राय यह है कि जो जीते जी परमेश्वर को प्राप्त हो कर जीवनमुक्त हो जाते हैं. ३ (प्रेम का) शराब खाना. ४ बेखुदी की शराब का प्याला. ५ प्रेम की लग्न (लटक). ६ रुई के फम्बे की तरह. ७ शरीर प्राण और तन रूपी असबाब कुच्छ न बचा. ८ विरह. ९ नखरे टखरे. १० हँस कर. ११ प्रेम स्नेह. १२ गोरः का पर्वत. १३ ज़िन्दगी की प्रसन्नता और आनन्द.

दुन्या के नेकी-बद[1] से काम, हम को न्याज़[2] कुछ नहीं।
आप[3] से जो गुज़र गया, फिर उसे क्या जो हो सो हो॥ ४॥

[५३]

राग भैरवी ताल दादरा।

ऐ दिल! तू राहे-इश्क़[4] में मरदाना हो, मरदाना हो।
क़ुर्बान कर अपनी जान को, जानाना[5] हो जानाना हो॥ १॥
तू हज़रते-इन्सान है, लाज़िम तुझे इर्फ़ान[6] है।
हरगिज़ न तू हैवान सा दीवाना[7] हो दीवाना हो॥ २॥
हर ग़म से तू आज़ाद हो, खुर्सन्द[8] हो और शाद[9] हो।
हर दो जहां के फ़िक्र से बेगाना[10] हो, बेगाना हो॥ ३॥
कर तर्क ज़ोहद[11] ज़ाहिदा[12]! मजलस-निशीं[13] रिंदो का हो।
दीवानगी[14] से दरगुज़र, फ़रज़ाना[15] हो, फ़रज़ाना हो॥ ४॥
मैं तू का मनशा अक़्ल है, लाज़िम है तुझ को क़ादरी[16]।
पी कर शराबे-बेखुदी, मस्ताना हो, मस्ताना हो॥ ५॥

[५४]

लावनी छबैया।

समझ बूझ[17] दिल खोज प्यारे! आशिक़ हो कर सोना क्या॥

---

१ अच्छे और बुरे, पुण्य पाप. २ कवि का नाम. ३ जान हथेली पर रखे रखना, अर्थात् जो अहंकार को मारे जीते हुए हो, या अपने आप से गुज़र चुका हो. ४ प्रेम के मार्ग में. ५ आशिक़ अर्थात जान देने वाला. ६ आत्म ज्ञान ७ पागल. ८ आनन्द. ९ खुश, प्रसन्न १० फ़िक्र रहित हो, निश्चिन्त. ११ तप, कर्म काण्ड १२ तपी, कर्मकांडी. १३ मस्तों की सभा में बैठने वाला बन १४ पागलपन. १५ आत्मवित, अक़्लमन्द १६ कवि का नाम है. १७ दिल में विचार कर के.

जिन नैनों से नींद गंवाई, तकिया लेफ बिछौना क्या ॥
रूखा सूखा राम का टुकड़ा, चिकना और सलूना क्या ॥
पाया है तो कर ले शादी[1], पाई पाई पर खोना क्या ॥
कहत कुमाल[2] प्रेम के मार्ग[3], सीस दिया फिर रोना क्या ॥

[५५]

राग खमाज ताल दादरा ।

अब तो मेरा राम नाम, दूसरा न कोई (टेक)
माता छोड़ी, पिता छोड़े, छोड़े सगा सोई ।
साधू संग बैठ बैठ, लोक लाज खोई ॥ अब तो० १
संत देख दौड़ आई, जगत देख रोई ।
प्रेम आँसू डार डार, अमर[4] बेल बोई ॥ अब तो० २
मारग में तारण[5] मिले, संत राम दोई ।
संत सदा शीश[6] पर, राम हृदय होई ॥ अब तो० ३
अंत में से तंत[7] काढ़यो, पिच्छे रहीं सोई ।
राणे भेज्यो विष का प्याला, पीते मस्त होई ॥ अब तो०
अब तो बात फैल गयी, जाने सब कोई ।
दास मीरां लाल गिरधर, होनी सो होई ॥ अब तो० ५

[५६]

राग कालंगड़ा ताल धुमाली ।

माई ! मैं ने गोविन्द लीना मोल (टेक)

---

१ खुशी. २ कवि का नाम ३ रास्ता. ४ सर्वदा रहने वाली. ५ पार करने वाले, बचाने वाले, उद्धार करने वाले ६ सिर, मस्तक ७ तंत्व, तत्व वस्तु से अभिप्राय है. ८ ज़हर.

कोई कहे हलका, कोई कहे भारी, लिया तराजू तोल ॥ माई०
कोई कहे सस्ता, कोई कहे मेंहगा, कोई कहे अनमोल ॥ माई०
वृन्दावन की कुंज गली में, लिया बजा के ढोल ॥ माई०
मीरां कहे प्रभु गिरिधर नागर, पूर्व जन्म के बोल ॥ माई०

[५७]

देश ताल तेवार ।

जूंहीं आमद[1] आमदे-इश्क़ का मुझे दिल ने मुज़दह[2] सुनादिया ।
खिर्दो-हवासो-शकेब[3] ने वहीं कूसे-कूच[4] बजा दिया ॥ १ ॥
जिसे देखना ही मुहाल[5] था, न था जिस का नामो-निशां कहीं ।
सो हर एक ज़र्रे में इश्क़ ने मुझे उस का जलवा[6] दिखा दिया ॥ २ ॥

पंक्तिवार अर्थ ।

(१) जिस समय मेरे अन्दर अपने स्वरूप के इश्क़ (प्रेम) के आने की खुशखबरी दिल ने सुनाई, उस समय अक़ल और होश और सन्तोष ने मेरे अन्दर से निकलने का नक्कारा बजा दिया (अर्थात भीतर से होश हवास निकलने लगे)।

(२) (प्रेम आने से पहिले) जिसको देखना कठिन था और जिस का नाम और निशान नज़र नहीं आता था, उसका हर एक अणु मात्र में भी इस इश्क़ (प्रेम) ने मुझे दर्शन अब करा दिया।

---

१ प्रेम का आगमन. २ खुश खबरी. ३ अक्ल, होश और सन्तोष ४ चलने का नक्कारा. ५ कठिन. ६ दर्शन.

करूं क्या बियान मैं हमनिशीं[1] ! असर उस की लुतफ़े-निगाह[2] का।
कि तऽय्युनात[3] की क़ैद से मुझे एक दम में छुड़ा दिया ॥ ३ ॥
वह जो नक़शे-पा[4] की तरह रही थी नमूद[5] अपने वजूद[6] की।
सो कशश से दामने-नाज़ुकी[7] उसे भी ज़िमीन से मिटा दिया ॥ ४ ॥
तेरी नासिहा[8] ! यह चुनाँ चुनीं[9], कि है खुद पसन्दी के सबक़ीन्[10]।
न दिखाई देगी तुझे कहीं, कभी जो किसी ने सुझा दिया ॥ ५ ॥

---

(३) ऐ प्यारे साथी ! मैं उस अपने प्यारे स्वरूप की दृष्टि के आनन्द के प्रभाव को (आत्मानुभव के प्रभाव को) क्या वर्णन करूं कि उस [अनुभव] ने मुझे सर्व बन्धनों की क़ैद से एक दम में छुड़ा दिया [अर्थात् सर्व बन्धनों से तत्काल मुक्त कर दिया]।

(४) ज़िमीन पर पाओं (पाद) के चिह्न की तरह जो अपने तन की प्रतीति थी सो उस स्वरूप [यार] के नाज़ुक पल्ले के आकर्षण [अर्थात् अनुभव के बढ़ने] ने उस को भी पृथिवी से मिटा दिया।

(५) ऐ उपदेश करने वाले ! तेरी यह 'क्यों कब' अहंकार के कारण से हैं। अगर किसी ने तुझ को सुझा दिया अर्थात् अनुभव करा दिया तो यह क्यों किस तरह (अर्थात् क्यों और कैसे होश उड़ जाते हैं इत्यादि) तुम को भी नहीं दिखाई देंगे।

---

१ साथ बैठने वाला. २ दृष्टि का आनन्द या प्रभाव. ३ बन्धन परिछिन्नता. ४ पाद का चिह्न. ५ व्यक्ति. प्रतीति, स्पष्ट चिह्न. ६ तन. ७ बारीक या नाज़ुक पल्ला. ८ उपदेश करने वाले. ९ क्यों, किस तरह. १० नज़दीक, समीप

तुझे इश्क़े-दिल से ही काम था, न कि उस्तख़्वानों[1] का फूंकना।
ग़ज़ब एक शेर के वास्ते तू ने नेस्तां[2] को जला दिया ॥ ६ ॥

यह निहाल[3] शोलाये-हुस्न[4] का तेरा बढ़ के सर बफ़लक[5] हुआ ॥
मेरी काये-हस्ती[6] ने मुश्तइल[7] हो उसे यह नश्वो-नुमा[8] दिया ॥७॥

---

(६) इस के दो मतलब हैं:—(१) ऐ ब्रह्म साक्षात्कार के जिज्ञासू ! तुम को दिल में प्रेम भड़काना चाहिये था, न कि अज्ञानी तपस्वियों की तरह हठ योग इत्यादि से तन बदन को सुखाना और अस्थियों को जलाना था। बड़े आश्चर्य की बात है कि तूने एक शेर (दिल) के क़ाबू करने के लिये सारे जंगल (अर्थात् इस शरीर को जिस में यह दिल रूपी शेर रहता है) को व्यर्थ आग लगादी, मुफ़्त में शरीर को जर्जरी भूत कर दिया।

दूसरा अर्थ (२) ऐ यार ! (प्रेमात्मन्) ! तुझे हमारा दिली प्रेम लेना चाहिये था, न कि हड्डियों और शरीर को जलाना और बरबाद करना था। बड़ा आश्चर्य है कि तू ने हमारा दिल लेने के बजाये हमारे शरीर रूपी बन को मुफ़्त में जला दिया।

(७) यह तेरी सुन्दरता की अग्नि (दमक) की ताज़ी लाट आकाश तक ऊपर बढ़ गयी (भड़क उठी) और मेरे शरीर रूपी तृण ने उस से जल कर उस आग को और अधिक बढ़ा दिया (अर्थात् उस अग्नि को और भी ज़्यादा भड़का दिया)।

---

१ हड्डियों. २ जंगल. ३ पुष्प, बूटा. ४ सुन्दरता की ज्वाला. ५ आकाश तक पहुंचा. ६ मेरी स्थिति के तृण अर्थात् मेरी स्थिति रूप तृण ने. ७ जल कर या भड़क कर. ८ अधिक किया, भड़काया.

[५८]

राग भैरवी ताल ग़ज़ल.

तमाशाये-जहान् है और भरे हैं सब तमाशाई ।
न सूरत अपने दिलबर सी, कहीं अब तक नज़र आई ॥ १ ॥
न उस का देखने वाला, न मेरा पूछने वाला ।
इधर यह बेकसी[1] अपनी, उधर उस की वह तनहाई[2] ॥ २ ॥
मुझे यह धुन[3], कि उस के तालबों[4] में नाम हो जावे ।
उसे यह कद[5], कि पहिले देख लो है यह भी सौदाई ॥ ३ ॥
मुझे मतलूब[6] दीदार[7] उस का, इक खिल्वत[8] के आलम[9] में ।
उसे मंज़ूर, मेरी आज़मायश, मेरी रुसवाई[10] ॥ ४ ॥
मुझे धड़का, कि आज़ुर्दा[11] न हो मुझ से कुच्छ दिल में ।
उसे शिकवा[12], कि तूने क्यों तबीयत अपनी भटकाई ॥ ५ ॥
मैं कहता हूं, कि तेरा हुसन[13] आलम-सोज़[14] है जाना[15] ! ।
वह कहता है, कि क्या हो गर करूं मैं ज़ुल्फ़-आराई[16] ॥ ६ ॥
मैं कहता हूं, कि तुझ पर इक ज़माना जान देता है ।
वह कहता है, कि हां बेइन्तहा हैं मेरे शैदाई[17] ॥ ७ ॥
मैं कहता हूं, कि दिलबर ! मैं नहीं हूं क्या तेरा आशिक़ ?
वह कहता है, कि मैं तो रखता हूं ऐसी ही रानाई[18] ॥ ८ ॥

---

१ कमज़ोरी, लाचारी. २ अकेलापन ३ लग्न ४ जिज्ञासुओं. ५ ख्याल, तरंग, हठ. ६ ज़रूरत, आवश्यकता. ७ दर्शन. ८ एकान्त. ९ अवस्था, समय. १० ख्वारी. ११ नाराज़, ख़फ़ा, क्रुद्ध. १२ शिकायत. १३ सुंदरता, १४ जगत, दुन्या को जलाने वाला. १५ ऐ प्यारे ! १६ शृंगार करना अपने नक्श को रचाना, अपने बालों को रंजाना. १७ आसक्त, आशिक, भक्त. १८ सुन्दरता, बांकपन, क़ता वज़ा.

मैं कहता हूं; कि तूं नज़रों से मेरी क्यों हुआ ओझल[1]।
वह कहता है, यही अपनी अदा[2] मुझ को पसंद आई ॥ ९ ॥
मैं कहता हूं, तेरा यह हुसन और देखूं न मैं उस को।
वह कहता है, कि मैं खुद देखता हूं अपनी ज़ेबाई[3] ॥ १० ॥
मैं कहता हूं, कि हद पर्दों की आख़र तावके[4] परदा।
वह कहता है, कि कोई जब तक न हो अपना शनासाई[5] ॥ ११ ॥
मैं कहता हूं, कि अब मुझ को नहीं है ताब[6] फ़ुर्क़त की।
वह कहता है, कि आशिक़ हो के कैसी ना-शिकेबाई[7] ॥ १२ ॥
मैं कहता हूं, कि सूरत अपनी दिखला दीजिये मुझ को।
वह कहता है, कि सूरत मेरी किस को देगी दिखलाई ? ॥ १३ ॥
मैं कहता हूं कि जानां[8] ! अब तो मेरी जान जाती है।
वह कहता है, कि दिल में याद कर क्यों कर थी वह आई ॥ १४ ॥
मैं कहता हूं, कि इक झलकी है काफ़ी मेरी तसकीं[9] को।
वह कहता है, कि बामे-तूर[10] पर थी क्या निदा[11] आई ? ॥ १५ ॥
मैं कहता हूं कि मुझ बेख़बर को किस तौर ख़बर आवे।
वह कहता है, कि मेरी याद की लज़्ज़त[12] नहीं पाई ॥ १६ ॥
मैं कहता हूं, यह दामे-इश्क़[13] बेढब तू ने फैलाया।
वह कहता है, कि मेरी ख़ुदपिसन्दी[14], मेरी ख़ुदराई[15] ॥ १७ ॥

---

१ छुपा, [illegible]. २ चेष्टा चाल, नखरा टखरा. ३ सजावट, खूबसूरती. ४ कब तक. ५ अपने आप को पैहचानने वाला, आत्मवेत्ता. ६ जुदाइगी के सहने की ताक़त. ७ बे सबरी. ८ ऐ प्यारे. ९ तसल्ली, संतोष. १० तूर के पहाड़ की चोटी पर [जहां मूसा को ज्ञान मिला और जहां ईश्वर आग की लाट में मूसा के आगे प्रकट हुआ था] अर्थात ज्ञान की शिखर पर. ११ आवाज़, वाणी. १२ स्वाद, रस १३ प्रेम का जाल, इश्क़ का फन्द. १४ अपनी मर्ज़ी १५ अपनी ही बनाई हुई; अपने आप से या अपनी बनाई हुई.

[५९]

राग परज ताल धुमाली ।

हमन[1] हैं इश्क़ के माते[2], हमन को दौलतां क्या रे ।
नहीं कुच्छ माल की परवाह, किसी की मिन्नतां क्या रे ॥ १ ॥
हमन को ख़ुश्क रोटी बस, कमर को यक लंगोटी बस ।
सिरे पै एक टोपी बस, हमन को इज़्ज़तां क्या रे ॥ २ ॥
क़बा[3] शाला वज़ीरों को, ज़री ज़रबफ़त अमीरों को ।
हमन जैसे फ़क़ीरों को, जगत की नेऽमतां[4] क्या रे ॥ ३ ॥
जिन्हों के सुख़न[5] स्याने[6] हैं, उन्हों को ख़ल्क़[7] माने है ।
हमन आशिक़ दीवाने हैं, हमन को मजलसां क्या रे ॥ ४ ॥
कियो हम दर्द का खाना, लियो हम भस्म का बाना ।
वली[8] बस शौक़ मन भाना, किसी की मसहलतां[9] क्या रे ॥ ५ ॥

[६०]

राग गारा ताल दादरा ।

हम कूये-दरे-यार[10] से क्या टल के जायेंगे ? ।
हम न पत्थर हैं फिसलने कि फिसल जायेंगे ॥ १ ॥
वसले-सनम[11] को छोड़ कर क्या काबे जायेंगे ।
वहां भी वही सनम[12] है तो क्या मुंह दिखायेंगे ॥ २ ॥

---

१ हम. २ मस्त. ३ अमीरों की पोशाक. ४ जगत के आनंद दायक पदार्थ. ५ वाक्य, उपदेश, बातें. ६ बुद्धि युक्त, ठीक. ७ दुन्या. ८ कवि का नाम. ९ सलाह, नसीहत. १० प्यारे के द्वार की गली से. ११ प्यारे के दर्शन, मिलाप, संग. १२ प्यारा (अपना स्वरूप).

हम अपने कूए-यार[1] को क़ाबा बनायेंगे।
लैली[2] बनेंगे हम, उसे मजनूं[3] बनायेंगे॥ ३॥
ग़ैरों से मत मिलो कि सितमगर[4] बनायेंगे।
हम से मिला करो तुम्हें दिलबर बनायेंगे॥ ४॥
आसन जमाये बैठे हैं, दर से न जायेंगे।
हम कैहकशां[5] बनेंगे, तुम्हें माहरू[6] बनायेंगे॥ ५॥

[६१]

राग गारा ताल धुमाली।

(बर वज़न सब से जहां में अच्छा)
कुंदन के हम डले हैं, जब चाहे तू गला ले।
बावर[7] न हो, तो हम को ले आज आज़माले॥
जैसे तेरी खुशी हो, सब नाच तू नचाले।
सब छान बीन कर ले, हर तौर[8] दिल जमाले॥
राज़ी हैं हम उसी में जिस में तेरी रज़ा[9] है। } टेक
यहां यूं भी वाह वाह है और वूं भी वाह वाह है॥१ }
या दिल से अब खुश होकर कर हमको प्यार प्यारे!।
या तेग़[10] खेंच ज़ालिम[11]! टुकड़े उड़ा हमारे॥
जीता रक्खे तू हम को या तन से सिर उतारे।
अब तो फ़क़ीर आशिक़ कहते हैं यूं पुकारे-राज़ी है० २॥

---

१ कूचा, गली. २ एक प्रिया का नाम. ३ एक प्यारे का नाम है. ४ ज़ालिम, ज़ुल्म करने वाला. ५ दूधिया रास्ता जो रात को आकाश में नज़र आता है, आकाश गंगा. (milky path) ६ चन्द्रमुख, चाँद सूरत. ७ यक़ीन, निश्चय. ८ तरह, तरीका. ९ मर्ज़ी. १० तलवार ११ ज़ुल्म करने वाला, निर्दयी, सताने वाला.

अब दर[1] पै अपने हम को रहने दे या उठा दे।
हम इस तरह भी ख़ुश हैं, रख या हवा[2] बना दे॥
आशिक़ हैं पर क़लन्दर चाहे जहाँ बिठा दे।
या अर्श[3] पर चढ़ादे या ख़ाक में रुलादे-राज़ी है० ३॥

[६२]

राग गंभीरा ताल दीपचंदी।

(टेक) अरे लोगो! तुम्हें क्या है? या वह जाने या मैं जानूं।
वह दिल मांगे तो हाज़िर है, वह सिर मांगे तो बेसिर हूं।
जो मुख मोड़ूं तो काफ़र हूं, या वह जाने या मैं जानूं॥ १॥
वह मेरी बगल छुप रहता, मैं उस के नाज़[4] सभी सहता।
वह दो बातें मुझे कहता, या वह जाने या मैं जानूं॥ २॥
वह मेरे ख़ून का प्यासा, मैं उस के दर्द का मारा।
दोनों का पन्थ[5] है नियारा, या वह जाने या मैं जानूं॥ ३॥
मूआ- आशिक़ द्वारे पर, अगर वाक़िफ़ नहीं दिलवर।
अरे मुल्ला सपारा पढ़, या वह जाने या मैं जानूं॥ ४॥

[६३]

राग पिलोरा ताल दीपचंदी।

रहा है होश कुच्छ बाक़ी उसे भी अब निबेड़े जा।
यही आहंग[6] ऐ मुतरब-पिसर[7]! टुक और छेड़े जा॥ १॥

पंक्तिवार अर्थ।

(१) ए प्यारे! (आत्मा)! अगर कुछ संसार की होश बाकी रही है तो उसे भी अब दूर करदे, ऐ रागी पुत्र! यही सुर तू छेड़े जा।

---

१ द्वार अर्थात निकट अपने. २ दूर फैंक दे, परे करदे. ३ आकाश. ४ नख़रे. ५ मार्ग. ६ राग या सुर. ७ गाने वाले के पुत्र.

मुझे इस दर्द में लज़्ज़त[1] है, ऐ जोशे-जुनूं[2]! अच्छा।
मरे ज़ख़्मे-जिगर[3] के हर घड़ी टाँके उधेड़े जा ॥ २ ॥
उखड़ना दम, कलेजा मुंह को आना, ज़ार-बेताबी[4]।
यही साहल[5] पै आना है, लगे हैं पार बेड़े जा ॥ ३ ॥
है नाला-ज़ार[6] ने पाया, सुराग़े-नाका[7]-ए-लैली।
मुबादा[8] कैस[9] आ पहुँचे, हुदी[10] को ज़ोर छेड़े जा ॥ ४ ॥

---

(२) मुझे इस दर्द में आनन्द है क्योंकि यह दर्द अपने स्वरूप को याद दिलाती है, इस लिये ऐ पागलपन के जोश! मेरे जिगर के टाँके (मेरे अन्तःकरण के संशये) हर घड़ी उधेड़े (तोड़े) जा।

(३) दम उखड़ता है तो उखड़ने दे, कलेजा मुंह को आता है तो आने दे, बेताबी होती है तो हो, क्योंकि हम ने इसी (दर्द के) किनारे पर आना है।

(४) क्योंकि मज़नू के ज़ार ज़ार रोने ने ही लैली के घर का पता पाया, इस लिये ऐ ऊँट वाले! ऊँट को बढ़ाये जा जिस से कहीं मज़नू न पीछे से आजाये [क्योंकि जिस समय मज़नू (मन) ने लैली को मिल जाना है अर्थात् आत्मानुभव कर लेना है] तो फिर।

---

१ आनन्द, स्वाद. २ पागलपन का जोश. ३ दिल के घाव. ४ बेताबी का दर्द, रोना. ५ किनारा. ६ रोने का शोर. ७ लैली (माशूक़ा) के घर का पता. ८ ऐसा न हो, शायद. ९ मजनू. १० ऊँट को धकेलने की आवाज़ अर्थात् ऊँट को चलाये चल.

कहां लज़्ज़त, कहां का दर्द, तूफ़ां कैसा, ज़खमी कौन ?।
हक़ीक़त पर पहुँचते ही मिटे क्या खूब झेडे[1] जा ॥ ५ ॥
अरे हट नाखुदा[2] ! पत्वार[3] ! मुड़ ले, टूट पर तूफ़ां ।
अड़ा ड़ा धम, अड़ा ड़ा धम, किनारों[4] को थपेड़े जा ॥ ६ ॥
हैं हम तुम दाखले-दफ़तर, खुमे-मय[5] में है दफ़तर गुम ।
न मुजरम मुद्दई बाक़ी, मिटे क्या खुश बखेड़े जा ॥ ७ ॥

[६४]

राग गारा ताल धुमाली ।

किस किस अदा[6] से तूने जल्वा[7] दिखा के मारा ।
आज़ाद हो चले थे, बन्दा[8] बना के मारा ॥ १ ॥

---

(५) लज़्ज़त कहां, दर्द कहां, तूफ़ा कैसा, ज़खमी कौन, क्योंकि असल तत्त्व पर पहुंचते ही ये सब मिट जाते हैं ।

(६) अरे नाव के मल्लाह [शरीर के अहंकार] परे हट, पत्वार मुड़ता है तो मुड़ने दे, तूफां टूट पड़ता है तो टूटने दे, और तूफां के ज़ोर से अगर किनारे टूट कर पानी में अड़ा ड़ा धम अड़ा ड़ा धम कर के गिरते हैं तो गिरने दे ।

(७) क्योंकि अब हम तुम दाखिल दफ्तर हैं और निजानन्द के मटके (अन्तःकरण) में दफ्तर गुम है, अब न कोई (द्वैतरूप) मुजरम मुद्दई बाकी है । वाह ! क्या उत्तम रीति से सब झगड़े निपटे हैं ।

---

१ सब झगड़े, कज़िये. २ बेड़ी का मल्लाह (मांझी). ३ नाव को मोड़ने (घुमाने) की चर्खी ४ किनारे. ५ आनन्द रूपी शराब का मटका. ६ नखरा. ७ दर्शन. ८ बद्ध जीव, परिच्छिन्न, अनुचर.

खुद बोल उट्ठा अनलहक[1], खुद बन के शरह[2] तूने।
इक मेर्द-हक[3] को नाहक[4] सूली चढ़ा के मारा ॥ २ ॥
क्यों कोहकपन[5] पै तू ने यह संग-रेज़ियां[6] कीं।
ली उस की जाने-शिरीं, तेशा उठा के मारा ॥ ३ ॥
पहिले बना के पुतुला, पुतले में जान डाली।
फिर उस को खुद क़ज़ा[7] को सूरत में आ के मारा ॥ ४ ॥
गरदन में कुमरियों[8] की उलफत का तौक़[9] डाला।
बुलबुल को प्यारे! तूने गुल[10] बन के खुद ही मारा ॥ ५ ॥
आँखों में तेरे ज़ालिम! छुरियां छुपी हुई हैं।
देखा जिधर को तूने पलकें उठा के मारा ॥ ६ ॥
गुञ्चे[11] में आ के महका[12], बुलबुल में जा के चहका।
इस को हँसा के मारा, उस को रुला के मारा ॥ ७ ॥

[६५]

राग तिलंग ताल दादरा।

इक ही दिल था सो भी दिलबर ले गया अब क्या करूं।
दूसरा पाता नहीं, किस को कहूं अब क्या करूं ॥ १ ॥
ले चुका था जाने-जानां[13] जां को पहिले हाथ से।
फिर भी हमले कर रहा, किस को कहूं अब क्या करूं ॥ २ ॥

---

१ शिवोऽहं. २ कर्मकाण्ड वा स्मृतिशास्त्र. ३ ज्ञानवान्. ४ व्यर्थ, विना अपराध. ५ शिवा शीरीं के प्यारे फरहाद का नाम है. ६ पत्थर फैंके. ७ मृत्यु. ८ बुलबुलों. ९ पन्धन, संगल. १० पुष्प. ११ पुष्पकली १२ खिड़ा. १३ जान की जो जान (जान से अति प्यारा)

हम तो दर[1] पर मुन्तज़र थे, तिशन-ए[2]-दीदार के।
पहुँचते बिसमिल[3] किया, किस को कहूं अब क्या करूं ॥ ३ ॥
याद्दाश्त के लिये, रहता था फोटो[4] जिस्मो[5]-जां।
वह भी ज़ायल[6] कर दिया, किस को कहूं अब क्या करूं ॥ ४ ॥
यार के मुंह पर झरोखे[7] से नज़र इक जा पड़ी।
देखते घायल हुआ, किस को कहूं अब क्या करूं ॥ ५ ॥
आप को भी क़तल कर, फिर आप ही इक रह गये।
वाह नज़ाकत आप की, किस को कहूं अब क्या करूं ॥ ६ ॥

[६८]

राग राम कली।

सइयो नी ! मैं प्रीतम पिआ को मनाऊंगी।
इक पल भी उसे न रुसाऊंगी[8] ॥ टेक
नयन हृदय का करूंगी बिछौना।
प्रेम की कलियां बिछाऊंगी ॥ सइयो० ॥ १ ॥
तन मन धन की भेंट धरूंगी।
हौमैं[9] खूब मिटाऊंगी ॥ सइयो० ॥ २ ॥
बिन पिआ दुःख बहुत होवत हैं।
बहु जूनां[10] भरमाऊंगी ॥ सइयो० ॥ ३ ॥
भेद खेद को दूर छोड़ कर।
आत्म-भाव रिझाऊंगी[11] ॥ सइयो० ॥ ४ ॥

---

१ द्वारपर. २ दर्शन के पियासे. ३ (मिलते ही) मार दिया या घायल किया. ४ सूरत, तसवीर. ५ शरीर (देह) और प्राण. ६ नष्ट. ७ खिड़की. ८ अप्रसन्न करूंगी. ९ परिच्छिन्न अहंकार. १० बहुत योनियों में. ११ आत्म भाव में प्रसन्न होना या तृप्त रहना.

जे कहा पीआ नहीं माने मेरा ।
मैं आप गले लग जाऊंगी ॥ सइयों० ॥ ५ ॥
पिआ गले लागी, हुई बड़भागी ।
जन्म मरण छुट जाऊंगी ॥ सइयों० ॥ ६ ॥
पिआ गल लागे, सब दुःख भागे ।
मैं पिआ विच लय हो जाऊंगी ॥ सइयों० ॥ ७ ॥
राम पिआ मोरे पास बसत हैं ।
मैं आप पिआ हो जाऊंगी ॥ सइयों० ॥ ८ ॥

[६७]

राग परज ताल रूपक ।

जिस को शोहरत भी तरसती हो वह रुस्वाई[1] है और ।
होश भी जिस पर फड़क जायें वह सौदा और है ॥ १ ॥
बन के पर्वाना तेरा आया हूं मैं ऐ शमां-ए-तूर[2] ! ।
बात वह फिर छिड़ न जाये, यह तक़ाज़ा[3] और है ॥ २ ॥
देखना ! जौके-तकल्लुम[4] ! यहां कोई मूसा नहीं ।
जो मेरी आँखों में फिरता है वह शीशा और है ॥ ३ ॥
यूं तो ऐ सैयाद[5] ! आज़ादी में हैं लाखों मज़े ।
दाम[6] के नीचे फड़कने का तमाशा और है ॥ ४ ॥
जान देता हूं तड़प कर कूचा-ए-उलफ़त[7] में मैं ।
देख लो तुम भी कोई दम का तमाशा और है ॥ ५ ॥

---

१ अनादर, अपमान. २ हे पहाड़ रूपी अग्नि के दीपक (आत्म देव). ३ झगड़ा ४ वाणी अर्थात् अहं पद से अपने को पुकारने का शौक़ अथवा आनंद. ५ शिकारी. ६ जाल. ७ प्रेम की गली में.

तेरे खंजर ने जिगर टुकड़े किया, अच्छा किया ।
कुछ मेरे पैहलू[1] में लेकिन चिलबला[2] सा और है ॥ ५ ॥
भेस[3] बदले महफ़िले-अग़यार[4] में बैठे हैं हम ।
वह समझते हैं यह कोई आशना[5] सा और है ॥ ६ ॥

[६८]

राग भैरवी ताल दादरा ।

आशिक़ जहाँ में दौलतो-इक़बाल क्या करे ।
मुल्को-मकानो[6] तेग़ो-तबर[7] ढाल क्या करे ॥
जिस का लगा हो दिल वह ज़रो-माल[8] क्या करे ।
दीवाना[9] जाहो-हशमतो[10] अजलाल क्या करे ॥
बेहाल हो रहा हो सो वह हाल क्या करे ।
गाहक ही कुछ न लेवे तो दल्लाल क्या करे ॥ १ ॥ टेक
मरने का डर है उन को जो रखते हैं तन में जां ।
और वह जो मर गये तो उन्हें मौत फिर कहां ॥
मोहताज[11] पत्थरों[12] को तरसते हैं हर ज़मां[13] ।
और जिन के हाथ काने[14]-जवाहर लगे मियां ॥
वह फिर इधर उधर के दुरों[15]-लाल क्या करे ।
गाहक ही कुछ न लेवे तो दल्लाल क्या करे ॥ २ ॥

---

1 बग़ल में. 2 कांटा चुभना. 3 वेष बदले 4 ग़ैर, अन्य पुरुषों की समाज. 5 अन्य, अपरिचित. 6 मुल्क और मकान. 7 तलवार और ढाल. 8 धन दौलत. 9 ईश्वर का पागल (खुद मस्त). 10 पद वैभव और मान, मर्तबा, इज़्ज़त, ओहदे. 11 हाजतमंद, दरिद्री. 12 जवाहरात, मोती. 13 हर समय. 14 जवाहरात की खान. 15 मोती और लाल

पाल: है जिन सवारों ने यां खर[1] को आशकार[2] ।
कुत्ते की पीठ पर नहीं चढ़ सकते ज़िनहार[3] ॥
और जो फलाँग मार के हो अर्श[4] पर सवार ।
वह फ़ीलो-अस्पे-ज़र्दो-सीयाह-लाल[5] क्या करे ॥
दीवाना शाहो हशमतो अजलाल क्या करे ।
गाहक ही न कुछ लेवे तो दल्लाल क्या करे ॥

[६९]

राग देश ताल तीन ।

गुम हुआ जो इश्क़ में, फिर उस को नंगो-नाम[6] क्या ।
दैर[7], क़ाबा से ग़र्ज़ क्या, कुफ़र क्या, इस्लाम क्या ॥ १ ॥
शेख जी जाते हैं मै-ख़ाना[8] से मुंह को फेर फेर ।
देखिये मसजिद में जाकर पायेंगे इनाम क्या ॥ २ ॥
मौलवी साहिब से पूछे तो कोई है जिस्म क्या ? ।
रूह क्या है, दम है क्या, आग़ाज़[9] क्या, अंजाम[10] क्या ॥ ३ ॥
दम को लय कर, सुम्मो-बुकमम[11], बेख़बर सा बैठ रहे ।
कूचाये-दिलदार[12] में वाइज़[13] से तुम को काम क्या ॥ ४ ॥
यार मेरा मुझ में है, मैं यार में हूं बिलइसर ।
वस्ल[14] को यहां दख़ल क्या और हिज्र[15] नाफ़र्जाम[16] क्या ॥ ५ ॥

---

१ गधा, गर्दभ. २ ज़ाहिरा, स्पष्ट ३ कदापि. ४ आकाश ५ हाथी ज़र्द लाल और सियाह घोड़ा. ६ शर्म, लज्जा. ७ मन्दिर. ८ शराब खाना. ९ शुरू, आदि. १० अन्त. ११ चुप चाप, गूंगा. १२ यार की गली अर्थात् साक्षात्कार के मार्ग में. १३ उपदेश १४ मिलाप इत्तफ़ाक़, दर्शन. १५ विरह, वियोग. १६ बद अमल.

तुझ में मैं और तुझ में तूं, आंखें मिलाकर देख ले।
और गर देखे न तू तो मुझ पै है इल्ज़ाम क्या ॥ ६ ॥
पुख़्ता[1]-मग़ज़ों के लिये है रहनुमा[2] मेरा सख़ुन[3]।
हाफ़िज़ा[4]! हासिल करेंगे इस से मर्द-ख़ाम[5] क्या ॥

[७०]

राग भैरवी ताल रूपक।

जो मस्त हैं अज़ल[6] के उन को शराब क्या है।
मक़बूल-ख़ातिरों[7] को बूये-कबाब[8] क्या है ॥ १ ॥
क्यों मुंह छुपाओ हम से, तक़सीर[9] क्या हमारी।
हर दम की हमनिशीनी[10], फिर यह हजाब[11] क्या है ॥ २ ॥
हो पास तुम हमारे, हम ढूंढते हैं किस को।
मुंह से उठा दिखाना, ज़ेरे-नक़ाब[12] क्या है ॥ ३ ॥

[७१]

ग़ज़ल।

जिन प्रेम रस चाख्या नहीं, अमृत पीया तो क्या हुआ।
जिन इश्क़ में सिर ना दिया, युग युग जीया तो क्या हुआ ॥ टेक ॥
मशहूर हुआ पंथ में साबित न किया आप को।
आलिम अरु फ़ाज़िल होय के, दाना हुआ तो क्या हुआ ॥१॥ जिन०

---

१ तीव्र बुद्धि वाले (बहुत समझ वाले.) २ नेता, लीडर, नायक. ३ उपदेश. ४ कवि का नाम. ५ कच्ची समझ वाले, कम अक़ल कमज़ोर दिल. ६ अनादि वस्तु में जो मस्त हैं (अपने स्वरूपकर के जो मस्त हैं) ७ दिल क़बूल (मंज़ूर) करने वालों को, दिल देने वालों को. ८ कबाब (विषयानन्द) की गन्ध. ९ अपराध, क़सूर. १० साथ रहना. ११ परदा. १२ परदे के नीचे.

औरों नसीहत है करे, और खुद अमल करता नहीं।
दिल का कुफर टूटा नहीं, हाजी[1] हुआ तो क्या हुआ ॥ २ ॥ जिन०
देखी गुलिस्तां बोस्तां, मतलब न पाया शेख का।
सारी किताबां याद कर, हाफिज़ हुआ तो क्या हुआ ॥ ३ ॥ जिन०
जब तक प्याला प्रेम का पी कर मग्न होता नहीं।
तार मंडल बाजते ज़ाहर सुना तो क्या हुआ ॥ ४ ॥ जिन०
जब प्रेम के दरियौ में गरक़ाब[2] यह होता नहीं।
गंगा यमुन गोदावरी नहाता फिरा, तो क्या हुआ ॥ ५ ॥ जिन०
प्रीतम से किंचित् प्रेम नहीं, प्रीतम पुकारत दिन गया।
मतलूब[3] हासिल न हुआ, रो रो मुआ तो क्या हुआ ॥ ६ ॥ जि०

[७२]

राग बरवा।

अब मैं अपने राम को रिझाऊं, वेद[4] भजन गुण गाऊं ॥ टेक
डाली छेडूं न पत्ता छेडूं, न कोई जीव सताऊं।
पात पात में प्रभु बसत हैं, वाहि को सीस[5] नवाऊं ॥ १ ॥ अब०
गंगा जाऊं न यमुना जाऊं, ना कोई तीरथ नहाऊं।
अठसठ तीरथ घट के भीतर, तिनहिं में मल मल नहाऊं ॥२॥ अब०
औषध खाऊं न बूटी लाऊं, ना कोई वैद्य बुलाऊं।
पूर्ण वैद्य मिले अविनाशी, वाहि को नब्ज़ दिखाऊं ॥ ३ ॥ अब०
ज्ञान कुठारा कस कर बांधूं, सुरत कमान चढाऊं।
पाँचो चोर बसें घट भीतर, तिन को मार गिराऊं ॥ ४ ॥ अब०

---

१ हज (तीर्थयात्रा) करने वाला. २ लीन ३ इच्छित वस्तु. ४ वेद. ५ सिर, मस्तक.

योगी होऊं न जटा बढाऊं, न अंग भभूति रमाऊं।
जो रंग रंगे आप विधाता, और क्या रंग चढाऊं ॥ ५ ॥ अब०
चांद सूरज दोऊ सम कर राखो, निज मन सेज बिछाऊं।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, आवागमन[1] मिटाऊं ॥ ६ ॥ अब०

[७२]

राग सिंधूः दुई ताल।

इश्क़[2] होवे तो हक़ीक़ी इश्क़ होना चाहिये।
इस सिवा जितने हैं आशिक़ उन पे रोना चाहिये ॥ १ ॥
ऐशो-इशरत[3] में गुज़ारा, रोज़ सारा गरचि तुम।
रात को प्रभु याद करके तब तो सोना चाहिये ॥ २ ॥
बीज बो कर फल उठाया ख़ूब तुमने है यहां।
आक़बत[4] के वास्ते भी कुछ तो बोना चाहिये ॥ ३ ॥
यहां तो सोये शौक़ से तुम बिस्तरे-कमख़्वाब पर।
सफ़र[5] भारी सिर पै है, वहां भी बिछौना चाहिये ॥ ४ ॥
है ग़नीमत' उमर यारो! जान को जानो अज़ीज़।
रायगां[6] और मुफ़्त में इस को न खोना चाहिये ॥ ५ ॥
गरचि दिलवर साथ है, बिन जुस्तजू[7] मिलता नहीं।
दूध से माखन जो चाहो, तो बिलोना चाहिये ॥ ६ ॥
यादे-हक़[8] दिन रात रख, जंजाल दुनिया छोड़ दे।
कुछ न कुछ तो लुत्फ़े-ख़ालिस[9] तुझ में होना चाहिये ॥ ७ ॥

---

१ आना जाना, मरना जीना. २ प्रेम, भक्ति. ३ विषयभोग विषयानन्द. ४ परलोक ५ पन्थ, चलन. ६ व्यर्थ, बे फ़ायदा. ७ जिज्ञासा, ढूंढना. ८ ईश्वर-स्मरण. ९ शुद्ध आनन्द, निजानन्द.

[७४]

ग़ज़ल।

प्रीत न की स्वरूप से तो क्या किया, कुच्छ भी नहीं। (टेक)
जान दिलबर को न दी, फिर क्या दिया, कुच्छ भी नहीं ॥ १ ॥ प्री०
मुल्क-गीरी[1] में सिकन्दर से हज़ारों मर मिटे।
अपने पर क़बज़ा न किया, क्या लिया कुच्छ भी नहीं ॥ २ ॥ प्री०
देवतों ने सोम रस पीया तो फिर भी क्या हुआ।
प्रेमरस गर न पीया तो क्या पीया, कुच्छ भी नहीं ॥ ३ ॥ प्री०
हिज्र[2] में दिलबर के हम जो उमर पाई खिज़र[3] की।
यार अपना न मिला, तो क्या जीया, कुच्छ भी नहीं ॥ ४ ॥ प्री०

[७५]

भजन ताल चंचल।

आऊंगा न जाऊंगा मरूंगा न जीयूंगा।
हरि के भजन प्याला प्रेम-रस पीयूंगा ॥ } टेक।

कोई जाये मक्के, कोई जावे काशी, देखो रे लोगो! दोहां गल-फांसी ॥ १ ॥ आऊंगा०
कोई फेरे माला, कोई फेरे तसबीह[4]! देखो रे साधो! यह दोनों हैं कसबी ॥ २ ॥ आऊंगा०
कोइ पूजे मढ़ियां, कोई पूजे गोरां[5]। देखो रे सन्तो! मैं लुट गयी जे चोरां ॥ ३ ॥ आऊंगा०

---

१ देश देशान्तरों का विजय करना. २ विरह, जुदायगी. ३ खिज़र एक मुसलमानों के हज़रत का नाम है जिस की आयु अनन्त कही जाती है. ४ जपनी, माला (जो मुसलमान भजन में वर्तते हैं). ५ क़बर.

कहत कबीर[1] सुनो मेरी लोई[2] । हम नहीं मरना, रोवे न कोई ॥ ४ ॥ आऊं गा६

[७६]

राग.खासा ।

खेडन दे दिन चार नी; वतन तुसाडे मुड़ नहीं ओ आना । टेक
चोला चुनड़ी सानुं मापियां दितड़ां ।
रूप दित्ता करतार नी ! वतन तुसाड़े० ॥ १
अम्बड़ भाली कत्तया लोड़े ।
भड़ पइय्यां पूनीयां, भठ पये गोढ़े ।
तकले दे वल्ल चार नी ! वतन तुसाड़े ॥ २

पंक्तिवार अर्थ ।

टेकः-मेरे संसार में खेलने के अब दो चार दिन हैं (क्योंकि मुझे ईश्वर का इश्क (प्रेम) लग गया है । इस वास्ते ऐ शारीरिक माता पिता ! तुम्हारे सांसारिक घर में मेरा अब आना वापिस नहीं होगा ।

(१) शारीरिक चोला (शरीर इत्यादि) तो माता पिता ने दिया, मगर असली रूप करतार ने दिया है (इस वास्ते मैं ईश्वर की हूं तुम्हारी नहीं) इसलिये टेक० ।

(२) शारीरिक माता यह चाहती है कि दुनिया रूपी व्यवहार में लगूं, मगर मेरे दिल रूपी तकले (कला) के चार बल पड़ गये हैं (क्योंकि ईश्वर के प्रेम में चित्त लग गया) इस वास्ते मैं कह रही हूं कि रूई का कातना, व रूई की पूनीयां अर्थात् (सांसारिक व्यवहार) तमाम भाड़ में पड़ें और मैं तुम्हारे घर में ही नहीं आने लगी ।

१ कवि का नाम है. २ कवि की स्त्री का नाम है.

अंवड़ मारे, बावल भिड़के।
मर गया बाबल, सड़ गयी अम्बड़।
टल गया सिर तीं भार नी ! वतन तुसाड़े ॥ ३ ॥
रल मिल सैय्यां खेडन चल्लीयां।
खेड खिडन्दरी नूं कंडा पुरया।
विसर गया घर बार नी ! वतन तुसाड़े० ॥ ४ ॥

[७७]

राग आसा।

करसां मैं सोई शृंगार नी, जिस विच पिया मेरे वश आवे। टेक

---

(३) माता मारती है और पिता भिड़कता है (कि कुछ सांसारिक काम करूं, मगर मेरे वास्ते इस प्रेम के कारण तो) सांसारिक माता सड़ गयी और बाप मर गया है और उन का दूर होना मैं सिर से भार टला समझती हूं इस वास्ते। टेक

(४) जब संसार के घर से बाहर निकल कर हम सब सहेलियां (सखियां) खेलने को जाने लगीं तो रास्ते में (प्रेम का) काँटा मुझे खेलते २ ऐसा चुभा कि घर बार दुनिया का सारा काम काज मुझे विसर (भूल) गया। इस वास्ते। टेक

पंक्तिवार अर्थ।

टेकः—अब मैं ऐसा शृंगार (अपने अन्दर को साफ) करूंगी कि जिससे मेरा पति (ईश्वर) मेरे वश में आजावे।

जिस भूषण विच होवे न दूखन, सोई मेरे दरकार नी ॥ जि० ॥ १
गजरयां वंगां तों हुन संगां, कच्चा कच उतार नी ॥ जि० ॥ २
नाम दा नामां, प्रेम दा धागा, पावां गल विच हार नी ॥ जि० ॥ ३
पावांगी लच्छे, मैं निर्लज्जे, झांजर पियादा प्यार नी ॥ जि० ॥ ४
सैह न सकदी मैं सौकन वैरण, झांजर दा छिंकार नी ॥ जि० ॥ ५

---

(१) जिस भूषण (अन्दरूनी सजावट) से कोई दुःख न उत्पन्न हो, वही शृंगार (ज़ेवर) मैं चाहती हूं और वही पैहनूंगी ताकि मेरा ईश्वर (पति) मेरे वश में आवे ।

(२) दुन्यावी वंगे (bracelets) कांच की जो स्त्री लोग पैहनती हैं उन को पैहनने में मुझे लज्जा आती है । इसलिये मैं इस कच्चे कांच को उतार कर (ऐसा कोई असली और सुदृढ़ भूषण पैहनती हूं) जिस से मेरा पति (ईश्वर) मेरे वश होजावे ।

(३) ईश्वर-नाम का तो नामरूप ज़ेवर मैं पैहनूंगी और उस भूषण में प्रेम रूपी धागा डालूंगी । ऐसा सुंदर हार बना कर मैं अपने गले में डालूंगी ताकि मेरा प्यारा (ईश्वर) मेरे वश में आ जाये ।

(४) पाओं में ऐसा लच्छे-रूप ज़ेवर जो मेरी शर्म उतार दे मैं पैहनूंगी कि जिस में पिया (प्यारे) के प्यार रूपी झांजरे हों ताकि मेरा पति (ईश्वर) मेरे वश में हो जाये ।

(५) मैं ही एक अकेली उस की प्यारी होना चाहती हूं, और उसकी दूसरी स्त्री (सौकन) देखना मैं स्वीकार नहीं कर सकती और न किसी दूसरी स्त्री (सौकन) के ज़ेवर इत्यादि झांजरों की झिंकार सुनना सहन कर सकती हूं । ताकि पिया का मेरे पर ही प्यार हो और मेरे वश में ही आया हुआ हो ।

[७८]

राग पीलू ताल दीपचंदी।

ग़लत है कि दीदार[1] की आर्ज़ू[2] है।
ग़लत है कि मुझ को तेरी जुस्तजू[3] है॥
तिरा जल्वा[4] ऐ जल्वागर[5]! कु बकू[6] है॥
हुज़ूरी है हर वक़्त तू रूबरू है।
जिधर देखता हूं, उधर तू ही तू है॥ १ ॥ टेक

हर इक गुल में बू हो के तू ही बसा है।
सदाहाये[7] बुलबुल में तेरी नवा[8] है॥
चमन फ़ैज़े-क़ुदरत[9] से तेरे हरा है।
बहारे-गुलिस्तां[10] में जल्वा तेरा है॥ २ ॥ जि०

नबातात[11] में तू नमू[12] है शजर[13] की।
जमादात[14] में आबरू[15] बेहरो-बर[16] की॥
तू हैवां[17] में ताक़त है सैरो-सफ़र[18] की।
तू इन्सां में कुव्वत है नुत्क़ो-नज़र[19] की॥ ३ ॥ जि०

घटा तू ही उठता है घघोर हो कर।
छुपा तू ही है बेहर में शोर हो कर॥
निहां[20] तू हि तूफ़ां में है ज़ोर हो कर।
अयां[21] तू हि मौजों[22] में झकझोर हो कर॥ ४ ॥ जि०

---

१ दर्शन २ इच्छा ३ जिज्ञासा, खोज. ४ प्रकाश तेज. ५ प्रकाशमान ६ हर दिशा में, हर गली में. ७ आवाज़ें ८ गीत, सुर. ९ प्रकृति या माया की कृपा से. १० बाग़ की बहार में. ११ वनस्पति. १२ दृश्य सौंदर्यता. १३ वृक्ष, झाड़. १४ जड़ पत्थर, धातु. १५ चमक दमक. १६ पृथिवी और समुद्र. १७ पशुओं. १८ चलने फिरने. १९ बुद्धि और ध्यान चक्षु. २० छुपा हुआ. २१ ज़ाहिर, व्यक्त. २२ लहरों.

तेरी है सदा[1] रअद[2] में गर कड़क है।
तेरी है ज़िया[3] बर्क़[4] में गर चमक है॥
यह क़ौसे-क़ुज़ह[5] ही में तेरी झलक है।
जवाहर के रंगों में तेरी डलक[6] है॥ ५॥ ज़ि०

ज़मीं आस्मां तुझ से मामूर[7] हैं सब।
ज़मानो-मकां[8] तुझ से भरपूर हैं सब॥
तजल्ली[9] से कूनो-मकां[10] नूर हैं सब।
निगाहों में मेरी जहान तूर[11] हैं सब॥ ६॥ ज़ि०

हसीनों[12] में तू हुस्नो-नाज़ो-अदा[13] है।
तू उश्शाक़[14] में इश्क़ो-सद्क़ो-सफ़ा[15] है॥
मिजाज़ो[16]-हक़ीक़त में जल्वा तेरा है॥
जहां जाइये एक तू रूनुमा[17] है॥ ७॥ ज़ि०

मकां तेरा हर एक पे लामकां[18]! है।
निशां हर जगह तेरा पे बे निशां! है॥
न ख़ाली ज़िमां है न ख़ाली ज़मां[19] है।
कहीं तू निहां[20] है कहीं तू अयां[21] है॥ ८॥ ज़ि०

तेरा ला मकान् नाम ज़ेबा[22] नहीं है।
मकां कौन सा है तू जिस जा[23] नहीं है॥

---

१ आवाज़. २ बिजली की गर्ज. ३ रोशनी. ४ बिजली. ५ इन्द्र धनुष. ६ तेज, चमक ७ भरपूर. ८ देश, काल. ९ प्रकाश तेज. १० सब स्थान. ११ अग्नि के पर्वत से अभिप्राय है. १२ सुन्दर पुरुष. १३ सौन्दर्यता और नखरा, हाव भाव. १४ भक्त जन १५ भक्ति व अर्पण न्योछावर होना. १६ लौकिक और पारमार्थिक प्रेम., १७ सामने हाज़िर. १८ देश रहित. १९ काल. २० छिपा हुआ. २१ प्रकट, प्रगट. २२ युक्त, उचित २३ जगह, स्थान.

कहीं मास्वा[1] मैं ने देखा नहीं है।
मुझे ग़ैर[1] का वैह्म होता नहीं है॥ ९॥ जि०
ज़मीन्-ओ ज़मां नूर से हैं मुनव्वर[3]।
मकीन्-ओ-मकां ज़ात के तेरे मज़हर[4]॥
जहां में दिले-रास्तां[5] है तिरा घर।
इधर और उधर से मैं इस घर में आकर॥ १०॥ जि०

आत्म-ज्ञान

[७९]

परज ताल चलन्त

दरिया से हुबाब[6] की है यह सदा[7]। } टेक
तुम और नहीं हम और नहीं॥ }

मुझ को न समझ अपने से जुदा।
तुम और नहीं हम और नहीं।
जब गुञ्चा[8] चमन[9] में सुबह[10] को खिला।
झट कान में गुल के कहने लगा॥
हाँ आज यह उक़्दा[11] है हम पै खुला।
तुम और नहीं हम और नहीं॥
आईना[12] मुकाबले-रुख़[13] जो रक्खा।
झट बोल उट्ठा यूं अक्स[14] उस का॥

---

१ तेरे सिवाय दूसरा. २ ग्रन्थ. ३ प्रकाशमान. ४ तुझे ज़ाहिर करने वाले. ५ सब पुरुषों का दिल ६ बुलबुला. ७ आवाज़. ८ पुष्प कली ९ बाग १० प्रातः ११ भेद या गुप्त रहस्य. १२ शीशा, दर्पण १३ मुख के सामने. १४ प्रतिबिम्ब,

क्यों देख के हैरान यार हुआ ।
तुम और नहीं हम और नहीं ॥
दाने ने भला खिरमन[1] से कहा ।
चुप रह इस जा[2] नहीं चूनो-चरा[3] ॥
वहदत[4] की झलक कसरत[5] में दिखा ।
तुम और नहीं हम और नहीं ॥
नासूत[6] में आ के यही देखा ।
है मेरी ही ज़ात[7] से नश्वो-नुमा[8] ॥
जैसे पम्बा[9] से तार का हो रिश्ता[10] ।
तुम और नहीं हम और नहीं ॥
तू क्यों समझा मुझे ग़ैर[11] बता ।
अपना रूखे-ज़ेबा[12] न हम से छिपा ॥
चिक पर्दा उठा, टुक सामने आ ।
तुम और नहीं हम और नहीं ॥

[८०]

भैरवी ताल तीन ।

है दैरो-हरम[13] में वह जल्वा[14] कुनाँ ।
पर अपना तो रखता वह घर ही नहीं ॥

---

१ दानों का ढेर. २ जगह, स्थान. ३ क्यों, और क्या. ४ एकत्व. ५ नानत्व. ६ जाग्रत अवस्था. ७ स्वरूप, निजात्मा. ८ पालना पोसना या फलना फूलना. ९ रुई का गुच्छा. १० सम्बन्ध. ११ अन्य. १२ सुन्दर मुख. १३ मन्दिर और मसजिद. १४ प्रकाशमान, शोभायमान.

मैं देखूं हूं सब के है सिर पै वही ।
पर अपना तो रखता वह सिर ही नहीं ॥
यह सितम[1] है कि उसके हैं चश्म[2] कहाँ? ।
पर ऐसी किसी की नज़र[3] ही नहीं ॥
है नूर[4] का उसके ज़हूर[5] खिला ।
पर है वह कहाँ यह खबर ही नहीं ॥
कोई लाख तरह से भी मारे मुझे ।
पर मेरा तो कटता यह सिर ही नहीं ॥
वह मकाँ[6] है मेरा तन्हाई[7] में यां ।
शम्सो-क़ुमर[8] का गुज़र ही नहीं ॥
न तो आबो-हवा[9] न है आतिश[10] यहाँ ।
कोई मेरे सिवा तो बशर[11] ही नहीं ॥
दरे दिल[12] को हिला, कर दर्शन आ ।
कहीं करना तो पड़ता सफ़र ही नहीं ॥
जिस के क़ब्ज़े में है गञ्ज-वहदत[13] का ।
कोई उस से तो दौलतवर[14] ही नहीं ॥

[८१]

ग़ज़ल राग तिलंग चंघोड़ा ।

अगर है शौक़ मिलने का अपस[15] की रमज़[16] पाता जा ।
जला कर खुद-नुमाई[17] को भसम तन पै लगाता जा ॥ टेक

१ ज़ुल्म, अनीति, अन्याय. २ नेत्र. ३ दृष्टि. ४ तेज, प्रकाश. ५ प्रकाशमान, कान्तिमान. ६ स्थान, जगह. ७ एकान्त. ८ सूर्य और चन्द्र. ९ जल और वायु. १० अग्नि. ११ जीव. १२ हृदय या दिल के द्वार. १३ एकता का भण्डार, कोष १४ धनी. १५ अपने आप की. १६ भेद, कुंजी, १७ अहंकार.

पकड़ कर इश्क़ का झाड़ू सफा कर दिल के हुजरे[1] को ।
दूई[2] की धूल को ले के मुसल्ले[3] पर उड़ाता जा ॥ १ ॥
मुसल्ला फाड़, तसबीह[4] तोड़, किताबें डाल पानी में ।
पकड़ कर दस्त[5] मस्तों का निजानन्द को तू पाता जा ॥ २ अ०
न जा मसजिद, न कर सिजदा[6] न रख रोज़ा न मर भूखा ।
वुज़ू का फोड़ दे कूज़ा[7], शराबे-शौक़[8] पीता जा ॥ ३ ॥ अ०
हमेशा खा, हमेशा पी, न ग़फ़लत से रहो इक दम ।
असल तू खुद खुदा होके, खुदा खुद हो के रहता जा ॥ ४ ॥ अ०
न हो मुल्ला, न हो क़ाज़ी, न खिलक़ा[9] पैहन शेखों का ।
नशे में सैर कर अपनी, खुदी को तू जलाता जा ॥ ५ ॥ अ०
कहे मनसूर सुन क़ाज़ी, निवाला[10] कुफ़र का मत पी ।
अन-लहक़[11] कहो सबूती[12] से तू यही कलमा पकाता जा ॥६॥ अ०

[८२]

अब मोहे फिर फिर आवत हाँसी ॥ टेक
सुख स्वरूप होय, सुख को ढूंढे, जल में मीन[13] प्यासी ॥१॥ अ०
सभी तो हैं आतम चेतन, अज[14] अखंड[15] अविनाशी[16] ॥२॥ अ०
करत नहीं निश्चय स्वरूप का, भाजत मथुरा काशी ॥३॥ अ०
क्षणभंगुरता[17] देख जगत की, फिर भी धारत उदासी ॥४॥ अ०
निरभय राम[18], राम कृपा से, काटी लख चौरासी ॥५॥ अ०

---

१ कोठरी. २ मुँह. ३ निमाज़ पढ़ने निमित्त जो कपड़ा आगे बिछाया जाता है. ४ माला जाप करने की. ५ हाथ. ६ बन्दगी, पूजा. ७ पूजा या निमाज़ के समय मुंह धोने का फ़र्ज़. ८ ईश्वर जिज्ञासा की मद (शराब). ९ चोगा, लम्बा कोट शेखोंवाला. १० घूंट, ग्रास. ११ मैं खुदा हूं, अहं ब्रह्मास्मि. १२ पक्के दिल से. १३ मछली १४ जन्म रहित. १५ टुकड़ों रहित. १६ नाश रहित. १७ क्षण में नाश होने वाली वस्तु. १८ भय रहित, कवि का भी नाम है.

[८२]

राग धनाश्री ताल दादरा ।

जिस को, हैं कहते खुदा हम ही तो हैं ।
मालके-अर्ज़-ओ-समा[1] हम ही तो हैं ॥ १ ॥
ताल्बाने[2]-हक़ जिसे हैं ढूंढते ।
अर्श[3] पर वह दिलरुबा[4] हम ही तो हैं ॥ २ ॥
तूर[5] को सुरमा किया इक आन[6] में ।
नूर[7] मूसा को दिया हम ही तो हैं ॥ ३ ॥
तिश्ना-ए-दीदारे-लब[8] के वास्ते ।
चश्मा-ए-आबे-बक़ा[9] हम ही तो हैं ॥ ४ ॥
नार[10] में, माह[11] में, क़ौकब[12] में सदा ।
मिहर[13] में जल्वानुमा[14] हम ही तो हैं ॥ ५ ॥
बोस्ताने[15]-नूर से बैहरे-ख़लील[16] ।
नार को गुलशन[17] किया हम ही तो हैं ॥ ६ ॥
नूह[18] की किश्ती को तूफ़ां से बचा ।
पार बेड़ा कर दिया हम ही तो हैं ॥ ७ ॥

---

१ पृथिवी और आकाश के स्वामी. २ सचाई के जिज्ञासु (चाहने वाले). ३ आकाश. ४ माशूक़, प्यारा. ५ पहाड़ का नाम है. ६ घड़ी. ७ प्रकाश (अर्थात जिन ने हज़रत मूसा को पहाड़ तूर पर दर्शन दिये वह हम ही हैं). ८ दर्शन के प्यासों की प्यास बुझाने के वास्ते. ९ अमृत की धारा. १० अग्नि. ११ चांद. १२ सितारे. १३ सूर्य. १४ प्रकट, भासमान १५ प्रकाशस्वरूप के बाग से १६ सच्चे आशिक़ के वास्ते. १७ बाग़ अर्थात (जिस प्यारे ने आग को बाग में बदल दिया वह हम ही तो हैं) १८ पैग़म्बर का नाम.

मर्दो-जन[1], पीरो-जवां[2], वैहशो-त्यूर[3] ।
औलिया[4]-ओ अंबिया[5] हम ही तो हैं ॥ ८ ॥
खाको-बादो-आबो-आतिश और खला[6] ।
जुमला मा दर[7] जुमला मा[8], हम ही तो हैं ॥ ९ ॥
उक़द-ए-वहदत-पसन्दों[9] के लिये ।
नाख़ुने-मुश्किल-कुशा[10] हम ही तो हैं ॥ १० ॥
कौन किस को सिर झुकाता अपने आप ।
जो झुका, जिसको झुका, हम ही तो हैं ॥ ११ ॥

[८४]

राग पर्ज ताल केरवा ।

ख़ुदाई कहता है जिस को आलम[11] ।
सो यह भी है इक ख़्याल मेरा ॥ १ ॥
बदलना सूरत हर एक ढब[12] से ।
हर एक दम में है हाल मेरा ॥ २ ॥
कहीं हूं ज़ाहिर, कहीं हूं मज़हर[13] ।
कहीं हूं दीद[14], और कहीं हूं हैरत[15] ॥ ३ ॥
नज़र है मेरी, नसीब मुझ को ।
हुआ है मिलना मुहाल[16] मेरा ॥ ४ ॥

---

१ स्त्री, पुरुष. २ बूढ़ा जवान. ३ पशु और पक्षी. ४ अवतार. ५ नबी. ६ पृथिवी, वायु, जल, अग्नि और आकाश, ७ सब मुझ में (हम में). ८ और सब हम. ९ अद्वैत के मसलों (विचार) को पसन्द करने वालों के लिये. १० मुश्किल हल करने वाले साधन. ११ जहान, संसार १२ तरीका. १३ दृश्य की खान, विम्ब. १४ दृष्टि १५ आश्चर्य. १६ कठिन

तिलिस्मे[1]-इसरारे-गंजे-मख़फ़ी[2] ।
कहूं न सीने[3] को अपने क्योंकर ॥ ५ ॥

अयां[4] हुआ हाले-हर दो आलम[5] ।
हुआ जो ज़ाहिर कमाल मेरा ॥ ६ ॥

अरस्तू[6] कालू बला की रमज़ें[7] ।
न पूछ मुझ से बतन[8] तू हरगिज़ ॥ ७ ॥

हूं आप मशगूल[9], आप शाग़िल[10] ।
जवाब खुद है, सवाल मेरा ॥ ८ ॥

[८५]

राग झंझोटी ताल दादरा ।

मैं न बन्दा, न खुदा था, मुझे मालूम न था ।
दोनों इल्लत[11] से जुदा था, मुझे मालूम न था ॥ १ ॥

पंक्तिवार अर्थ ।

(१) यह मुझे मालूम नहीं था कि मैं न जीव हूं न ईश्वर हूं, और न मुझे यह मालूम था कि मैं इन दोनों उपाधियों से परे हूं ।

---

१ जादू. २ गुप्त भण्डार के भेदों का जादू. ३ दिल. ४ ज़ाहिर, खुला. ५ दोनों लोकों का हाल. ६ सुक़रात (Socrates) अफ़लातून के नाम, ७ गुप्त उपदेश, इशारे. ८ कवि की उपाधि. ९ मशगूल. १० प्रेरक वा काम में लगाने वाला. ११ कारण (यहां उक्त उपाधियों से अभिप्राय है).

शक्ले-हैरत हुईं, आयिना-ए-दिल[1] से पैदा ।
मानीये-शाने-सफ़ा[2] था, मुझे मालूम न था ॥ २ ॥
देखता था मैं जिसे हो के नदीदा[3] हर सू ।
मेरी आंखों में छुपा था मुझे मालूम न था ॥ ३ ॥
आप ही आप हूं यहां तालिबो-मतलूब[4] है कौन ।
मैं जो आशिक़[5] हूं कहा था, मुझे मालूम न था ॥ ४ ॥
वजह मालूम हुई तुझ से न मिलने की सनम[6] ।
मैं ही खुद पर्दा बना था, मुझे मालूम न था ॥ ५ ॥

---

(२) दिल में (शीशारूपी अन्तःकरण में) आश्चर्यजनक सूरतें प्रकट हुईं मगर यह मुझे मालूम न था कि इन स्पष्ट गुणों या रूपों का असली कारण या बिम्ब मैं ही हूं ।

(३) जिस को मैं अव्यक्त या अप्रगट देखता था वह मेरी आँखों में छिपा हुआ है यह मुझे मालूम न था ।

(४) सब कुछ मैं आप ही आप हूं, जिज्ञासु और इच्छित पदार्थ मेरे बिना कोई नहीं, मैंने जो कहा था कि मैं आशिक अर्थात् इस पर आसक्त हूं, यह मुझे मालूम न था ।

(५) ऐ प्यारे ! तुझ से न मिलने का कारण मालूम हुआ तो पता लगा कि मैं ही स्वयं (इसमें) पर्दा बना हुआ था, पर यह मुझे मालूम न था ।

---

१ दिल के शीशे. २ शुद्ध गुणों का वास्तव स्वरूप अथवा प्रतिबिम्ब का असली बिम्ब. ३ अप्रकट, छिपा हुआ. ४ जिज्ञासु और इच्छित पदार्थ. ५ आसक्त, प्यारा. ६ ऐ प्यारे !

बाद मुद्दत[1] जो हुआ वस्ल[2], खुला राज़े-वतन[3] ।
वासते[4]-हक़ मैं सदा था, मुझे मालूम न था ॥ ६ ॥

[८६]

राग काफ़ी ताल ग़ज़ल ।

मुझ को देखो ! मैं क्या हूं, तन तन्हा[5] आया हूं ।
मतला-ए-नूरे-खुदा[6] हूं, तन तन्हा आया हूं ॥ १ ॥
मुझ को आशिक़ कहो, माशूक़[7] कहो, इश्क़ कहो ।
जा-बजा जल्वानुमा[8] हूं तन तन्हा आया हूं ॥ २ ॥
मैं ही मस्जूदे[9] मलायक हूं बशक्ले[10] आदम ।
मज़हरे-खास[11] खुदा हूं, तन तन्हा आया हूं ॥ ३ ॥
लामकाँ[12] अपना मकाँ है, सौ तमाशा के लिये ।
मैं तो पर्दे में छुपा हूं, तन तन्हा आया हूं ॥ ४ ॥
हूं भी, हां भी अनलहक़[13], है यह भी मन्ज़िल अपनी ।
शम्से-इर्फां[14] की ज़िया[15] हूं, तन तन्हा आया हूं ॥ ५ ॥

---

(६) चिरकाल पश्चात् जब दर्शन हुए अर्थात् साक्षात्कार हुआ अपने घर का भेद खुल गया (वह यह) 'कि सत्य स्वरूप को मैं सदैव प्राप्त हुए २ था पर मुझे मालूम न था ।

---

१ काल, २ मेल; मुलाक़ात, ३ भेद, घुंडी, ४ सत् का पाने वाला वा सत् को पाये हुये, ५ अकेला ६ ईश्वर के प्रकाश के प्रकट होने का स्थान (ज्ञान) ७ प्रिया, ८ ज़ाहर, प्रगट, ९ मैं देवताओं का पूजनीय हूं, अर्थात् देवतागण मेरी उपासना करते हैं, १० पुरुष के रूप में, ११ स्वयं ईश्वर के प्रगट होने का स्थान, १२ देश रहित, १३ अहम् ब्रह्मास्मि, "मैं ईश्वर (ब्रह्म) हूं", १४ ज्ञान रूपी सूर्य का प्रकाश, १५ प्रकाश,

जिस को ढूंढूं, किसे पाऊं मैं—बताओ साहिब।
आप ही आप में छुपा हूं तनतन्हा आया हूं ॥ ६ ॥

[८७]

राग तिलंग केरवा ताल।

मैं हूं वह ज़ात नापैदा[1], किनारो-मुत्लक़ो-बेहद[2]।
कि जिस के समझने में अक़्ले कुल[3] भी तिफ़्ले-नादां[4] है ॥१॥
कोई मुझ को खुदा माने, कोई भगवान माने है।
मेरी हर सिफ़्त बनती है, मेरा हर नाम शायां[5] है ॥ २ ॥
कोई बुत खाना[6] में पूजे, हरम[7] में, कोई गिर्जा[8] में।
मुझे बुतख़ाना-ओ-मसज़िद कलीसा[8] तीनों यकसां है ॥ ३ ॥
कोई सूरत मुझे माने, कोई मुतलक़ पहचाने है।
कोई ख़ालिक़[9] पुकारे है, कोई कहता यह इन्सां है ॥ ४ ॥
मेरी हस्ती में यकताई[10] दूई हरगिज़ नहीं बनती।
सिवा मेरे न था होगा न है यह रमज़े-इर्फ़ां[11] है ॥ ५ ॥

[८८]

राग बिधोरा ताल दीपचंदी।

न दुश्मन है कोई अपना न साजन[12] ही हमारे हैं। } टेक
हमारी ज़ाते-मुत्लक़[13] से हुए यह सब पसारे हैं ॥१॥ }

---

१ न उत्पन्न होने वाली वस्तु. २ बिलकुल अनंत. ३ समष्टि बुद्धि. ४ नादान बच्चा. ५ प्रकट, प्रकाशित. ६ मन्दिर. ७ काबा (मसजिद) ८ गिर्जाघर. ९ सृष्टि कर्ता. १० अद्वैत. ११ ज्ञान का गुप्त भेद. १२ मित्र, १३ आत्मा, शुद्ध स्वरूप.

न हम हैं देह मन बुद्धि, नहीं हम जीव नै[1] ईश्वर ।
वले[2] इक कुन[3] हमारी से बने-यह रूप सारे हैं ॥ २ ॥
हमारी ज़ात-नूरानी[4], रहे इक हाल पर दायम[5] ।
कि जिस की चमक से चमके यह मिहरो-माह[6]-सितारे हैं ॥ ३ ॥
हर इक हस्ती[7] की है हस्ती[8] हमारी ज़ात पर क़ायम ।
हमारी नज़र पड़ने से नज़र आते नज़ारे[9] हैं ॥ ४ ॥
बरंगे-मुख़्तलिफ नामो-शकल[10] जो दमक[11] मारे हैं ।
हमारे नूर[12] के शोले[13] से उठते यह शरारे[14] हैं ॥ ५ ॥

[८६]

राग बंगला ताल धुमाली ।

बाग़े-जहां[15] के गुल[16] हैं, या ख़ार[17] हैं तो हम हैं ।
गर यार हैं तो हम हैं, अग़यार[18] हैं तो हम हैं ॥१॥ } टेक
दरिया-ए-मार्फ़त[19] के देखा, तो हम हैं साहिल[20] ।
गर वार हैं तो हम हैं, गर पार हैं तो हम हैं ॥ २ ॥
वाबस्ता[21] है हमीं से, गर जबर[22] है वगर क़ुदर[23] ।
मजबूर हैं तो हम हैं, मुख़तार हैं तो हम हैं ॥ ३ ॥

---

१ नहीं. २ किन्तु. ३ आज्ञा, हुक्म, संकेत ४ प्रकाश स्वरूप आत्मा. ५ नित्य. ६ सूर्य और चाँद ७ वस्तु ८ वस्तुपना, अस्तित्व, जान. ९ नाना प्रकार के दृश्य पदार्थ. १० नाना प्रकार के नाम और रूप. ११ चमके हैं. १२ अपने स्वरूप (आत्मा) के अग्नि रूपी पर्वत की. १३ लाट. १४ अंगारे. १५ संसाररूपी बाग़ के. १६ फूल. १७ काँटा. १८ शत्रु. १९ आत्मज्ञान का दरिया (समुद्र). २० तट (किनारा). २१ बन्धा हुआ है, संबंध रखता है. २२ ज़बरदस्ती. २३ और इख़्तियार, ताक़त, बल.

मेरा ही हुस्न[1] जग में, हर चंद मौजज़न[2] है।
तिस पर भी तेरे तिश्ना-ए[3]-दीदार हैं तो हम हैं ॥ ४ ॥
फैला के दामे-उलफत[4] घिरते घिराते[5] हम हैं।
गर सैद[6] हैं तो हम हैं, सय्याद[7] हैं तो हम हैं ॥ ५ ॥
अपना ही देखते हैं, हम बन्दोबस्त यारो।
गर दाद[8] हैं तो हम हैं, फर्याद हैं तो हम हैं ॥ ६ ॥

[६०]

भैरवी ग़ज़ल।

दिल को जब ग़ैर[9] से सफा देखा।
आप को अपना दिलरुबा[10] देखा ॥ १ ॥ } टेक
पी लिया जाम[11] बादा-ए-वहदत[12]।
ख्वेशो-बेगाना[13] आशना[14] देखा ॥ २ ॥
जिस ने है ज़ात अपनी को जाना।
आप को हक़[15] से कब जुदा देखा ॥ ३ ॥
रमज़े-रहबर[16] को अपने जब समझा।
न कोई ग़ैर[17] व-मासिवा देखा ॥ ४ ॥
करके बाज़ार गर्म कसरत[18] का।
आप को अपने में छुपा देखा ॥ ५ ॥

---

१ सौन्दर्य. २ लेहरें मार रहा है. ३ दर्शन के प्यासे ४ मोह जाल. ५ फँसते फँसाते. ६ शिकार. ७ शिकारी. ८ न्याय या न्यायालय. ९ दूसरे से, १० माशूक़ (प्यारा). ११ प्याला. १२ अद्वैत रूपी मद [शराब] का. १३ अपना और दूसरा. १४ मित्र. १५ सत्य स्वरूप. १६ गुरु के उपदेश. १७ अपने से अलग कोई न देखा. १८ नानत्व,

ग़र का इस्म[1] गर्चि है मशहूर ।
न निशां उस का, न पता देखा ॥ ६ ॥
जब से दर्शन है राम का पाया ।
ऐ राम ! क्या कहूं कि क्या देखा ॥ ७ ॥

[६१]

भैरवी ग़ज़ल ।

यार को हम ने जा बजा[2] देखा ।
कहीं बन्दा कहीं खुदा देखा ॥ १ ॥
सूरते-गुल[3] में खिलखिला के हँसा ।
शक्ले-बुलबुल[4] में चैहचहा देखा ॥ २ ॥
कहीं है बादशाहे-तख्ते-निशीं[5] ।
कहीं कासा[6] लिये गदा[7] देखा ॥ ३ ॥
कहीं आबद[8] बना, कहीं ज़ाहिद[9] ।
कहीं रिंदो[10] का पेशवा[11] देखा ॥ ४ ॥
करके दावा कहीं अनलहक़[12] का ।
बर सरे-दार[13] वह खिंचा देखा ॥ ५ ॥
देखता आप है, सुने है आप ।
न कोई उस के मासिवा[14] देखा ॥ ६ ॥
बल्कि यह बोलना भी तकल्लुफ़[15] है ।
हम ने उस को सुना है या देखा ॥ ७ ॥

---

१ नाम. २ हर जगह. ३ पुष्प के रूप में. ४ बुलबुल के रूप में. ५ सिंहासन पर बैठा हुआ महाराजा. ६ भिक्षा का प्याला, खप्पर ७ भिक्षु, फकीर ८ पूजा पाठी, कर्मकाण्डी. ९ विरक्त. १० बदमाश, शराबी. ११ नेता, सरदार. १२ मैं खुदा हूं (शिवोऽहं). १३ सूली के सिरे पर. १४ अन्य, दूसरा. १५ ज़्यादा, यूं ही है.

[९२]

राग भैरवी ताल तीन ।

दिया अपनी खुदी[1] को जो हम ने उठा ।

वह जो परदा सा बीच में था न रहा ॥ १ ॥

रहे परदे में अब न वह परदा-निशीं[2] ।

कोई दूसरा उस के सिवा न रहा ॥ २ ॥

न थी हाल की जब हमें अपनी ख़बर ।

रहे देखते औरों के ऐबो-हुनर[3] ॥ ३ ॥

पड़ी अपनी बुराईयों पर जो नज़र ।

तो निगह[4] में कोई बुरा न रहा ॥ ४ ॥

ज़फ़र[5] आदमी उस को न जानियेगा ।

गो[6] हो कैसा ही साहिबे-फ़ह्मो-ज़का[7] ॥ ५ ॥

जिसे ऐश[8] में यादे-खुदा न रही ।

जिसे तैश[9] में खौफ़े-खुदा[10] न रहा ॥ ६ ॥

---

१ अहंकार. २ छुपकर परदे में बैठनेवाला या परदा ओढ़े हुए. ३ गुण दोष. ४ दृष्टि. ५ कवि का नाम. ६ चाहे, यद्यपि. ७ समझदार, तीव्र बुद्धि और विचार वाला. ८ विषयानन्द, भोग विलास. ९ क्रोध, गुस्सा. १० ईश्वर का भय.

[६३]

राग शंकराभरण ताल दादरा।

की करदा नी ! की करदा, तुसी पुछोखां दिलबर की करदा (टेक)
इकसे घर विच वसदयां रसदयां, नहीं हुँदा विच परदा। की करदा० ॥१॥
विच मसीत नमाज़ गुज़ारे, बुतखाने जा वड़दा। की करदा० ॥२॥
आप इक्को, कई लाख घर अन्दर मालिक हर घर घर दा। की करदा० ॥३॥
मैं जितवल देखां, उतवल ओही, हर इक दी संगत करदा। की करदा० ॥४॥

पंक्तिवार अर्थ।

(१) एक ही घर में रहते हुए पर्दा नहीं हुआ करता मगर मेरा स्वरूप मेरे दिल रूपी घर में रहते हुए पर्दे में छुपा हुआ है इसलिये ऐ लोगो ! तुम इस दिलबर (प्यारे आत्मा) को पूछो कि तू यह क्या लुक्कन छिपन खेल कर रहा है।

(२) कहीं तो मसजिद में छुप कर बैठा रहता है और उस के आगे नमाज़ होती है, और कहीं मन्दिरों में दाखिल हुआ है जहां उस की पूजा हो रही है; इस लिये ऐ लोगो ! दिलबर को पूछो कि तू क्या कर रहा है।

(३) आप स्वयं तो एक अद्वितीय है मगर लाखों घरों (दिलों) के अन्दर प्रविष्ट हुआ २ हर एक घर का स्वामी बना हुआ है, इस लिए ऐ लोगो ! तुम दर्याफ़त करो कि यह दिलबर (प्यारा) क्या कर रहा है।

(४) जिधर मैं देखता हूं उधर दिलबर ही नज़र आता है और हर एक के साथ वही (मिला बैठा) नज़र आता है। इसलिये ऐ लोगो ! आप दर्याफ़त करो कि दिलबर (ईश्वर) यह क्या कर रहा है।

मूसा ते फरऔन बना के, दो हो के क्यों लड़दा। की करदा० ॥ ५ ॥

[९४]

बिना ज्ञान जीव कोई मुक्ति नहीं पावे ॥ (टेक)
चाहे धारि माला चाहे बान्ध मृग छाला ।
चाहे तिलक छाप चाहे भस्म तू रमावे ॥ १ ॥ बिना०
चाहे रच के मन्दिर मठ, पत्थरों के लावे ठठ ।
चाहे जड़ पदार्थों को सीस नित्य नवावे ॥ २ ॥ बिना०
चाहे बजा गाल चाहे शंख और बजा घड़ियाल ।
चाहे ढप चाहे डौंरू झाँझ तू बजावे ॥ ३ ॥ बिना ज्ञान०
चाहे फिरे तू गया[1] प्रयाग, काशी में जा प्राण त्याग ।
चाहे गंगा यमुना चाहे सागर[2] में नहावे । ४ ॥ बिना ज्ञान०
द्वारका अरु रामेश्वर, बद्रीनाथ पर्वत पर ।
चाहे जगन्नाथ में तू झूठो भात खावे ॥ ५ ॥ बिना ज्ञान०
चाहे जटा सीस बढ़ा, जोगी हो, चाहे कान फड़ा ।
चाहे यह पाखंड रूप लाख तू बनावे ॥ ६ ॥ बिना ज्ञान०
ज्ञानियों का कर ले संग, मूर्खों की तज दे भंग ।
फिर तुझे ठीक मुक्ति का साधन आवे ॥ बिना ज्ञान०

---

(५) मुसलमानों में हज़रत मूसा और हज़रत फरौन हुये हैं जिन में खूब झगड़ा हुआ था, इन दोनों को बनाकर या इस तरह से आप ही दो रूप होकर यह दिलवर क्यों लड़ता और लड़ाता है। इस लिये ऐ लोगो ! आप दर्याफ्त करो कि यह दिलवर क्या करता है।

---

१ तीर्थों के नाम हैं, २ गंगा सागर.

[६५]

मक्के गया गल्ल[1] मुक़दी नाहीं, जे[2] न मनो मुकाईये[3] ।
गंगा गयां कुच्छ ज्ञान न आवे, भावें[4] सौ सौ डुब्बे लाईये ।
गया[5] गयां कुच्छ गति न होवे, भावें लख लख पिंड बटपाईये ।
प्रयाग गयां शान्ति न आवे, भावें वैह वैह मूड मुंडाईये[3] ।
दयाल दास जैड़ी[6] वस्तु अन्दर होवे, ओहनू[7] वाहर क्यों ।
कर पाईये ॥ १ ॥

[६६]

ज्ञानी की उदारता औ बेपरवाही ।

राग पीलू ताल दीपचंदी ।

न है कुच्छ तमन्ना[8] न कुच्छ जुस्तजू[9] है ।
कि वहदत[10] में साक़ी[11] न साग़र[12] न बू है ॥ १ ॥
मिलीं दिल को आंखें जभी मार्फ़त[13] की ।
जिधर देखता हूं सनम[14] रूबरू[15] है ॥ २ ॥
गुलिस्ताँ[16] में जा कर हर इक गुल[17] को देखा ।
तो मेरी ही रंगत-ओ-मेरी ही बू है ॥ ३ ॥
मेरा तेरा उट्ठा हूये एक ही सब ।
रही कुच्छ न हसरत[18] न कुच्छ आर्ज़ू[19] है ॥ ४ ॥

---

१ बात, धंधा. २ अगर. ३ खतम करें ४ चाहे. ५ तीर्थ का नाम है. ६ कौनसी. ७ उस को. ८ इच्छा. ९ जिज्ञासा. १० एकता. ११ आनन्द रूपी शराब पिलाने वाला. १२ पियाला. १३ आत्म ज्ञान की. १४ प्यारा (अपना स्वरूप). १५ सन्मुख. १६ बाग़. १७ पुष्प. १८ शोक, अफ़सोस. १९ आशा, ख्वाहिश.

[६७]

ज्ञानी का प्रण ।

राग जंगला, ताल पश्तो ।

हम रूखे टुकड़े खायेंगे । भारत पर वारे जायेंगे ॥
हम सूखे चने चबायेंगे । भारत की बात बनायेंगे ॥
हम नंगे उम्र बितायेंगे । भारत पर जान मिटायेंगे ॥
सूलों पर दौड़े जायेंगे । काँटों को राख बनायेंगे ॥
हम दर दर धक्के खायेंगे । आनन्द की झलक दिखायेंगे ॥
सब रिश्ते नाते तोड़ेंगे । दिल इक आत्म-संग जोड़ेंगे ॥
सब विषयों से मुंह मोड़ेंगे । सिर सब पापों का फोड़ेंगे ॥

[६८]

ज्ञानी का निश्चय-व-हिम्मत ।

राग परज ताल ग़ज़ल ।

गर्चे क़ुतब[1] जगह से टले तो टल जाये ।
गर्चे बहर[2] भी जुगनू[3] की दुम से जल जाये ॥
हिमालय बाद[4] की ठोकर से गो फिसल जाये ।
और आफ़ताब[5] भी क़ब्ले-उरूज[6] ढल[7] जाये ॥
मगर न साहबे-हिम्मत[8] का हौसला टूटे ।
कभी न भूले से अपनी जबीं[9] पर बल आये ॥

---

१ ध्रुव तारा. २ समुद्र. ३ रात को चमकने वाला कीड़ा जो उड़ता भी है ४ वायु. ५ सूर्य. ६ पूर्व उदय (चढ़ने) से पहिले. ७ अस्त हो जाय. ८ हिम्मत वाला पुरुष, धैर्यवान ९ पेशानी, मस्तक.

त्याग (फ़क़ीरी)

[६६]

राग शंकराचरण ताल धुमाली ।

घर मिले उसे जो अपना घर खोवे है ।
जो घर रक्खे सो घर घर में रोवे है ॥ टेक
जो राज तजे, वह महाराज करे है ।
धन तजे तो फिर दौलत से घर भरे है ॥
सुख तजे तो फिर औरों का दुःख हरे[1] है ।
जो जान तजे वह कभी नहीं मरे है ॥
जो पलंग तजे वह फूलों पै सोवे है ।
जो घर रक्खे वह घर घर में रोवे है ॥ १ ॥
जो परदारा[2] को तजे, वह पावे रानी ।
अरु झूठ वचन दे त्याग, सिद्ध हो वाणी ॥
जो दुर्बुद्धि को तजे, वही है ज्ञानी ।
मन से त्यागी हो, ऋद्धि[3] मिले मन मानी ॥
जो सर्व तजे उसी का सब कुछ होवे है ।
जो घर रक्खे सो घर घर में रोवे है ॥ २ ॥
जो इच्छा नहीं करे, वह इच्छा पावे ।
अरु स्वाद तजे फिर अमृत भोजन खावे ॥
नहिं माँगे तो फल पावे जो मन भावे ।
हैं त्याग में तीनों लोक, वेद यही गावे ॥

---

१ दूर करना. २ दूसरे पुरुष की स्त्री. ३ ऋद्धि सिद्धि.

जो मैला होकर रहे, वह दिल धोवे है ।
जो घर[1] रक्खे वह घर घर में रोवे है ॥ ३ ॥

[१००]

लावनी राग धनासरी ताल धुमाली ।

नहीं मिले हर धन त्यागे नहीं मिले राम जान तजे ।
नारायण तो मिले उसी को, जो देह का अभिमान तजे ॥ } टेक

सुत दारा[2] या कुटुम्ब त्यागे, या अपना घर बार तजे ।
नहीं मिले है प्रभु कदापि, जग का सब व्यवहार तजे ॥
कंद मूल फल खाय रहे, और अन्न का भी आहार तजे ।
वस्त्र त्यागे नग्न हो रहे, और पराई नार तजे ॥
तो भी हर नहीं मिले यह त्यागे, चाहे अपने प्राण तजे ।
नारायण तो मिले उसी को, जो देह का अभिमान तजे ॥ १ ॥

तजे पलंग फूलों का और हीरे मोती लाल तजे ।
जात की इज़्ज़त, नाम और तेज़ और कुल की सारी चाल तजे ॥
वन में निशिदिन[3] विचरे और दुनिया का जंजाल तजे ।
देह को अपनी चाहे जलावे, शरीर की भी खाल तजे ॥
ब्रह्मज्ञान नहीं हो तो भी, चाहे वह अपनी शान तजे ।
नारायण तो मिले उसी को, जो देह का अभिमान तजे ॥ २ ॥

रहे मौन बोले नहीं मुखसे, अपनी सारी बात तजे ।
बालपन से योग ले चाहे तात[4] तजे या मात तजे ॥

---

१. घर से अभिप्राय यहाँ परिच्छिन्न घर या अहंकार से है. २ पुत्र स्त्री. ३ रात, सदा. ४ पिता.

शिखा सूत्र त्याग जो करदे और अपनी उत्तम ज़ात तजे ।
कभी जीव को न मारे और घात तजे अपघात[1] तजे ॥
इतना तजे तो क्या होवे जो देह का नहीं गुमान तजे ।
नारायण तो मिले उसी को, जो देह का अभिमान तजे ॥ ३ ॥
रहे रात दिन खड़ा न सोवे, पृथ्वी का भी शैन[2] तजे ।
कष्ट उठावे रहे बेचैन, सुख और सारी चैन तजे ॥
मीठा हो कर बोले सब से, कड़वे अपने बैन[3] तजे ।
इतना त्यागे और देह अभिमान नहीं दिन रैन[4] तजे ॥
बनारसी उसे मिले नहीं हर, चाहे सकल जहान तजे ।
नारायण तो मिले उसी को, जो देह का अभिमान तजे ॥ ४ ॥

[१०१]

राग सोहनी ताल ग़ज़ल ।

फ़क़ीरी ख़ुदा को प्यारी है, अमीरी कौन विचारी है । (टेक)
बदन पर ख़ाक सो है अकसीर[5], फ़क़ीरों की है यही जागीर ॥
हाथ बांधे हैं खड़े अमीर, बादशाह हो या हो वज़ीर ।
सदा[6] यह सच हमारी है, गदा[7] की ख़ुदा से यारी है ॥
फ़क़ीरी ख़ुदा० ॥ १ ॥
है उन का नाम सुनो दरवेश[8], कोई नहीं पाये उन से पेश ।
ख़ुदा से मिले रहें हमेश, कोई नहीं जाने उन का भेष ।
कभी तो गिरया[9]-ओ-ज़ारी है, कभी चश्मों[10] में ख़ुमारी[11] है ॥
फ़क़ीरी ख़ुदा० ॥ २ ॥

---

१ रक्षा करना, बचाना. २ सोना, बिछौना ३ शब्द, वाणी, वाक्य. ४ रात. रसायन, धव से बह कर दारू. ६ आवाज़, ध्वनी. ७ फ़कीर. ८ फ़क़ीर. ९ रोना पीटना १० नेत्र, आंख. ११ मस्ती.

है उन का रुतबा बहुत बलन्द, खुदा के तईं हुआ पसन्द ।
बादशाह से भी है दोचन्द, उन्हें मत बुरा कहो हर चंद ।
उन की दिल पर सवारी है, ऐसी कहीं नहीं तय्यारी है ॥
फ़क़ीरी खुदा० ॥ ३ ॥

चीथड़े शाल से हैं आला[1], चश्म हरताल से हैं आला ।
चने भी दाल से हैं आला, चलन हर चाल से आला ।
ज़ख़्म जो दिल पर कारी[2] है, वही खुद मरहम विचारी है ॥
फ़क़ीरी खुदा० ॥ ४ ॥

पाओं में पड़ा जो है छाला, वह है मोतयों से भी आला ।
हाथ में फूटा सा प्याला, जामे-जमशेद[3] से भी आला ।
अगर कोई हफ़्त[4] हज़ारी है, वह भी उन का भिखारी है ॥
फ़क़ीरी खुदा० ॥ ५ ॥

मकाँ लामकाँ[5] फ़क़ीरों का, निशाँ बे निशाँ फ़क़ीरों का ।
फ़क़र है निहाँ[6] फ़क़ीरों का, खुदा है ईमान फ़क़ीरों का ।
ताक़त सबर वह भारी है, मौत भी उन से हारी है ।
फ़क़ीरी खुदा० ॥ ६ ॥

बढ़ गये बाल तो क्या परवाह, उतर गयी खाल तो क्या परवाह ।
आ गया माल तो क्या परवाह, हुये कङ्गाल तो क्या परवाह ।
खुदा ही जनाब[7] बारी है, फ़क़र की यही क़रारी[8] है ॥
फ़क़ीरी खुदा० ॥ ७ ॥

---

१ उत्तम. २ सख़्त, भारी. ३ जमशेद बादशाह का प्याला. ४ पद या ख़िताब होता है जिस से सात हज़ार सिपाहियों का अफ़सर अभिप्रेत है. ५ देश रहित. ६ गुम हुआ हुआ; गुप्त ७ महान. ८ स्थिति, धैर्य.

[१०२]

आनन्द भैरवी ताल ग़ज़ल।

न ग़म दुन्या का है मुझ को, न दुन्या से किनारा[1] है।
न लेना है, न देना है, न हीला[2] है, न चारा है ॥ १ ॥
न अपने से मुहब्बत है, न नफ़रत ग़ैर से मुझ को।
सभों को ज़ाते-हक़[3] देखूं, यही मेरा नज़ारा है ॥ २ ॥
न शाही में मैं शैदा[4] हूं, गदाई[5] में न ग़म मुझ को।
जो मिल जावे सोई अच्छा, वही मेरा गुज़ारा है ॥ ३ ॥
न कुफ़्र इस्लाम से फ़ारिग़, न मिल्लत[6] से ग़रज़ मुझ को।
न हिन्दु गिबरो[7] मुसलिम हूं, सभों से पंथ न्यारा है ॥ ४ ॥

[१०३]

जोगी (साधू) का सच्चा रूप (चरित्र)

ग़ज़ल।

प्यारे! क्या कहूं अहवाल[8] की अपने परेशानी?।
लगा ढलने मेरी आँखों से इक दिन ख़ुद ब ख़ुद पानी।
यकायक आ पड़ी उस दम, मेरे दिल पर यह हैरानी।
कि जिस की हो रही है यह जो हर इक जा[9] सनाख़्वानी[10]।
किसी सूरत से उस को देखिये "कैसा है वह जानी[11]" ॥ १ ॥

---

१ पृथकता, उदासीनता, अलहदगी. २ बहाना. ३ असल स्वरूप. ४ आसक्त, मोहित. ५ फ़कीरी. ६ मत, मतान्तर. ७ आग पूजने वाला पारसी. ८ दशा, अवस्था. ९ जगह, देश. १० स्तुति. ११ प्यारा, दिलबर.

चढ़ा इस फिक्र का दरिया, भरा इस जोश में आकर।
कि इक इक लहर उस की ने, ले उड़ाया हवा ऊपर।
क़रारो-होशो-अक्लो-सबरो-दानिश[1] बहगये यक्सर[2]।
अकेला रह गया आजिज़, गरीबो-बेकसो-बेपर[3]।
लगा रोने कि इस मुश्किल की हो अब कैसे आसानी! ॥ २ ॥

यह सूरत थी, कि जी[4] में इश्क़ ने यह बात ला डाली।
मँगा थोड़ा सा गेरू और वहीं कफनी रँगा डाली।
बिना मुद्रे गले के बीच सेली[5] बरमला डाली।
लगा मुंह पर भबूत और शक्ल जोगी की बना डाली।
हुआ अवधूत जोगी, जोगियों में आप गुरु-ज्ञानी ॥ ३ ॥

उठाई चाह[6] की झोली, प्याला चश्म[7] का खप्पर।
बना कर इश्क़ का कंठा, तलब[8] का सिर पै रख चक्कर।
मुंडासा[9] गेरुआ बान्धा, रक्खा त्रिशूल कान्धे पर।
लगा जोगी हो फिरने ढूंढता उस यार को घर घर।
दुकां बाज़ार-ओ-कूचा ढूंढने की दिल में फिर ठानी ॥ ४ ॥

लगी थी दिल में इक आतिश[10], धूआँ उठता था आहों का।
तमाशे के लिये हलक़ा[11] बन्धा था साथ लोगों का।
तलब थी यार की और गरम था बाज़ार बातों का।
न कुछ सिर की खबर थी और न था कुछ होश पाओं का।
न कुछ भोजन का अन्देशा[12] न कुछ फ़िक्रे-अमल[13] पानी ॥ ५ ॥

---

१ शिकेबा, धैर्य, बुद्धि, सन्तोष और समझ. २ इकट्ठे, एक साथ. ३ निराश्रय और निर्बल वा लाचार. ४ दिल. ५ साधु वेष ६ इच्छा. ७ नेत्र, चक्षु. ८ जिज्ञासा. ९ सिर पर फक़ीरी पगड़ी १० आग. ११ घेरा (पुरुषों का समूह). १२ ख्याल, सोच, फ़िक्र १३ भांग गांजे की चिन्ता को फ़िक्र अमल पानी कहते हैं.

फिर इस जोग का ठैहरा अजब कुछ आन कर नक़्शा।
जो आया सामने मेरे, तो कहता उस से सुनना जा।
"कहो प्यारे! हमारे यार को तुम ने कहीं देखा?"।
जो कुछ मतलब की वह बोला, तो उस से और कुछ पूछा।
वगर[1] यूंहीं लगा कहने, तो फिर देना अनाकानी[2] ॥ ६ ॥

कभी माला से कहता था लगा कर जप से "ऐ माला!
हुआ हूं जब से मैं जोगी, तू ही उस यार को बतला"।
कभी घबरा के हँसता था, कभी ले स्वाँस रोता था।
लबों से आह, आँखो से बहा पड़ता था दरिया सा।
अजब जंजाल में चक्कर के डाले है परेशानी ॥ ७ ॥

कोई कहता था "बाबा जी! इधर आओ, इधर बैठो।
पड़े फिरते हो ऐसे रात दिन, टुक बैठो, सुसताओ।
जो कुछ दरकार हो 'मेवा मिठाई' हुक्म फरमाओ।
न कहना उस से "ले आओ" न कहना उस से "मत लाओ"
ख़बर हरगिज़ न थी कुछ उस घड़ी अपनी, न बेगानी ॥ ८ ॥

बड़ी दुबधा में था उस दम, कहां जाऊं? कहां देखूं?।
किसे देखूं? किसे पूछूं? किधर जाऊं? कहां ढूंढूं?।
करूं तदबीर क्या? जिस से मैं उस दिलदार को पाऊं।
निशां हरगिज़ न मिलता था, पड़ा फिरता था[3] जूं मजनूं।
अजब दरिया-ए-हैरत की हुई थी आ के तुग्यानी[4] ॥ ९ ॥

उसी को ढूंढता फिरता हुआ मसजिद में जा पहुंचा।
जो देखा वाँ[5] भी है रोज़ो-नमाज़ों का ही इक चर्चा।

---

१ अगर. २ टाल मटोल करना. ३ मजनूं (अ दर्श आशिक) की तरह. ४ घटा, तूफान ५ वहां

कोई जुब्बे[1] में अटका है, कोई डाढ़ी में है उलझा।
तसल्ली कुछ न पाई जब, तो आखिर वाँ से घबराया।
चला रोता हुआ बाहर ब अहवाले-परेशानी[2] ॥ १० ॥

यही दिल में कहा "टुक मद्रस्से को झांकिये चल कर।
भला शायद उसी में हो नज़र आजाये वह दिल्बर"।
गया जब वहां तो देखी वाह वा! कुछ और भी बदतर[3]।
किताबें खुल रहीं हैं, मच रहा है शोरो-गुल यक्सर।
हर इक मसले पै फाज़िल कर रहे हैं बैहसे-नफसानी[4] ॥ ११ ॥

चला जब वहां से घबरा कर, तो फिर यह आ गयी जी में।
कि यह जगह[5] तो देखी अब चलो टुक दैर[6] भी देखें।
गया जब वाँ तो देखा मूर्ति और घंटों की झिङ्कारें।
पुकारा तब तो रोकर "आह! किस पत्थर से सिर मारें?"।
कहीं मिलता नहीं वह शोख़ काफिर दुश्मने-जानी ॥ १२ ॥

कहा दिल ने कि "अब टुक तीरथों की सैर भी कीजे।
भला वह दिलरुबा[7] शायद इसी जगह पै मिलजावे"।
बहुत तीरथ मनाये और किये दर्शन भी बहुतेरे।
तसल्ली कुछ न पाई तब तो हो लाचार फिर वाँ से।
मुहब्बत छोड़ कर बस्ती की, ली राहे-बियाबानी[8] ॥ १३ ॥

गया जब दश्तो-स्वहरा[9] में तो रोया "आह! क्या करिये?
कहां तक हिज्र[10] में उस शोख़ के रो रो के दिन भरिये?

---

१ चोगा, लबादा फ़क़ीरों का लिबास. २ परेशानी की अवस्था में, उद्विग्न. ३ और भी बुरी अवस्था. ४ वाद विवाद, या अपने अपने ख्याल पर झगड़ा. ५ स्थान. ६ मन्दिर. ७ प्यारा माशूक़. ८ जंगल का मार्ग. ९ वन और जंगल या उजाड़ १० विरह, वियोग.

किधर जाइये, और किस के ऊपर आश्रय धरिये ? ।
यही बेहतर है अब तो डूबिये या ज़हर खा मरिये ।
भला जी जान के जाने में शायद आ मिले जानी" ॥ १४ ॥

रहा कितने दिनों रोता फिरा हर दशत में नाला[1] ।
ग़रीबो-बेकसो-तन्हा मुसाफिर बेवतन हैरान् ।
पहाड़ों से भी सिर पटका, फिरा शहरों में हो गिरयां[2] ।
फिरा भूखा प्यासा ढूंढ़ता दिल्बर को सरगर्दान्[3] ।
न खाने को मिला दाना, न पीने को मिला पानी ॥ १५ ॥

पड़ा था रेत में और धूप में सूरज से जलता था ।
लगीं थीं दिल की आंखें यार से, और जी निकलता था. ।
उसी के देखने के ध्यान में हर दम निकलता था ।
चले महबूब[4] से कुछ हाय ! मेरा बस न चलता था ।
पड़े बहते थे आँसू लालागूं[5] लाले-बदख्शानी[6] ॥ १६ ॥

जब इस अहवाल को पहुँचा, तो वह महबूब बेपरवाह ।
वहीं सौ बेक़रारी से मेरी बालीन्[7] पै आ पहुंचा ।
उठा कर सिर मेरा ज़ानू[8] पै अपने रख के फ़रमाया ।
कहा "ले देख ले जो देखना है अब मुझे इस जा[9]" ।
अयां[10] हैं इस घड़ी करते तेरे पै भेदे-पिन्हानी[11] ॥१७॥

यह सुन रख " पहले हम आशिक़ को अपने आज़माते हैं
'जलाते हैं' 'सताते हैं' 'रुलाते हैं' 'बुलाते हैं' ।

---

१ रोते हुए. २ रोता हुआ, रुदन करता हुआ. ३ परेशान्, हैरान्, अशान्त. ४ प्यारा माशूक़ (अन्तरात्मा). ५ लाल (सुर्ख) पुष्प की तरह. ६ बदख्शां देश का जवाहर, हीरा. ७ सिरहाना, तकिया. ८ घुटने. ९ जगह. १० प्रकट करना, खोल देना. ११ गुप्त, छुपा हुआ रहस्य.

हर इक अहवाल में जब ख़ूब साबित[1] उस को पाते हैं।
उसी से आ के मिलते हैं, उसी को मुंह दिखाते हैं॥
उसे पूरा समझते हैं हम अपने ध्यान का ध्यानी" ॥ १८ ॥
सदा महबूब की आई, ज्यूंहीं कानों में वाँ[3] मेरे।
बदन में आ गया जी और वहीं दुःख दर्द सब भूले।
फिर आंखें खोल कर दिलबर के मुंह पर टुक नजर करके।
ज़मीनो-आसमान[4] चौदह तबक़[5] के खुल गये पर्दे।
मिटी इक आन में सब कुछ ख़राबी और परेशानी ॥ १९ ॥
हुई जब आ के यकताई[6], दुई[7] का उठ गया पर्दा।
जो कुछ वह्मो-दग़ा[8] थे, उड़ गये इक दम में हो पारा[9]।
नज़ीर[10] उस दिन से हम ने फिर जो देखा ख़ूब हर इक जा।
वुही देखा, वुही समझा, वुही जाना, वुही पाया।
बराबर हो गये हिन्दू मुसलमां गिबरो-नुसरानी[11] ॥ २० ॥

[१०४]

मोहनी ताग दीपचंदी।

हर आन[12] हँसी हर आन खुशी, हर वक़्त अमीरी है बाबा। } टेक
जब आशिक़[13] मस्त फ़क़ीर हुए, फिर क्या दिलगीरी[14] है बाबा॥ }
हैं आशिक़ और माशूक़[15] जहां, वहां शाह वज़ीरी है बाबा।
न रोना है, न धोना है, न दर्द-असीरी[16] है बाबा॥

---

१ पक्का, पुख़्ता. २ आवाज़ ३ वहां, उस स्थान पर. ४ पृथिवी और आकाश. ५ चौदह लोक. ६ अभेदता. ७ द्वैत. ८ धोखा और भ्रम. ९ टुकड़े. १० कवि. का नाम. ११ पारसी लोग और ईसाई लोग. १२ समय. १३ प्रेमी. १४ उदासी. १५ प्यारा दिलबर १६ क़ैद होने का दर्द.

दिन रात बहारें चोहलें हैं, अरु इश्क़-सफ़ीरी[1] है बाबा।
जो आशिक़ होय सो जाने है, यह भेद फ़क़ीरी है बाबा ॥१॥ हर०
है चाह फ़क़त इक दिल्बर की, फिर और किसी की चाह नहीं।
इक राह उसी से रखते हैं, फिर और किसी से राह नहीं ॥
यां[2] जितना रंज-तरद्दुद[3] है, हम एक से भी आगाह[4] नहीं।
कुछ मरने का संदेह[5] नहीं, कुछ जीने की परवाह नहीं ॥ २ ॥ हर०

कुछ ज़ुल्म नहीं, कुछ ज़ोर नहीं, कुछ दाद[6] नहीं, फ़र्याद नहीं।
कुछ क़ैद नहीं, कुछ बन्द नहीं, कुछ जबर[7] नहीं, आज़ाद नहीं ॥
शागिर्द नहीं, उस्ताद नहीं, वीरान नहीं, आबाद नहीं ॥
हैं जितनी बातें दुन्या की सब भूल गये कुछ याद नहीं ॥ ३ ॥ हर०
जिस सिम्त[8] नज़र भर देखे हैं, उस दिलवर की फुलवारी है।
कहीं सबज़े की हरयाली है, कहीं फूलों की गुलकारी[9] है ॥
दिन रात मगन खुश बैठे हैं, अरु आस[10] उसी की भारी है ॥
बस आप ही वह दातारी[11] है, अरु आप ही वह भंडारी है ॥४॥ हर०
नित्य इशरत[12] है, नित्य फरहत[13] है, नित्य राहत[14] है, नित्य शादी[15] है।
नित्य[16] मेहरो-करम[17] है दिल्बर[18] का, नित्य खूबी खूब मुरादी[19] है॥

---

१ जैसे बुलबुल पक्षी पुष्प का (प्रेमी) आशिक है और प्रेम में बोलता रहता है ऐसे ही अपने दिल्वर के नाम रटने वाला इश्क़ (प्रेम) २ इस संसार में. ३ चिन्ता. ४ ज्ञाता, सचेत. ५ डर. ६ न्याय, इन्साफ. ७ सख्ती, मजबूरी. ८ तरफ, ओर. ९ बेल बूटों को लगाना. १० आशा. ११ सब कुछ देने वाला, सब का दाता. १२ विषयानन्द, खुश दिली. १३ खुशी, आनन्द. १४ आराम, शान्ति. १५ आनन्द, खुशी. १६ सर्वदा, हमेशा. १७ प्रेम और कृपा. १८ प्यारा. १९ इच्छानुसार.

जब उमड़ा दरिया उलफ़त[1] का, हर चार तरफ़ आबादी है।
हर रात नयी इक शादी है, हर रोज़ मुबारिक-बादी है ॥५॥ हर०
है तन तो गुल के रंग बना, अरु मुंह पर हर दम लाली है।
जुज़[2] ऐशो-तरब[3] कुछ और नहीं, जिस दिन से सुरत[4]
संभाली है ॥
होंठों में राग तमाशे का, अरु गत पर बजती ताली है।
हर रोज़ बसन्त अरु होली है, और हर इक रात दिवाली
है ॥ ६ ॥ हर०
हम आशिक़ जिस सनम[5] के हैं, वह दिलबर सबसे आला[6] है ॥
उस ने ही हम को जी[7] बख्शा, उस ने ही हमको पाला है ॥
दिल अपना भोला भाला है, और इश्क़ बड़ा मतवाला है ॥
क्या कहिये और नज़ीर[8] आगे? अब कौन समझने वाला है ॥७हर०

[१०५]

राग यमन कल्यान, ताल चलन्त।

न बाप बेटा, न दोस्त दुश्मन, न आशिक़ और सनम[9] किसी के।
अजब तरह की हुई फ़रागत[10], न कोई हमारा, न हम किसी के। टेक
न कोई तालिब[11] हुआ हमारा न हमने दिल से किसी को चाहा।
न हम ने देखी खुशी की लैहरें, न दर्दो-ग़म से कभी कराहा[12]।
न हम ने बोया, न हमने काटा, न हमने जोता, न हमने गाहा।
उठा जो दिल से भरम का पर्दा, तो उस के उठते ही फिर
अहाहा ॥ १ ॥ टेक

१ प्रेम, २ बिना, सिवाये ३ खुश दिली, आनन्द, राग रंग. ४ होश. ५ प्यारा ६ उत्तम. ७ प्राण, ज़िन्दगी. ८ दृष्टान्त, मिसाल, कवि का नाम भी है. ९ प्यारा, माशूक़. १० फ़ुरसत, ११ जिज्ञासु, चाहने वाला. १२ नफ़रत.

यह बात कल की है जो हमारा, कोई था अपना, कोई बेगाना।
कहें थे नाते, कहें थे पोते, कहें थे दादा, कहें थे नाना।
किसी पै पटका, किसी पै कूटा, किसी पै पीसा, किसी पै छाना॥
उठा जो दिल से भरम का थाना[1], तो फिर जभी से यह हम ने जाना॥ २॥ टेक

अभी हमारी बड़ी दुकान थी, अभी हमारा बड़ा कसब था।
कहीं खुशामद, कहीं दरामद, कहीं त्वाज़ो[2], कहीं अदब[3] था।
बड़ी थी ज़ात और बड़ी सफात और बड़ा हसब[4] और बड़ा नसब[5] था।
खुदी[6] के मिटते ही फिर जो देखा, न कुछ हसब था न कुछ नसब था॥ ३॥ टेक

अभी यह ढब था किसी से लड़िये, किसी के पाओं पै जाके पड़िये।
किसी से हक़[7] पर फिसाद करिये, किसी से नाहक़ लड़ाई। लड़िये।
अभी यह धुन[8] थी दिल अपने में "कहीं बिगाड़िये, कहीं झगड़िये"।
दुई के उठते ही फिर यह देखा, कि अब जो लड़िये तो किस से लड़िये॥ ४॥ टेक

---

१ ढेर २ अपेक्षा सत्कार. ३ खातिरदारी. ४ कुल, उच्च पद से भी अभिप्राय है. ५ कुल. खान्दान, नसल. ६ अहंकार. ७ सचाई ८ विचार, ख्याल.

[१०६]

राग धनासरी ताल घुमाली ।

वाह वाह रे मौज फकीरां दी[1] । (टेक)
कभी चबावें चना चबीना, कभी लपट लें खीरां दी ।
वाह वाह रे० १
कभी तो ओढ़ें शाल दुशाला कभी गुदड़िया लीड़ां दी ॥
वाह वाह रे० २
कभी तो सोवें रंग महल में, कभी गलीं अहीरां[2] दी ॥
वाह वाह रे० ३
मंग तंग के टुकड़े खान्दे, चाल चलें अमीरां दी ॥
वाह वाह रे० ४

[१०७]

राग पहाड़ी ताल दादरा ।

पूरे हैं वही मर्द जो हर हाल में खुश हैं । (टेक)
जो फक़र[3] में पूरे हैं, वह हर हाल में खुश हैं ।
हर काम में, हर दाम[4] में, हर चाल में खुश हैं ॥
गर माल दिया यार ने, तो माल में खुश हैं ।
बेज़र[5] जो किया, तो उसी अहवाल[6] में खुश हैं ।
इफलास[7] में, इदबार[8] में, इक़बाल[9] में खुश हैं }
पूरे हैं वही मर्द जो हर हाल में खुश हैं } ॥ १ ॥

---

१ की. २ नीच जाति के लोग. ३ त्याग, फकीरी. ४ मूल्य, स्थिति या चाल. ५ निर्धन, ग़रीब. ६ अवस्था, हालत ७ ग़रीबी ८ किसी तरह का बोझ, कमनसीब, बुरे भाग्य वाला. ९ बड़भागी, अच्छे भाग्य (प्रारब्ध) वाला.

चेहरे पे है मलाल[1] न जिगर में असरे-ग़म[2] ।
माथे पे कहीं चीन[3], न अब्रू[4] में कहीं ख़म[5] ।
शिकवा[6] न ज़ुबाँ पर, न कभी चश्म[7] हुई नम[8] ।
ग़म में भी वही ऐश[9], अलम[10] में भी वही दम ।
हर बात, हर औक़ात[11], हर अफ़ाल[12] में ख़ुश हैं ॥ २ ॥ पूरे०
गर यार की मर्ज़ी हुई, सिर जोड़ के बैठे ।
घर बार छुड़ाया, तो वहीं छोड़ के बैठे ।
मोड़ा उन्हें जिधर, वहीं मुंह मोड़ के बैठे ।
गुदड़ी जो सिलाई, तो वुही ओढ़ के बैठे ।
और शाल उढ़ाई, तो उसी शाल में ख़ुश हैं ॥ ३ ॥ पूरे०
गर उस ने दिया ग़म, तो उसी ग़म में रहे ख़ुश ।
मातम[13] जो दिया, तो उसी मातम में रहे ख़ुश ।
खाने को मिला कम, तो उसी कम में रहे ख़ुश ।
जिस तरह रक्खा उस ने, उस आलम[14] में रहे ख़ुश ।
दुःख दर्द में, आफ़ात[15] में, जंजाल में ख़ुश हैं ॥ ४ ॥ पूरे०
जीने का न अन्दोह[16] है, न मरने का ज़रा ग़म ।
यकसाँ है उन्हें ज़िन्दगी और मौत का आलम ।
वाक़िफ़ न बरस से, न महीने से वह इक दम ।
शब[17] की न मुसीबत, न कभी रोज़[18] का मातम ।
दिन रात, घड़ी पहर, महो-साल[19] में ख़ुश हैं ॥ ५ ॥ पूरे०

---

१ रंज, उदासी. २ फ़िक्र, ग़म का प्रभाव. ३ बल, घट, त्योरी. ४ भ्रू, भृकुटि. ५ टेढ़ापन, तिर्छापन. ६ उलाहना, शिकायत. ७ चक्षु वा नेत्र. ८ भीगे हुए, आंसू भरना, अश्रुपात. ९ प्रसन्नता, ख़ुशदिली. १० रंज, दुःखावस्था. ११ समय, काल. १२ काम १३ रोना, पीटना. १४ अवस्था, हालत. १५ मुसीबत, दुःख. १६ ग़म, सोच. १७ रात्रि. १८ दिन. १९ मास और वर्ष.

गर उस ने उढ़ाया, तो लिया ओढ़ दोशाला[1]।
कम्बल जो दिया तो वुही कांधे पै संभाला।
चादर जो उढ़ाई तो वुही हो गयी वाला[2]।
बंधवाई लंगोटी तो वुही हँस के कहा, "ला"।
पोशाक में, दस्तार[3] में, रूमाल में खुश हैं ॥ ६ ॥ पूरे०
गर खाट बिछाने को मिली, खाट में सोये।
दुकां में सुलाया, तो जा हाट में सोये।
रस्ते में कहा "सो", तो जा बाट में सोये।
गर टाट बिछाने को दिया, टाट में सोये।
और खाल बिछादी, तो उसी खाल में खुश हैं ॥ ७ ॥ पूरे०
पानी जो मिला, पी लिया जिस तौर का पाया।
रोटी जो मिली, तो किया रोटी में गुज़ारा।
दी भूख, गर यार ने, तो भूख को मारा।
दिल शाद रहे, कर के कड़ाके पै कड़ाका[4]।
और छाल चबाई, तो उसी छाल में खुश हैं ॥ ८ ॥ पूरे०
गर उस ने कहा सैर करो जा के जहाँ की"।
तो फिरने लगे जंगलो-घर[5] मार के झांकी।
कुछ दश्तो-बियावां[6] में खबर तन की न जाँ की।
और फिर जो कहा "सैर करो हुस्ने-बुतां[7] की"
तो चश्मो-रुखो-ज़ुल्फ़ो-खत्तो-खाल[8] में खुश हैं ॥ ९ ॥ पूरे०
कुछ उन को तलब[9] घर की, न बाहिर से उन्हें काम।
तकिया की न ख्वाहिश, न बिस्तर से उन्हें काम।

---

१ सुंदर वस्त्र. २ सुन्दर, ३ पगड़ी. ४ निराहार. ५ घन और देश या वस्ती. ६ जंगल और उजाड़. ७ प्यारों (पुरुषों) की सुंदरता. ८ नेत्र, मुख, बाल और वज़ा क़ता में. ९ आवश्यकता, जिज्ञासा.

अस्थल[1] की हवस[2] दिल में, न मन्दिर से उन्हें काम।
मुफलिस[3] से न मतलव, न तवङ्गर[4] से उन्हें काम।
मैदान में, वाज़ार में, चौपाल[5] में खुश हैं ॥ १० ॥ पूरे०

[१०८]

राग विलावल ताल रूपक।

फ़क़ीर तो तू न रख यहां किसी से मेल।
ड़ी न वेल[6], पड़ा अपने सिर पै खेल ॥ (टेक)

जितने तू देखता है यह फल फूल पात वेल।
सब अपने अपने काम की हैं कर रहे झमेल।
नाता है यां सो नाथ, जो रिश्ता[7] है सो नकेल।
जो ग़म पड़े तो उसको तू अपने ही तन पर झेल ॥ १ गर है०

जब तू हुआ फ़कीर, तो नाता किसी से क्या।
छोड़ा कुटुम्ब तो फिर रहा रिश्ता किसी से क्या।
मतलब भला फ़कीर को बावा किसी से क्या।
दिल्बर को अपने छोड़ के मिलना किसी से क्या ॥ २ गर है०

तेरी न यह ज़मीन है, न तेरा यह आस्मान्।
तेरा न घर, न वार, न तेरा यह जिस्मो-जां[8]।
उस के सिवाय कि जिस पै हुआ तू फक़ीर यां।
कोई तेरा रफीक़[9], न साथी, न मिहरवान् ॥ ३ गर है०

---

१ फक़ीरों के रहने की जगह, (खानक़ाह.) २ लालच, इच्छा, शौक़ ३ ग़रीब, तंगदस्त. ४ अमीर. ५ मंडप. ६ फ़क़ीर के पात्रों के नाम हैं. ७ सम्बन्ध. ८ शरीर और प्राण ९ मित्र, दोस्त.

यह उलफतें[1] कि साथ तेरे आठ पहर हैं।
यह उलफतें नहीं हैं, मेरी जां! यह क़हर[2] हैं।
जितने यह शहर देखे हैं, जादू के शहर हैं।
जितनी मिठाईयां हैं मेरी जां! वह ज़हर हैं॥ ४ गर है०

ख़ूबां[3] के यह चाँद से मुंह पर खिले हैं बाल।
मारा है तेरे वास्ते सय्याद[4] ने यह जाल।
यह बाल बाल अब है तेरी जान का वबाल[5]।
फंसियो ख़ुदा के वास्ते इस में न देख भाल॥ ५ गर है०

जिस का तू है फ़क़ीर उसी को समझ तू यार।
मांगे तो मांग उस से क्या नक़द क्या उधार।
देवे तो ले वही, जो न देवे तो दम न मार।
इस के सिवा किसी से न रख अपना कारो-बार॥ ६ गर है०

क्या फायदा अगर तू हुआ नाम को फ़क़ीर।
हो कर फ़क़ीर तो भी रहा जाल में असीर[6]।
ऐसा ही था तो फ़क़र को नाहक़ किया असीर।
हम तो इसी सख़ुन[7] के हैं क़ायल मियां नज़ीर[8]॥ ७॥

गर है फ़क़ीर तो तू न रख यहां किसी से मेल।
न तूम्बड़ी, न बेल, पड़ा अपने सिर पै खेल॥

---

१ मोह, स्नेह २ आपत्ति, ग़ुस्सा, क्रोध. ३ सुन्दर मुख पुरुष या स्त्री. ४ शिकारी. ५ दुःख, बोझ. ६ क़ैद, बद्ध. ७ क़ौल, इक़रार, वाचा. ८ कवि का नाम है.

[१०६]

राग जंगला।

लाज मूल न आइया, नाम धरायो फ़क़ीर ॥ टेक
रातीं रातीं वदियां करेंदा, दिन नूं सदावें पीर ॥ १ ॥ ला०
अपना भारा चाय न सकदा, लोकां वधावें धीर ॥ २ ॥ ला०
कुड़म कुटुंब दी फाही फस्या, गल विच पा लिया लीर ॥ ३ ॥ ला०
आखिर नतीजा मिलेगा प्यारे! रोवेंगा नीरो-नीर ॥ ४ ॥ ला०

पंक्तिवार अर्थ।

(टेक) फ़क़ीर (विरक्त) नाम धरा कर तुझे इन कामों से लज्जा नहीं आती।

(१) रात के समय छुप कर तू बुराईयां करता है और दिन को महात्मा या गुरू कहलाता है, इस से तुझे लज्जा नहीं आती।

(२) अपने अन्दर तो शोक व चिन्ता का इतना बोझ धरा हुआ है कि उस को तू उठा ही नहीं सकता, और लोगों को धीरज दिला रहा है। इस बात से तुझे लज्जा नहीं आती।

(३) कई तरह से चेलों का कुटुंब बनाकर आप तो उस में फंसा हुआ है और अपने गले में भगवे रंग के कपड़े पहिन कर अपने को संन्यासी असंग बता रहा है।

(४) खैर, इन सारी करतूतों का तुझ को अन्त में खूब नतीजा मिलेगा और फूट फूट तुझ को रोना पड़ेगा।

निजानन्द (खुदमस्ती)

[११०]

राग शंकराभरण, ताल धुमाली ।

हमें इक पागलपन दरकार ॥ टेक

अक़ल नक़ल नहीं चाहिये हम को पागलपन दरकार ॥ हमें इक० १
छोड़ पुवाड़े[1], झगड़े सारे, गोता वहदत[2] अन्दर मार ॥ हमें इक० २
लाख उपाय करले प्यारे । कदे[3] न मिलसी यार ॥ हमें इक० ३
बेखुद[4] होजा देख तमाशा, आपे खुद दिलदार[5] ॥ हमें इक० ४

[१११]

लावनी, ताल धुमाली ।

कोई हाल मस्त, कोई माल मस्त, कोई तूती मैना सूए में ।
कोई खान मस्त, पैहरान मस्त, कोई राग रागनी दूहे[6] में ॥
कोई अमल मस्त, कोई रमल मस्त, कोई शतरंज चौपड़ जूए में ।
इक खुद मस्ती बिन और मस्त, सब पड़े अविद्या कूए में ॥ १ ॥

कोई अक़ल मस्त, कोई शकल मस्त, कोई चंचलताई हाँसी में ।
कोई वेद मस्त, कितेब मस्त, कोई मक्के में, कोई काशी में ॥
कोई ग्राम मस्त, कोई धाम मस्त, कोई सेवक में, कोई दासी में ।
इक खुद मस्ती बिन और मस्त, सब बन्धे अविद्या फांसी में ॥ २ ॥

---

१ झगड़े बखेड़े. २ एकता, अद्वैत. ३ कभी भी. ४ अहंकार रहित. ५ आशिक़, प्यारा. ६ तुकबन्दी में, दोहे चौपाई में.

कोई पाठ मस्त, कोई ठाठ मस्त, कोई भैरों में, कोई काली में।
कोई ग्रन्थ मस्त, कोई पन्थ मस्त, कोई श्वेत[1] पीतरंग[2] लाली में॥
कोई काम मस्त, कोई खाम मस्त, कोई पूर्ण में, कोई खाली में।
इक खुद मस्ती बिन और मस्त, सब बन्धे अविद्या जाली में॥ ३॥

कोई हाट मस्त, कोई घाट मस्त, कोई वन पर्वत ओजाड़ा[3] में।
कोई जात मस्त, कोई पाँत मस्त, कोई तात भ्रात सुत दारा में॥
कोई कर्म मस्त कोई धर्म मस्त, कोई मसजिद ठाकुरद्वारा में।
इक खुद मस्ती बिन और मस्त, सब बहे अविद्या धारा में॥ ४॥

कोई साक मस्त, कोई खाक मस्त, कोई खासे में, कोई मलमल में।
कोई योग मस्त, कोई भोग मस्त, कोई स्थिति में, कोई चलचल में॥
कोई ऋद्धि मस्त, कोई सिद्धि मस्त, कोई लेन देन की कल फल में।
इक खुद मस्ती बिन और मस्त, सब फंसे अविद्या दलदल में॥ ५॥

कोई ऊर्ध्व मस्त, कोई अधः[4] मस्त, कोई बाहर में, कोई अन्तर में।
कोई देश मस्त, विदेश मस्त, कोई औषध में, कोई मन्तर में॥
कोई आप मस्त, कोई ताप मस्त, कोई नाटक चेटक तन्तर में।
इक खुद मस्ती बिन, और मस्त, सब फंसे अविद्या यन्तर में॥ ६॥

कोई शुष्क[5] मस्त, कोई तुष्ट[6] मस्त, कोई दीर्घ में, कोई छोटे में।
कोई गुफा मस्त, कोई सुफा मस्त, कोई तूंबे में, कोई लोटे में॥
कोई ज्ञान मस्त, कोई ध्यान मस्त, कोई असली में, कोई खोटे में।
इक खुद मस्ती बिन और मस्त, सब रहे अविद्या टोटे में॥ ७॥

---

१ सफेद. २ ज़र्द, पीला. ३ उजाड़, बियाबान. ४ नीचे ५ खाली, अतृप्त ६ प्रसन्न चित्त.

[११२]

राग झंझोटी, ताल तीन।

आ दे हुक़ाम उत्ते आ मेरे प्यारिया! (टेक)
गा गल[1] असली पागल हो जा, मस्त अलस्त सफ़ा मेरे
प्यारिया! आ दे० १
ज़ाहर सूरत दौला[2] मौला, बातन[3] खास खुदा मेरे
प्यारिया! आ दे० २ टेक
पुस्तक पोथी सुट[4] गंगा विच, दम दम अलख जगा मेरे
प्यारिया! आ दे० ३
सेली[5] टोपी ला दे सिर तों, झगड़ मुंड होजा मेरे
प्यारिया! आ दे० ४
इज़्ज़त फोकी फूक दुन्या दी, अक्क धतूरा खा मेरे
प्यारिया! आ दे० ५
झगड़े झेड़े फ़ैसल किंदा, लेखा पाक[6] चुका मेरे प्यारिया!
आ दे० ६
लड़का बग़ल, ढंढोरा किहा[7], ढूंडन किते न जा मेरे
प्यारिया! आ दे० ७
तेरी बुक्कल[8] विच प्यारा लेटे, खोल तनी गल ला मेरे
प्यारिया! आ दे० ८
आपे भुल, भुलावें आपे, आपे बने खुदा मेरे प्यारिया!
आ दे० ९

---

१ रमूज़, रहस्य (असली वस्तु) २ भोला भाला. ३ अन्दर से. ४ फेंक. ५ मान की (दुन्या की) पगड़ी, टोपी. ६ साफ़, हिसाब बेबाक़. ७ कैसा. ८ बग़ल, गोद.

पर्दे फाड़ दूई[1] दे सारे, इक्को इक दिखा मेरे प्यारिया !
आ दे० १०

[११३]

राग भैरवी, ताल दादरा ।

गर हम ने दिल सनम[2] को दिया, फिर किसी को क्या ।
इसलाम[3] छोड़ कुफ्र लिया, फिर किसी को क्या ॥ १ ॥
हमने तो अपना आप गिरेवां[4] किया है चाक[5] ।
आप ही सिया, सिंया न सिया, फिर किसी को क्या ॥ २ ॥
आँखें हमारी लाल, सनम ! कुछ नशा पिया ? ।
आप ही पिया, पिया न पिया, फिर किसी को क्या ॥ ३ ॥
अपनी तो ज़िन्दगी मियां ! मिस्ले-हुबाब[6] है ।
गो खिज़र[7] लाख बरस जिया, फिर किसी को क्या ॥ ४ ॥
दुन्या में हमने आ के भला या बुरा किया ॥
जो कुछ किया सो हमने किया, फिर किसी को क्या ॥ ५ ॥

[११४]

राग मांड ताल धुमाली ।

भला हुआ हर बीसरो[8], सिर से टली बलाय ।
जैसे थे वैसे भये, अब कछु कहा न जाय ॥ १ ॥

---

१ द्वैत. २ प्यारा. ३ मुसलमानी धर्म. ४ अपना कपड़ा या चोगा. ५ फटा. ६ बुलबुले के सदृश ७ मुसलमानों में पानी के देवता का नाम है ८ भूल गया.

मुख से जपूं, न कर[1] जपूं, उर[2] से जपूं न राम।
राम सदा हम को भजे, हम पावें विश्राम[3] ॥ २ ॥
राम मरे तो हम मरे ? हमरी मरे बलाय।
सत्पुरुषों का वालका मरे न मारा जाय ॥ ३ ॥
हद टप्पे सो औलिया[4], वेहद टप्पे सो पीर।
हद वेहद दोनों टप्पे, वा का नाम फ़क़ीर ॥ ४ ॥
हद हद करते सब गये, वेहद गया न कोय।
हद वेहद मैदान में रह्यो कबीरा सोय ॥ ५ ॥
मन ऐसो निर्मल भयो जैसो गंगा नीर[5]।
पीछे पीछे हर फिरत, कहत कबीर, कबीर ॥ ६ ॥

[११५]

राग झिल्ला, ताल दादरा।

वाज़ीचा-ए-इतफाल[6] है दुन्या मेरे आगे।
होता है शबो-रोज़[7] तमाशा मेरे आगे ॥ १ ॥
इक खेल है औरंगे-सुलेमान्[8] मेरे नज़दीक।
इक वात है इजाज़े-मसीहा[9] मेरे आगे ॥ २ ॥
जुज़[10] नाम नहीं सूरते-आलम[11] मेरे नज़दीक।
जुज़ वैहम[12] नहीं हस्ती-ए-अशया[13] मेरे आगे ॥ ३ ॥
होता है निहां[14] खाक में स्वहरा[15] मेरे होते।
घिसता है जबीं[16] खाक पे[17] दरिया मेरे आगे ॥ ४ ॥

---

१ हाथ. २ दिल या हृदय से ३ आराम. ४ पैग़म्बर ५ जल ६ बच्चों का खेल, ७ रात और दिन, ८ सुलेमान बादशाह का शाही तख़्त. ९ हज़रत ईसा-मसीह की करामात, मोजज़ा. १० सिवाय. ११ संसार का रूप या दृश्य. १२ भ्रम. १३ पदार्थ की मौजूदगी, अथवा उस का दृश्य मात्र. १४ गुप्त होता, छिपजाता है. १५ जंगल. १६ माथा (मस्तक) १७ पर.

[११६]

राग ज़िला, ताल दादरा।

फैंके फलक को तारे, सब बख्श दूंगा मैं।
भर भर के मुट्ठी हीरे, अब बख्श दूंगा मैं॥ १॥
सूरज को गर्मी, चाँद को ठण्डक, गुहर[1] को आब[2]।
यूं मौज[3] अपनी आई, सब बख्श दूंगा मैं॥ २॥
गाली, गलोच, झिड़की, ताने करूं मुआफ।
बोली, ठठोली, धमकी, सब बख्श दूंगा मैं॥ ३॥
तारीफ़ से परे हूं, ऐबों से मैं बरी हूं।
हम्दो-सना-दुआ[4] भी, सब बख्श दूंगा मैं॥ ४॥
वाहिद[5] हूं ज़ाते-मुतलक[6], यां इम्तयाज़[7] कैसी।
औसाफ[8] को लुटा दूं, सब बख्श दूंगा मैं॥ ५॥
सहराये-बेकरा[9] हूं, दरिया हूं बे किनार।
बू[10] ग़ैर की न छोड़ूं, सब बख्श दूंगा मैं॥ ६॥
दिल नज़र मेरी करदो, हूं शाहे-बेनियाज़[11]।
कौनो-मकां-ज़मां-ज़र,[12] सब बख्श दूंगा मैं॥ ७॥
झगड़े, कसूर, क़ज़िये, अच्छे बुरे ख्याल।
जूं[13] ओस झट उड़ादूं, सब बख्श दूंगा मैं॥ ८॥
मौजूद कुछ नहीं है, मेरे सिवा यहां।
वेहमे-दुई,[14] गुमानो-शक[15], सब बख्श दूंगा मैं॥ ९॥

१ मोती. २ चमक. ३ तरंग. ४ स्तुति, उपमा और प्रार्थना. ५ एक. ६ वास्तविक तत्व. ७ भेद, फरक ८ गुण ९ बेहद बियाबां. १० द्वैत की गन्ध. ११ उदार बादशाह. १२ देश काल वस्तु और सम्पत्ति. १३ सदृश. १४ द्वैत भ्रम. १५ संशय और अनुमान.

अक़लो-क़यास[1], जिस्मो-जां, मालो-दोस्तां।
कर राम पर निसार, यह सब बख़्श दूंगा मैं॥

[११७]

रागनी जयजय वन्ती, या राग एमन कल्याण, ताल बसन्त।

तमाम दुन्या है खेल मेरा, मैं खेल सब को खिला रहा हूं।
किसी को बेख़ुद बना रहा हूं, किसी को ग़म में रुला रहा हूं॥ १॥
अबस[2] है सदमा[3] भले बुरे का, हो कौन तुम और कहां से आये।
ख़ुशी है मेरी, मैं खेल अपना, बना बना के मिटा रहा हूं॥ २॥
फिरो हो रूये-ज़िमीं[4] पे यारो! तलाश मेरी में मारे मारे।
अमल करो, तुम दिलों में देखो, मैं नहने-अक़रब[5] सुना रहा हूं॥ ३॥
कभी मैं दिन को निकालूं सूरज, कभी मैं शब[6] को दिखाऊं तारे।
यह ज़ोर मेरा है दोनों पाँवों को मिस्ले-फिरकी फिरा रहा हूं॥ ४॥
किसी की गर्दन में तौक़े-लानत[7], किसी के सिर पर है ताजे-रहमत[8]।
किसी को ऊपर बुला रहा हूं, किसी को नीचे गिरा रहा हूं॥ ५॥

[११८]

राग भैरवी ताल दम्मंत।

कहूं क्या रंग उस गुल[9] का, अहाहाहा, अहाहाहा।
हुआ रंगीं[10] चमन[11] सारा, अहाहाहा, अहाहाहा॥ १॥
नमक छिड़के है वह किस २ मज़े से दिलके ज़ख़्मों पर।
मज़े लेता हूं मैं क्या क्या, अहाहाहा, अहाहाहा॥ २॥

---

१ बुद्धि और ख्याल २ व्यर्थ. ३ चोट. ४ पृथिवी के ऊपर. ५ शाहरग (कंठ) से भी अधिक समीप ६ रात्रि. ७ लानत की ज़ञ्जीर ८ कृपा दृष्टि का ताज, तिलक. ९ पुष्प (सुन्दर स्वरूप या आत्मस्वरूप। १० रंगदार (नाना प्रकार का) ११ बाग़.

खुदा जाने हलावत[1] क्या थी, आबे-तेग़े-क़ातिल[2] में ।
लबे-हर-ज़ख़्म[3] है गोया अहाहाहा, अहाहाहा ॥ ३ ॥
शरारो[4]-बर्क़ में क्या फ़र्क़, मैं समझूं कि दोनों में ।
है इक शोला-भबूका[5] सा, अहाहाहा, अहाहाहा ॥ ४ ॥
बला-गर्दां[6] हूं साक़ी[7] का, कि जामे-इश्क़[8] से मुझको ।
दिया घूंट उस ने इक ऐसा, अहाहाहा, अहाहाहा ॥ ५ ॥
मेरी सूरत-परस्ती[9]; हक़-परस्ती[10] है कहूं मैं क्या ? ।
कि इस सूरत में है क्या क्या, अहाहाहा, अहाहाहा ॥ ६ ॥
ज़फ़र[11] आलम[12] कहूं मैं क्याः तबीयत की रवानी[13] का ।
कि है उमड़ा हुआ दरिया, अहाहाहा, अहाहाहा ॥ ७ ॥

[११६]

गज़ल कव्वाली ।

गर यूं हुआ तो क्या हुआ, और वूं हुआ तो क्या हुआ । टेक
था एक दिन वह धूम का, निकले था जब अस्वार हो ।
हर दम पुकारे था नक़ीब[14], आगे बढ़ो, पीछे हटो ।
था एक दिन देखा उसे, तन्हा[15] पड़ा फिरता है वह ।
बस क्या ख़ुशी, क्या ना ख़ुशी, यक्सां है सब ऐ दोस्तो ॥ गर यूं० १
या नेमतें[16] खाता रहा, दौलत के दस्तर-ख़्वान पर ।
मेवे मिठाई वा मज़े[17], हल्वा-ओ-तुर्शी[18] और शकर ।

---

१ मिठास, स्वाद. २ क़ातिल की तलवार की धार. ३ हर घाव के समीप. ४ अंगारा और बिजली. ५ भड़की हुई लाट ६ कृतज्ञ. अर्पित हूं. ७ शराब (प्रेमामृत) पिलाने वाला, यहां आत्मज्ञानी से अभिप्राय है. ८ इश्क़ (प्रेम रस) का प्याला. ९ मूर्ति पूजा (बुत परस्ती). १० ईश्वर पूजा. ११ कवि का नाम. १२ हाल (अवस्था.) १३ रफ़्तार (चाल.), गति. १४ चोबदार, चोपदार. १५ अकेला. १६ अच्छे अच्छे पदार्थ १७ स्वादिष्ट. १८ खट्टा मीठा.

या बान्ध झोली भीख की, टुकड़े के ऊपर धर नज़र।
हां कर गदा[1] फिरने लगा, कूचा बकूचा दर बदर[2] ॥ गर यूं० २
या इशरतों[3] के ठाट थे, या ऐश के असबाब थे।
साक़ी[4] सुराही[5] गुलबदन[6], जामो[7]-शराबे-नाब[8] थे।
या बेकसी के दर्द से बेहाल थे, बेताब थे।
आख़िर जो देखा दोस्तो! सब कुछ ख्यालो-ख्वाब थे॥ गर यूं०३
जो इशरतें[9] आकर मिलीं, तो वह भी कर जाना मियां।
जो दर्दो-दुःख आकर पड़े, तो वह भी भरजाना[10] मियां।
ख्वाह दुःख में ख्वाह सुख में, यां[11] से गुज़र जाना मियां।
है चार दिन की ज़िन्दगी, आख़िर को मरजाना मियां॥ गर यूं० ४

[१२०]

गज़ल क़व्वाली (दादरा)।

पा लिया जो था कि पाना, काम क्या बाक़ी रहा।
जानना था सोई जाना, काम क्या बाक़ी रहा ॥ } (टेक)
आ गया, आना जहां, पहुँचा वहां, जाना जहां।
अब नहीं आना न जाना, काम क्या बाक़ी रहा ॥ १ ॥
बन गया बनना. बनाने बिन[12] बना, जो बन बना।
अब नहीं बानी[13]-ओ-बाना[14], काम क्या बाक़ी रहा ॥ २ ॥
जानते आये जिसे हैं जान झगड़ा तै[15] हुआ।
उठ गया बकना बकाना, काम क्या बाक़ी रहा ॥ ३ ॥

---

१ फ़क़ीर. २ द्वार २ पर या गली दर गली. ३ विषयानन्द अर्थात् भोगों के पदार्थ ४ प्रेमरस की शराब पिलाने वाला. ५ शराब रखने का बर्तन. ६ पुष्प वर्ण सुन्दर स्त्रियें. ७ प्याला. ८ अंगूरी शराब. ९ विषय भोग. १० सह जाना. ११ यहां. १२ बिना. १३ बनाने वाला. १४ बनाने की वस्तु, ताना १५ समाप्त, फ़ैसल.

लाख चौरासी के चक्कर से थका. खोलो कमर।
अब रहा आराम पाना. काम क्या बाक़ी रहा ॥ ४ ॥
स्वप्न के मानन्द यह सब अनहुआ[1] ही हो रहा।
फिर कहां करना कराना, काम क्या बाक़ी रहा ॥ ५ ॥
डाल दो हथयार, मेरी राय[2] पुख़ता अब हुई।
लग गया पूरा निशाना, काम क्या बाक़ी रहा ॥ ६ ॥
होने दो जो हो रहा है, कुछ किसी से मत कहो।
सन्त हो किसि को सताना, काम क्या बाक़ी रहा ॥ ७ ॥
आत्मा के ज्ञान से हुआ कृतार्थ[3] जन्म है।
अब नहीं कुछ और पाना, काम क्या बाक़ी रहा ॥ ८ ॥
देह के प्रारब्ध से मिलता है सब को सब कुच्छ।
फिर जगत को क्यों रिझाना[4]. काम क्या बाक़ी रहा ॥ ९ ॥
घोर[5] निद्रा से जगाया सद्गुरु ने वाह वा।
अब नहीं जगना जगाना. काम क्या बाक़ी रहा ॥ १० ॥
मान कर मन में मियां, मौला[6] का मेला है यह सब।
फिर यूं अब क्या मौलाना[7], काम क्या बाक़ी रहा ॥ ११ ॥
जान कर तौहीद[8] का मनशा[9], शुभा सब मिट गया।
यूं ही गालों का बजाना, काम क्या बाक़ी रहा ॥ १२ ॥
एक में कसरत[10]-व कसरत में भी एक ही एक है।
अब नहीं डरना डराना, काम क्या बाक़ी रहा ॥ १३ ॥
अक़्ल से भी दूर है, कहने-व-सुनने से परे।
हो चुका कहना कहाना, काम क्या बाक़ी रहा ॥ १४ ॥

---

१ बिना हुए ही हो रहा है. २ सम्मति ३ संतुष्ट ४ खुशामद करना, चापलूसी करना ५ गहरी, घोर नीन्द. ६ ईश्वर लीला ७ मौलवी, पंडित ८ अद्वैत, एकता. ९ मन्तव्य. १० बहुत अनेक.

रमज़[1] है तौहीद[2], यहां हुकमा[3] की हिकमत[4] तंग है।
हो गया दिल भी दिवाना[5], काम क्या बाक़ी रहा ॥ १५ ॥
रह गये उलमा-व-फ़ुज़ला[6] इल्म की तहक़ीक़[7] में।
भ्रम है पढ़ना पढ़ाना, काम क्या बाक़ी रहा ॥ १६ ॥
द्वैत और अद्वैत के झगड़े में पड़ना है फ़ज़ूल।
अब न दाँतों को घिसाना काम क्या बाक़ी रहा ॥ १७ ॥
जान कर दुनिया को पूरे तौर से ख़्वाबो-ख़्याल[8]।
अब नहीं तपना तपाना, काम क्या बाक़ी रहा ॥ १८ ॥
कुच्छ नहीं मतलब किसी से, सो रहा टांगें पसार।
अब कहीं काहे को जाना, काम क्या बाक़ी रहा ॥ १९ ॥
हो गयी दे दे के डङ्का सारी शङ्का भी फ़ना[9]।
अब मिला निर्भय[10] ठिकाना, काम क्या बाक़ी रहा ॥ २० ॥

[१२१]

नी[11] ! मैं पाया महरम[12] यार। } टेक
जिस दे हुसन[13] दी अजब बहार ॥ }
जिस दा जोगी ध्यान लगावन।
पीर पैग़म्बर निश दिन ध्यावन ॥
पंडित आलिम[14] अन्त न पावन।
तिस दा कुल अज़हार[15] ॥ नी ! मैं० ॥ १ ॥
"मैं" "तू" दा जद भेद मिटाया।
कुफ़र[16] इस्लाम दा नाम भुलाया ॥

१ इशारा, रहस्य. २ अद्वैत, एकता. ३ अक़्लमंद. ४ अक़्ल बुद्धि. ५ पागल. ६ विद्वान और महात्मा. ७ दर्याफ्त, ढूंढ. ८ स्वप्न भ्रम. ९ नाश. १० भय रहित और कवि का खिताब भी है. ११ अजी ! ऐ प्यारी. १२ अपना भेदी प्यारा, महात्मा. १३ सुन्दरता सौन्दर्य १४ विद्वान १५ दृश्य, नाम रूप. १६ नास्तिकपन.

ऐन[1] ग़ैन[2] दा फ़र्क गंवाया।
खुल्या सब इसरार[3] ॥ नी ! मैं० ॥ २ ॥
वहदत[4] कसरत[5] विच समाई।
कसरत वहदत हो के भाई[6] ॥
जुज़[7] विच कुल[8] दी सूझी पाई।
विसर गया संसार ॥ नी ! मैं० ॥ ३ ॥
कहन सुनन ते न्यारा जोई।
लामकाँ[9] कहे सब कोई ॥
"है" "नाहीं" दा झगड़ा होई।
तिस दा गर्म बाज़ार ॥ नी मैं० ॥ ४ ॥
साक़ी[10] ने भर जाम[11] पिलाया।
वे खुद हो के जश्न[12] मनाया ॥
ग़ैरीयत[13] दा नाम गंवाया।
हुई जय जय[14] कार ॥ नी मैं० ॥ ५ ॥

[१२२]

होरी राग का लंगड़ा, ताल दीपचंदी।

रे कृष्ण कैसी होरी तैंने मचाई, अचरज लख्यो न जाई।
असत सत कर दिखलाई, रे कृष्ण कैसी होरी तैंने मचाई ॥ (टेक)
एक समय श्रीकृष्ण के मन में होरी खेलन की आई।
एक से होरी मचे नहिं कबहुँ, यातें करूं बहुताई।

---

१ अद्वैत २ द्वैत से यहां अभिप्राय है. ३ भेद, रहस्य ४ एकता. ५ अनेकता. ६ पसन्द आई. ७ व्यष्टि. ८ समष्टि. ९ स्थान रहित, अर्थात देश से परे, १० निजानन्द रूपी शराब पिलाने वाला, यहां गुरु से अभिप्राय है. ११ प्रेम प्याला अथवा आत्मानन्द का प्याला. १२ खुशी मनाना. १३ द्वैत भाव, भेद दृष्टि. १४ आनन्दका हुलास.

यही प्रभु ने ठहराई, रे कृष्ण कैसी होरी तैं ने मचाई ॥ १ ॥
पाँच भूत की धातु मिला कर, अंड पिचकारी बनाई।
चौदह भुवन रंग भीतर भरकर, नाना रूप धराई।
प्रकट भये कृष्ण कन्हाई। रे कृष्ण कैसी होरी तैंने मचाई ॥ २ ॥
पाँच विषय की गुलाल बनाकर, बीच ब्रह्मांड उड़ाई।
जिस जिस नैन गुलाल पड़ी, उसकी सुध बुध बिसराई।
नहीं सूझत अपनाई[1]। रे कृष्ण कैसी होरी तैं ने मचाई ॥ ३ ॥
वेद अंत अंजन की शलाका[2], जिस ने नैन में पाई।
तिस का ही ठीक तम[3] नाश्यो, सूझ पड़ी अपनाई।
होरी कछु बनी न बनाई। रे कृष्ण कैसी होरी तैं ने मचाई ॥४॥

विविध लीला

[१२३]

तस्वीरे-यार।

इस लिये तस्वीरे-जानां[4] हम ने खिचवाई नहीं। (टेक)
बात थी जो असल में, वह नक़्ल में पाई नहीं। इस० १
पहिले तो यहां जान की तन से शनासाई[5] नहीं ॥ इस० २
तन से जाँ जब मिल गयी, तो उस में दो ताई[6] नहीं ॥ इस० ३
एक से जब दो हुए, तो लुत्फे-यकताई[7] नहीं ॥ इस० ४
हम हैं मुश्ताके-सखुन[8], और उस में गोयाई[9] नहीं ॥ इस० ५

---

१ अपना आप, अपना स्वरूप २ सीख, सलाई. ३ अन्धकार. ४ प्यारा यार अर्थात् अपने स्वरूप की मूर्त्ति. ५ पहचान. ६ द्वैतपन या दो होना (अर्थात जब शरीर के साथ प्राण मिलकर बिलकुल एक हो गये तो उन को फिर अलग अलग दो कर ही नहीं सकते, तो फिर तसवीर कैसे). ७ एकता का आनन्द ८ वार्तालाप के इच्छुक ९ मगर तस्वीर में बोलने की शक्ति नहीं.

पाओं लंगड़ा हाथ लुंभा, आँख बीनाई[1] नहीं ॥ इस० ६
यार का खाका[2] उड़ाना, यह भी दानाई[3] नहीं ॥ इस० ७
कागज़ी यह पैरहन[4] है दिल को यह भाई नहीं ॥ इस० ८
दिल में डर है कि मुसव्वर[5] ही न बन बैठे रक़ीब[6] ॥ इस० ९
दाम मांगे था मुसव्वर, पास इक पाई नहीं ॥ इस० १०
असल की खूबी कभी भी नक़ल में आई नहीं ॥ इस० ११

[१२४]

रेखता ।

सत्य धर्म को छिपा दिया, किसने ? निफाक ने }
लोगों में छल फैला दिया, किस ने ? निफाक ने } टेक

यह देश इक ज़माने में दुनिया की शान था।
अब सब से अदना[7] कर दिया, किस ने ? निफाक ने ॥ १ ॥
द्विज धर्म कर्म करने में रहते थे नित्य मग्न।
अब उन को पस्त[8] कर दिया किस ने ? निफाक ने ॥ २ ॥
हर घर में शब्द सुनते थे वेदो-पुराण के।
उन सब को ही मिटा दिया, किस ने ? निफाक ने ॥ ३ ॥
महाबली रावण को तो जानत सभी यहां।
सब नाश उसका कर दिया, किस ने ? निफाक ने ॥ ४ ॥
आया है वक्त अब तो हितैषी बनो सभी।
घर घर में दखल कर लिया, किस ने ? निफाक ने-॥ ५ ॥

---

१ (तसवीर में) आँख देख नहीं सकती, पाओं चल नहीं सकते, हाथ हिल नहीं सकते. २ नक़शा, अभिप्राय हँसी उड़ाना. ३ बुद्धिमता. ४ कागज़ी वस्त्र ५ तस्वीर खेंचने वाला, चित्र कार. ६ शत्रु, दूसरा आशिक़, सम प्रीतम. ७ तुच्छ, अधम, हीन. ८ अधीन, दीन.

[१२५]

समय कैसा यह आया है (टेक)

न यारों से रही यारी, न भाइयों में वफादारी।
मुहब्बत उठ गई सारी, समय कैसा यह आया है ॥ १ ॥
जिधर देखो भरी कुलफत[1], भुलादी सब ने है उल्फत[2]।
बुरी सोहबत[3], बुरी संगत, समय कैसा यह आया है ॥ २ ॥
सभायें की बहुत जारी, बने खुद उन के अधिकारी।
न छोड़े कर्म व्यभिचारी, समय कैसा यह आया है ॥ ३ ॥
बहुत उमदा कहें लैक्चर, मगर उलटा चलें उन पर।
अक़ल पर पड़ गये पत्थर, समय कैसा यह आया है ॥ ४ ॥
सचाई को छुपाते हैं, दिल औरों का दुखाते हैं।
वृथा सांचे[4] कहाते हैं, समय कैसा यह आया है ॥ ५ ॥
नहीं व्यवहार की शुद्धि, विपर्यय[5] हो रही बुद्धि।
विचारें सत नहीं कुछ भी, समय कैसा यह आया है ॥ ६ ॥
घटा है पाप की छाई, उपद्रव होवें हर जाई[6]।
है एक को एक दुःखदाई, समय कैसा यह आया है ॥ ७ ॥
न जाने देश के वासी, बनें कब सत्य विश्वासी।
मिटे अब कैसे उदासी, समय कैसा यह आया है ॥ ८ ॥

[१२६]

भारतवर्ष की स्तुति।

राग गारा ताल धुमाली।

सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा।
हम बुलबुलें हैं उसकी, वह बोस्तां[7] हमारा ॥ १ ॥

---

१ द्वेष. २ प्रेम. ३ संग, संसर्ग. ४ सच्चे पुरुष ५ उलटी. ६ हर जगह, सब तरफ. ७ बाग़.

गुर्वत[1] में हों अगर हम, रहता है दिल वतन[2] में।
समझो वहीं हमें भी. हो दिल जहां हमारा ॥ २ ॥
पर्वत वह सब से ऊंचा, हमसाया आसमां[3] का।
वह सन्तरी हमारा, वह पास्वां[4] हमारा ॥ ३ ॥
गोदी में खेलती हैं जिस के हज़ारों नदियां।
गुलशन[5] है जिन के दम से रश्के-जहां[6] हमारा ॥
ऐ आबे-रवद[7] गंगा! वह दिन है याद तुझ को।
उतरा तेरे किनारे जब कारवां[8] हमारा ॥
मज़हब नहीं सिखाता आपस में वैर रखना।
हिंदी हैं हम, वतन है हिन्दोस्तान् हमारा ॥
यूनानो-मिसरो-रूमा सब मिट गये जहां से।
बाक़ी है पर अभी तक नामो-निशां हमारा ॥
कुछ बात है कि हस्ती[9] मिटती नहीं हमारी।
सदियों[10] से आसमां है ना मेहरबान् हमारा ॥
इक़बाल[11] अपना कोई मैहरम[12] नहीं जहां में।
मालूम है हमीं को दर्दे-निहां[13] हमारा ॥

---

१ विदेश. २ स्वदेश, जन्मभूमि. ३ आकाश. ४ चौकीदार, रक्षक. ५ वाटिका. ६ संसार के ईर्ष्या का स्थान. ७ ऐ बहती गंगा जी का जल. ८ काफला. ९ स्थिति, वस्तुता. १० सैकड़ों वर्षों से. ११ कवि का नाम है. १२ भेदी, विज्ञात वा वाक़िफ पुरुष. १३ छुपा हुआ दर्द.

भजनों की वर्णानुक्रमणिका

भजन　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　पृष्ठ

अ

आ

भजन पृष्ठ

द

ध

न